राम राज

प्रेरणादाता

पंडित प्रवर श्रद्धेय

श्री पुष्कर मुनिजी म०

संपादक

देवेन्द्रमुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

रूपान्तरकार	नृसिंह राजपुरोहित, एम. ए. (रिसर्च स्कॉलर)
प्रकाशक	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल, जोधपुर
द्रव्य सहायक	श्री वस्तीमलजी सेजाजी भसाळी अजीत (जिला बाड़मेर) राजस्थान
पुस्तक प्राप्तिस्थल	१. भंडारी सरदारचंद जैन, बुकसेलर, त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर २. सर्वोदय जनरल स्टोर्स, ५ पाला सदन, दुकान नं० ३-४, आदर्श नगर, हौसिंग कॉलोनी के सामने, बगाल केमिकल के पास, वरली, बम्बई न० १८
प्रथम प्रवेश	स्वाधीनता दिवस १९६५
मूल्य	एक रुपया
मुद्रक	साधना प्रेस, जोधपुर

विषय - सूची

संपादक री कलम सूं

मरियादा पुरसोत्तम राम री सत्ता भारत रै कण-कण में मौजूद है। मनखां वांरा गुण-गान पूरा तन मन सूं करै। भारत री सगळी सांस्कृतिक विचारधारावां में वांरै नाम री सांगोपांग चरचा है। वैदिक साहित में व भगवान विष्णु रा अवतार मान्या जावै। वाल्मीक रामायण, महाभारत, ब्रह्मपुराण, अग्निपुराण वायुपुराण, अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण अर अद्‌भुत रामायण वगैरै ग्रंथ वांरै गुणगांन सूं भरियोड़ा है।

जैन संस्कृति रा साहित में व आठमा बलदेव रै रूप में मान्या जावै। वांरी गिणती महापुरसां में करी जावै। समवायांग सूत्र में राम रो दूजो नाम 'पउम' मिलै। अर ओ इज नांम जैन साहित में घणो प्रसिद्ध रह्यो है। श्री कृष्ण रै ज्यूं जैनागमां में रांम री घणी चरचा तो नीं आई है पण लारला जैन आचारजां 'राम' माथै मोकळो लिख्यो है। पउम चरियं, पद्मपुराण, त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित्र, वसुदेव हिंडी, चउपण्ण महापुरिसचरियं, कहावली, सिया चरियं, त बद्धि गुणालंकार चरियं, महापुराण वगैरै मोकळा प्राकृत संस्कृत अर अपभ्रंस रा ग्रंथां रै अलावा निराई प्रांतीय भासावां रा ग्रंथ पण है।

बौद्ध साहित में राम 'बोधिसत्व' रै नाम सूं ओळखीजै। 'दसरथ जातक' नांव रा ग्रंथ में वांरै चरित्र रो सांगोपांग वरणन है।

आ बात पण सही है क न्यारी न्यारी सांस्कृतिक विचारधारावां रै प्रभाव सूं पोतां री परंपरा मुजब राम रै सांसारिक जीवण रो चित्राम न्यारा न्यारा ढंग सूं हुयो है। कठैई कठैई तो एक इज परंपरा रा ग्रंथां में पण फरक मिलै। दाखला रूप में अद्‌भुत रामायण अर विष्णु पुराण री कथा वाल्मीक रामायण अर महाभारत सूं थोड़ी न्यारी पड़ै। पण सगळा ग्रंथां रा मूल ध्येय ओ इज है कै राम एक अवतारी महापुरुष है। रांम रै जीवण रो परणाम आचारजां तांइ नीं छिपी पण दूर र देसां तांई पूगी है। विद्वानां रा मत तो अठा तांई ह

के राम-जीवण री कथावा आथमणा मुल्का रा लोक साहित मे पण मोकली मिलै ।

इण कारण इज तो हिन्दी रा प्रसिद्ध कवि श्री मैथिलीसरणजी गुप्त कह्यो है—

राम तुम्हारा चरित, स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।

राम री पितर भगती, राम री मातर भगती, राम रो बाधव प्रेम अर राम रो राज ए सगली चीजा आदर्स रही है। ओ इज कारण है कै लाखा बरस बीत्या पछेई राम-नाम मानखा री जबान माथै चढयोडो है। सगला री एक इज चावना है कै रामराज पाछो वणै। मानखा नै कृष्ण रै राज री कै दूजा कोई भूपत रै राज री चावना नीं है। चावना है तो फगत एक रामराज री। इण वास्तै देखणो ओ है कै राम राज में इसी काई खूबिया रही है कै मानखो आज लग उण राज नै इतरो चावै।

इण पोथी मे परम श्रद्धेय सद्गुरुवर्य श्रीपुष्करमुनिजी महाराज एक प्रवचन में राम राज री सगली खूबिया बताई है। अर राम चरित्र री विसेसतावा माथै जोर देवता आ प्रेरणा दीवी है कै चरित्र इज कोई पण मुल्क रो मेरुदड है। मुल्क री आजादी चरित्र रा खूटा सू इज बाधोडी है। इण रै वास्तै मजबूत खूटा री जरूरत है। काचा पोचा खूटा सू काम नीं चालै। कारण कै आजादी तो एक मतवाला गजराज रै उनमान है। उण नै काबू राखणो घणो अवखो काम है।

राम राज खातर जरूरी है कै जीवण-कला रा मरम नैं समझ्यो जावै। जठा ताई जीवण-कला रो जाणकार नीं वणै उठा ताई जीवण पागर नीं सकै। अर जठा ताई धर्म री परख नी व्है, उठाताई घुमक्कड-जीवण रो आणद नीं उठायौ जा सकै। इण भात ए प्रवचन तर्क ज्यू तीखा, श्रद्धा ज्यूं गेरा अर दरपण री पाण निरमल है। इण में जमाना री समस्यावा रो समाधान है, ठकेल है।

[illegible] देखा [illegible] गुजराती [illegible] राजस्थानी में [illegible] है। [illegible] गुजराती में [illegible] राजस्थानी [illegible] [illegible] राजपुर [illegible] (प्रथम [illegible]) [illegible] है। [illegible] [illegible] 'संघ द्वार' [illegible] है।

[illegible]
सादड़ी (राज.)
[illegible]
[illegible]

—देवेन्द्र मुनि

अनुवादक रा आखर

सन् ५० मे म्हे राजस्थानी गद्य लिखणो सरु कियो हो। उण वात नै आज पनरै वरस व्हैग्या। इण वरसां मे राजस्थानी नांम माथै हाको तो मोकळो व्हियो, पण काम उतरो नी व्हियो। आज राजस्थानी री सवैधानिक मान्यता वास्तै लोक सभा मे बिल पेस करण री वाता चाल री' है, राजस्थानी वास्तै एक न्यारी अकादमी री थरपणा करण रो विचार पण जोर पकडतो जावै है। पण मूळ सवाल ओ है के राजस्थानी रै सिरजण री काई हालत है।

गद्य भासा री कसोटी मानी जावै। इण वास्तै भासा रो दारमदार गद्य ऊपर है। आज राजस्थांन मे कितराक लेखक इसा है जो सतत-रूप सू गद्य लिख रह्या है। (तुकबंदिया करनै कवि सम्मेलना मे सस्ती वाहवाही लूटणी दूजी वात है) आज सूं पनरै वरसा पै'ली पूरा राजस्थान मे जिको लेखक (आगळिया माथै गिणै जितरा) राजस्थानी गद्य लिखता हा, म्हनै तो आज पण वे इज सूरमा मैदांन मे दीसै है।

दूजी कानी प्रकासण री आ हालत है के जो लिख्यो जावै, उणनै कोई छापण वाळो कोयनी अर जिको छपवाय दियो जावै उणनै कोई मोल लेवण वाळो कोयनी। इण सगळी वाता रो उकेल आपा नै सोचणो है। कोरी वाता सू तो कांम पार पडण सूं रह्यो।

जैन धर्म अर बौद्ध धर्म आद-जुगाद सूं पोता री वात जन-भासा मे कही है। आज रा कई विद्वान जैन मुनिया पण इण मरम नै समझ्यो है। श्रद्धेय पुष्कर मुनिजी म० उणा सूं पै'ला मुनि है के जिणा रो साहित सब सू पै'ली अनुवादित होय नै आधुनिक राजस्थानी गद्य मे प्रकासित हुओ है। ओ सगळो साहित मानखा रा चरित्र नै ऊचो उठावण वाळो अर उणनै मारग घालण वाळो है। आपणा मुल्क न

आज इसा साहित री सख्त जरूरत है। इणमे सांप्रदायिकता कै सकीरणता रो कठई नांम निसांण ई नी है। वसुधवकुटुम्बकम' इण साहित रो मूळ मंत्र है।

इण पोथी र पे'ली 'मिनखपणा रो मोल' र नाम सू आपरी एक दूजी पोथी पण निकळ चुकी है। दोनू पोथ्यां रो अनुवाद म्हें गुजराती सू कियो है। आगै पण अनुवाद रो काम चालू है। हरिजी री मरजी हुई तो दो एक पोथ्यां फेर पण आपर हाथां मे बेगीज पूगला।

नरसिंह राजपुरोहित, एम ए
(रिसर्च स्कॉलर)

एक ओळखांण

इण पोथी खातर नाणा री मदद करण वाळा धर्मप्रेमी सज्जन श्री वस्तोमलजो सैजाम्नी भंसाली गाम अजीत (जिला बाड़मेर राजस्थान) रा वासी है । आप सर्वोदयो जनरल स्टोर' बम्बई रा मालिक अर श्री महावीर मोटर ट्रेडिग कम्पनी रा भागीदार है। या रो पूरो परिवार धर्म-अनुरागी अर श्रद्धेय गुरुदेव रा वखाण सूं प्रभावित होय नै इणा या री माता सुश्री सोनी बाई री याद मे इण पोथी 'राम राज' नै छपावण री अरज कीवी। जिणरो फळ ओ है कै आ पोथी आपरै हाथा मे है।

—गौतम आंचलिया

राम राज

उण दिन देस मे सोना रो सूरज उगो हो, कारण के एक हजार वरसा री गुलामी भुगतनै देस सुततर सरबततर हुओ हो। इण सुततरता रै वास्ते भारत रा सपूता सामी छाती गोलिया झेली। मातावा आपरा व्हाला डीकरा न फासी पर झूलता देख्या। जळिया वाळा बाग म जो अत्याचार हुओ उणन देखन मिनखपणो कुरळाय ऊठयो। ओ दानवता रो नागो नाच हो। पण गाधीजी री विचार रूपी आधी परदेसी राज न खतम कर दियो अर इतिहास प्रसिद्ध लाल किला पर यूनियन जेक री जग समता अर साति रो प्रतीक तिरगो असोक चक्र लहरायो। भारत वासिया रै हिवडा म आणद री छोळा उछ-ळण लागी। मन रा मोर नाचण लाग्या हिवडा रूपी कमळ खिलग्या। जीयण रा कण कण मे नवी चेतणा आई अर जज कार री आवाज सू आभो गूजण लागो। बाळक बूढा सगळा र चे रा पर खुसी नाचण लागी। कवि र हिवडा रा तार झणझणाय ऊठया—

विकास की आस भरा नवे`दु सा,
हरा भरा कोमल पुष्प-माल सा।
प्रमोद दाता विमल प्रभात सा,
स्यतत्रता का शुचि पव आ लसा।

आज वो इज दिन, वो इज पनर अगस्त पाछो आयो है।

पण जिको आणंद आजादी लेवता वखत हो वो आज कठीनै गायब व्हैग्यो। आजादी लेवता वखत जो उत्साह हो, वो आज कठीनै ठेका देयग्यो ? गुलामी मे सू छूटती वखत जो आसावां या उम्मीदां ही वै पूरी हुई के नी ? जठा ताई म्हारी अक्कल कांम करै म्हूं तो जोर देयनै कैय सकू हू कै, जिको आणद अर उत्साह उण दिन हो वो आज नी है।

सुतंतरता मिळ्यां पै'ला आंपां जिकण रगीन कल्पनावां में उड्या करता, वै सगळी कल्पनावां साकार नी व्है सकी। भारत नै आजादी मिळ्या पछै महात्माजी अर देस रा दूजा नेतावां इण वात पर वार वार जोर दियो है के स्वराज नै सुराज वणावणो चाहिजै, रामराज वणावणो चाहिजै।

रांम भारत री सस्कृति रो थांवो है, जिण पर पूरी आर्य संस्कृति गरब कर सकै। वो एक इसो जगमगा'ट करतो दीवो है, जिणरा उजास मे जैन, बौद्ध अर वैदिक सस्कृति रो साहित जगमगाय रह्यो है। जीवण रा पथ मे भूल्या-भटक्या लोगां नै वो मारग वताय रह्यो है। भारत रा करोडा नर-नारी भगती सू रांम नांम सुमरण करै। ग्यारै लाख वरस बीतग्या है, पण आज ताई राम नाम री चमक कम नी हुई है।

आप जाणो इज हां के उतरा लावा जुग मे कई क्रातिया हुई। कई सम्राट चमाचम करती तरवारा लेयर आया अर आपरी वीरता सू, सत्ता सूं, अन्याय सू, अर अत्याचार सूं मांनखा रै मन मे भय वैठा दियो। वे जठी कांनी सू निकळता, उठी नै हाहाकार मच जावतो। वां रो फगत नांम सूण नै इज

मोटा-मोटा वीरा रा काळजा कापण लागता अर हिवडा धडकण लागता। जिणा सप्रदायवाद मे रगीज'र, अध सिरधा में आधा होय'र जो अत्याचार किया, खून री नदिया खळकाई, मदिरा नै तोड्या, अबळावा र साग बळात्कार किया, उण राजावा मानखा र तन पर भलेई राज कियो व्है, पण उणरै मन पर राज नी कर सक्या। वार वीरता री गाथावा पानडा पर भलाई लिख्योडी रैयगी व्है, पण प्रजा र हिवडा पर लिख्योडी नी है। वारा नाम इतिहास रा पानडा म भलई छप्योडा व्है, पण मानखा रै मन में तो कठई निसाण तक नी है। राजा राम र ज्यू वे प्रजा रा हिवडा म नी बस सक्या। इण कारण इज भारतवासी न तो वा न याद कर अर न राम रै ज्यू वा री पूजा अरचना करै।

भारत रा लोक जीवण पर राम र जीवण री गहरी छाप है। आप कस्मीर सू लगाय न कयाकुमारी तक अर अटक सू लगाय न कटक तक कठई चारया जावो, सगळी जगै आप नै राम रै जीवण रो प्रभाव मिळैला। राम रा जीवण पर जितरा कविया री कलमा चाली है, उतरी स्यात इज काई दूजा महापुरुस र जीवण पर चाली व्हैला। रघुवस महाकाव्य, भट्टिकाव्य, महावीर चरित्र, उत्तर रामचरित्र, प्रतिमा नाटक, जानकीहरण, कुदमाला, अनघराघव, बालरामायण, हनुमन्नाटक, अध्यात्मरामायण, अदभुत रामायण, आनद रामायण, अर वाल्मीकि ऐ सगळा ग्रथ राम रा जीवण सू सबध राखै अर इणा न सस्क्रत रा सिद्धहस्त कविया लिख्या हैं। फगत सस्क्रत मे इज नी पण भारत री कई प्रातीय भासावा म पण कवियै राम-

चरित्र रो गुणगांन कियो है। कंबन कृत-तमिल रामायण, तेलगू-द्विपायन रामायण, मलयालम-रामचरित, कन्नड़ो-तोरावे रामायण, बगला-कृतिवासी रामायण, उडिया-बलदास रामायण, मराठी-भावार्थ रामायण, हिन्दी-रामचरित मानस अर केस-राज कृत जैन रामायण - ऐ सगळा रांमकाव्य इण बात रो पुखतो सबूत देय सकै के रांम रा उजळा चरित्र सू सब जणा प्रभावित हुआ है। भारत मे इज नी पण तिब्बत, लंका, खेतान, हिन्दी चीण, स्याम, ब्रह्मदेस अर हिंदएसिया सगळा देसां मे राम री जस - गाथा एक सुर सूं गाई गई है। जैन संस्कृति में रांम आठमा बळदेव मान्या जावै, तो बौद्ध साहित्य मे बोधि सत्व रै रूप मे प्रख्यात गिणीजै अर वैदिक धर्म मे विस्णु रा अवतार रै रूप मे पूज्या जावै। इण तरै भारत री इण तीन खास सस्कृतियां मे राम कथा रो विराट सजोग मिळै। रांम रा चरित्र नै इतरो मान क्यूं मिळियो ? सगळो जगै रांम रा गीत इज क्यूं गाया जावै ? राम इतरा पूजनीक क्यू बणग्या ? इणरो फगत एक इज कारण है—राम रो परोप-कारी जीवण। राम रा जीवण नै सेलडी रै साठा री ओपमा देवणी चाहिजै। सेलड़ी में मिठास इज मिठास व्है। जठै कापां उठैई रस रो झरणो वैवण लाग जावै। उणीज भात राम रा जीवण मे पण सगळी जगै मिठास रा इज दरसण व्है। निरदोस बाळपणा सूं लगाय'र सोने री सभया सूधी एक इज सरस मरियादा री सुर-लै'री झणझणाय रही है। रांम रो जीवण सत, सदाचार अर कर्त्तव्य पाळण रो सुळगती दाखलो है। वो आर्य पुत्रा रो परतख नमूनो है।

राम नै अजोध्या मे राजगादी मिळण वाळी ही। अजोध्या री राज वभव वारा चरण पखाळण न तयार ऊभौ हो। मिनखा र मन म आणद री छोळा उछळ री ही, मिनख राजी व्है रह्या हा के राम म्हारा राजा व्हैला । पण राम रा मन में कोई हरख या खेद नी हो, उठै तो उल्टो तूफान मच्योडौ है । वे एकात में बठ'र विचार कर रह्या हा के दुनिया मे राजगादी लेवा खातर भाई भाई री गळो कापै, अर हजारा मा बाप बिना मौत मारचा जावै। जिण सिंघासण खातर लाखा मिनखा री नास कियो जाव, वो इज सिंघासण आज म्हन मिळ रह्यौ है। पण इण सिंघासण री असली मालिक म्हूँ नी हूं, म्हारो छोटो भाई है।

कल्पना करो कै आप बजार सू मिठाई लावो, तो वा मिठाई प'ला आप खावोला के टाबरा नै देला ? म्हारी रयाल है के प'ला आप टाबरा ने देला। राजगादी र वास्त राम रा विचार पण ठीक इसा इज हा। व सोचता हा के राजगादी म्हारा छोटा भाइया न मिळणी चाहिज। राम रा मन मे हकूमत री कोई इच्छा नी ही। व आपरा अधिकार न'या भाइया न देवणा चावता हा। बडा रो बडापणो इण म इज है कै व आपरा अधिकार छोटा नै देवद अर छोटोडा री फरज औ है क व बडा रा हुक्म म चालै। रामराज री मीठी करपना करवा वाळा आप रांम रा अधिकार न खुद लेवणो चावो या दूजा न देवणो चावो ? जिण वखत चुणाव मे वोट लेवण रो सवाल आव, उण वखत आज री राम घर घर वाटां री भीख मागतो फिर। पण अधिकार री कुरसी माथै चढतां इज वै

सगळी बातां भूल जावै। है कोई इसो माई रो लाल जिको कुरसी दबाया पछै ई घर-घर फिरतो व्है? दुखियां गे दुख दूर करतो व्है, अर आप रै वचना रो पाळण करतो व्है? आज रा अधिकारी राम नै आ बात सोचणी है, आप री आत्मा नै परखणी है।

अबै आप राम रा आगला जीवण पर विचार करो। संजोग बदळै अर राम नै राजगादी रै बदळै वनवास मिळै। वन वन भटकता वखत ई वांरै मन मे कोई उदासी या दुख नीं। वे तो पे'ला रै ज्यू इज आणद मे भूम रह्या है। अजोध्या री प्रजा रै सनमुख अधकार छायग्यो है, पण राम रै सामनै तो वो इज प्रकास चमक रह्यो है। अजोध्या री प्रजा रो मुखड़ो मुरझायग्यो है, पण राम रा मुखड़ा पर तो वो इज आणद झळकै। आज पनरै अगस्त रा मगळ प्रभात मे भारत रा रांमां नै विचार करणो है के आपा रामराज तो चावां, पण काई आंपणा मे राम रै ज्यू सुख-दुख रै वास्तै सम भाव है? इले-क्सन मे हार जावण सू आंपणो मूडो मुरझाय तो नी जावै?

रांम रै जीवण रो एक दूजो प्रसग है--जुद्ध रा मैदांन मे रावण रै सक्ति बाण सूं लिछमण घायल होयनै अचेत व्हैग्यौ है। राम री सेना मे हाहाकार मच्योड़ो है। वालिमकी रामायण रै माफक हनुमान सजीवण बूटी लेवण नै गयो अथवा जैन रामायण रै माफक विसल्या लेवण नै गयो। इण समै जिण भात ग्रह रै च्यारूमेर उपग्रह फिरै, उणीज तरै लिछमण रै च्यारूमेर सांमत छायोड़ा हा। रांम, सुग्रीव, विभीसण सग-ळाई उपाय सोच रह्या हा के लिछमण री मुरछा किया

दूर को जा सके। उणीज वखत सामता देख्यो के उगमणी दिसा में एक जोत उजास करती श्राय री है। उण न देख'र सगळा विचार म पड्ग्या के श्रा रावण री माया है के श्रसल मे परगा सुदरी है? राम कथा रा लेखक बतावे के सोने री किरणा देखता पाण राम रो मूडो उतरग्यो। श्रा देख न सरदारा राम न पूछ्यो—"महाराज, श्रापन माता कौसल्या री चिंता व्हैरी है, या पिता री मोत रो फिकर लागग्यो है या म्हाला बाधव लिछमण री हालत देख'र चिंता व्हैरी है श्रथवा सती सीता री याद में श्राप दुखी व्हे रह्या हो? श्रर सवाल रा पडुत्तर मे राम जो कुछ कह्यो है वो घणी कीमत राख। उण में भारत री सस्त्रति री साखियात श्रात्मा गूज री है। उणा कह्यो—'सरदारा, न तो म्हने मा री चिंता श्रर न पिता रो फिकर है, न लिछमण री मोत रो दुख है श्रर न सीता री याद श्रायरी है। पण एक वात है जो म्हारा कोमळ हिवडा नै बीध री है जिणर कारण म्हारी श्रात्या में श्रासू श्रायग्या है, वा बात श्रा है के जिण वखत विभीसण म्हारै कन श्रायो, उण वखत म्हे उणन लकेस कैय न बुलायो हो पण जे सूरज ऊगग्यो तो लिछमण मर जावला, कारण के सूरज ऊगता इज, उणरै रू रू म जे'र फल जावैला श्रर भाई लिछमण री मदद विना म्हू लका धीकर जीत सकूला? इण चिंता रै कारण इज म्हू दुखी व्है रह्यो हू।"

सारण भूमि मे राम क्है
मुझ सोच विभीषण भूप क्है को!

राम रै जीवण री श्रा छोटी सीक घटना रामराज चावण

वाळां नै सोचण रै वास्तै मजबूर करै के राम पोता रै वचना रो कितरो ध्यांन राखता। राम रै ज्यू आंपांई आपणै वचनां रो ध्यान राखा हा के नी? वोट लेवती वखत आंपा आपांणै साथियां रै सागै जो वायदा किया, जिको थथोवा दीना, वै वायदा अर थथोवा पूरा किया के नी? आज पनरै अगस्त आपांनै इण सगळी वातां पर विचार करण रो आदेस देय री है।

आंपांणै अठै आद जुगाद सू एक कैवत प्रसिद्ध है के जथा राजा तथा प्रजा। जिसो राजा व्है, विसी इज प्रजा व्है। जे राजा धर्मनिस्ठ व्है तो प्रजा पण धर्मनिस्ठ व्है। राम राज प्रजा रो हाल वाल्मिकी अर तुळसीदास आछी तरै सू कह्यो है। उणे बतायो है के प्रजा मे अहिंसा री निरमळ भावना फली-फूली ही, दुखी लोकां तरफ दया भाव हो, जीवण रा कण कण मे सत रूपी परकास री किरणा फैल्योड़ी ही, लोक जीवण मे सुख अर साति री वसरी बाजती ही, न तो राजा नै प्रजा सू सिका-यत ही अर न प्रजा नै राजा सूं कोई सिकायत ही। ओ है राम-राज री प्रजा रो साचो चितराम। रांम राज पर मुग्ध होय नै रास्ट्रपिता महात्मा गाधी एकर कह्यौ हो—स्वराज रो सब्र सू उत्तम रूप राम राज है। रांम राज रो अर्थ है भगवान रो राज, सदगुणा रो राज, सद विरतिया रो राज। जद कोई आदमी बुरो काम करै तो आंपाणै मूडा सू आपोआप निकळ जावै के इणमे सू राम निकळग्यौ है।

कोई जमाना मे यू केवा मे आवतो के जे चरित्र री सिक्षा लेवणी व्है तो भारतवासियां सू लेवणी चाहिजै। अठा रो इसांन

जठ कठैई गयौ उठै आपरा पवित्र चरित्र रो सौरभ फैलावतौ रह्यो। भारत रा मिनखा दूजा देसा मे जाय नै उठारा लोगा न आपरा चरित्र सू घणा प्रभावित कियो है। इण वास्ते सस्कृत रै एक कवि कह्यो है—

> एतद्देश प्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मन
> स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सव मानवा।

भारत रा कविया इज नी पण दूजा मुल्का रा विद्वाना पण भारतवासिया री जस गाथा खुला दिल सू गाई है। विदेसी जात्री फाह्यान, ह्वेनसाग, इत्सिग, मेगस्थनीज अर ऐलबेरोनी जिकौ भारत री जात्रा करण न आया उणा जो कुछ लिख्यो उणनै पढ र भारत वासिया रै वास्त चीन मे जो सद्भावना पदा हुई, वा कवी द्र रवो द्र र चीन पूगण पर देखण में आई। चीन वासिया उण भारत रै देवता रो जो स्वागत कियो वो इतिहास म अमर है अर अमर रवला। उणा कह्यो 'आपरो देस वडो भागसाळो है के जठ चोरघा नी व्है, वदमासिया नी व्है, जठ मोटा २ नगरा म सोना चादी, हीरा पन्ना अर माणक मोती रो दुकाना पर ताळा नी लगाया जाव, धन धान रा भडार खुला पड्या रव, आपर उठारा मिनख कितरा इमानदार है। चीन वाळा री वाता सुण न रवीन्द्र र आख्या में आसू आयग्या, उणा कह्यो—भाइयो, एक दिन म्हारो देस इसोइज हो, जिसो थे फाह्यान अर ह्वेनसाग बतायो है। पण आज उठ भरपूर वेईमानी है। जठ हीरा पन्ना अर माणक मोतो री चोरी नी होवती, उठा रा मिनख आज

जूता चोरण मे ई संकोच नी राखै। म्हारा देस रो कितरो पतन व्हैग्यो है।

अवार थोडा दिनां पैली अखबारां मे कलकत्ता री एक घटना छपी ही। उठै एक डाक्टर खनै एक नव जवांन औरत आई अर बोली "म्हारा पति बीमार है, कोई आप वारो इळाज कर सको ?" डाक्टर पूछ्यो "वैंन, वांरै कांई बीमारी है ?" लुगाई बोली "थोडा दिना सूं वे बिल पेमेंट करो, बिल पेमेंट करो—इण तरै सू हाका करता रैवै। डाक्टर बोल्यो "वैंन, इसो मालम व्है के वांनै कोई मांनसिक रोग है। वे थोडा दिन दवाई अर इजेक्सन लेवण सू ठीक व्है जावैला" पांच सौ रुपया मे इळाज तै हुओ। लुगाई आपरो बटुवो खोल्यो अर एक सौ रुपयां रो नोट देवती बोली "आपरी कार पडी है, आप कैवो तो कार मे बिठाय नै वानै अठै लेय आवूं ?" डाक्टर नै रुपया देख'र विस्वास व्हैग्यो, उणे कह्यो "आप कार खुसी सूं लेजाय सको।" वा कार मे बैठ'र बजार मे उण जगै आई, जठै के झवेरी री मोटी दुकान ही। उणे झवेरी नै माल बतावण रो कह्यो। झवेरी कार अर उणरो चमकदार पेरवेस देख नै उणनै कीमती सू कीमती माल बतायो। उणे पचास हजार रो माल टाळ्यो। वा बटुवा मे सू निकाळ'र दो हजार रा नोट देवती बोली "जे आप आपरा मुनीम नै म्हारै सागै भेज दो तो म्हूं म्हारै पति सू इण बिल रो पेमेंट कराय दूं। झवेरी मुनीम नै उणरै सागै भेज दियो। माल अर मुनीम नै लेय'र वा पाछी डाक्टर रै उठै आई। वा सीधी डाक्टर खनै पूगी अर बोली "म्हारा पति आयग्या है, आप वांनै आछी

तरै सू देख न इलाज करावो ।" डाक्टर काम म लाग्योड़ो हो, उण उणनै एक दूजा कमरा मे बिठाय दियो अर पै'ली आयोडा रोगिया न रवाना करन मुनीम सन पूग्यो । डाक्टर नै देखता इज मुनीम बोल्यो "बिल पेमेंट करो ।" डाक्टर मन मे सोच्यो के लुगाई रो केवणो बिल्कुल सही है । उण मजाक मे कह्यो "हा हा अबार बिल पेमट कर दू सा ।" आ कैय न ज्यू ई डाक्टर उणरो सरीर तपासण लाग्यो, वो जोर सू बोल्यो "आप ओ काइ कर रह्या हो ?" डाक्टर बोल्यो "आपन बिल पेमेट री बीमारी है, उणरी जाच कर रह्यो हूं ।" मुनीम घबरीज न बोल्यो "आ आपन कुण कही के म्हू बीमार हूं । आपरी लुगाई म्हार दुकान सू पचास हजार रो गेंणो लेयन आई है अर आपन बतळाय नै आपरा मकान म गई है, सो फट बिल पेमेंट करावो ।" डाक्टर दो पावडा लार खिसक'र अचूमा सू बोल्यो "काई कह्यो ? आपन अबार जो औरत साथ लेयन आई ह, वा तो म्हारी नी पण आपरी लुगाई ह । वा थारो इळाज करावण न अठ लेय न आई ह ।

मुनीम पाछो बोल्यो "कठई आप भाग तो नी पी लीवी जो पोतारी लुगाई न म्हारी लुगाई बताय रह्या हो ? मजाक मत करो अर बिल पेमेंट कर दो ।"

इण विचित्र सवाद र बाद उण लुगाई वास्ते आ सका हुई । अठी उठी तपास करण पर ई उण लुच्ची लुगाई रो कठई पतो नीं लाग्यो । अब सगळोई भेद खुलग्यो । इसा अनेक काळा कारनामा रोज अखबारा में पढ़ण न मिळै ।

अचभो है के जिको देस नैतिकता में कोई दिन इतरो ऊचो चढयोड़ो हो, उणरो आज कितरो पतन व्हैग्यो है ।

जे आप रांम राज चावो, देस नै आबाद अर सुखी देखणी चावौ, तो आपनै आपरा हिरदा मे नैतिकता री जोत जगावणी पड़ैला अर सुततरता री इण वरसगांठ पर आ परतिग्या करणी पडैला के म्हे राम रै जिसा आदर्स थापण करांला । ऐ आदर्स आपणै देस रा गौरव नै वढावैला ।



भारत जुग जुग सू मानखा र मोद रो कारण बण्योडो है। पण इण मोद रो कारण काइ आभै तक पूगण वाळी हिमाळा री बरफ सू ढक्योडी चोटिया है? अथवा उछळ उछळ नै बादळ जिसी गभीर आवाज करतोडो मानखा रा हिरदा न आणद देवण वाळो दरिया रो तूफान है? के पब हसती मुळकती कुदरत रूपी नटडी री फूटरापो है? या थळ री चादी जिसी चमकती रेत है? या खळ खळ छळ छळ करती नदी री सरस धारावा है, या सोना चादी हीरा जवाह-रात रो खाना है? अथवा पट्रोल या तेल रा कुवा है। ओ एक सुळगती सवाल है जिण रो पडुत्तर आपन देवणो है। जे आप इण वारला वभव सू इज भारत री कीमत आकी तो म्हन कैवणो पडैला के आप भारत री आत्मा न नी ओळखी, आप तो फगत सरीर अथवा भौतिक चीज न इज देखी है अर उण न इज मान दीनो है।

भारत जिण न सयळा ससार रो आध्यात्मिक गुरु होवण रो पद मिळ्यो है अर सुरगा म रवण वाळा देवता पण इणरो माटाई रा गीत गाव, जिण धरती पर जनम लेवण री इच्छा राख, इणरो कारण वारलो वभव नी है। वारला वभव रो भळक तो आपन एसिया खड रा कई भागा में अर अमेरिका

यूरोप रा निराइ मुल्का मे देखण नै मिळ जावैला। दरअसल मे भारत रो मांन इण वारलै वैभव रै कारण नी है।

भारत रो मांन तो इण कारण है के ओ एक धर्म-प्रधान देस है। अठा री सभ्यता अर सस्कृति रा रूं रू मे धर्म समायोडो है। भारत नाम लेतां इज आंपां नै धर्म याद आय जावै। जे कोई आथमणा विचारक रै सागै कोई योजना राखी जावै तो वो केवैला के काई इण योजना सू म्हारी आवक वधैला ? पण वा इज योजना जे कोई भारतवासी विचारक रै आगै राखी जावै तो वो पूछैला के काई या योजना म्हारै धर्म रै माफक है ? अथवा या योजना धर्म सू ताल्लुक राखै ? जिण योजना मे धर्म रो पुट नी व्है, उणनै भारतवासी एकदम स्वीकार नी करै।

भारतवासिया री इण सु दर भावना रै कारण इज अठै हजारां धर्म गुरु, तीर्थंकर अर पैगंवर पैदा हुआ। धर्म रो सदेसो लेय नै हजारा विदेसी अठै आया। उण सगळा सदेसा नै, धर्म रा वचनां नै भारत गी माटी पचाय लिया, वानै फूलवा फळवा रो मौको दीनौ। ओ इज कारण है के भारत मे हजारा धर्म, संप्रदाय है अर घर घर मे धर्म सप्रदायां री न्यारी न्यारी खिचडी है। एक इज घर मे वाप वैष्णव है तो वेटो सिव भगत है। मा रांम री पूजा करै तो वेटी कृष्ण री। वेटा री वहू जैन धर्म नै मानै तो पोतो बौद्ध धर्म नै, मतलव ओ है के भारत रा हरेक घर मे सगळा मिनख कोई न कोई धर्म या सप्रदाय नै मानै। विना धर्म या सप्रदाय रो घर आपनै नी मिळै ला।

एक आथूण पडत भारत री जात्रा करघा पछ लिख्यो है भारत धरमा रो चिडियाघर है। ज्यू चिडियाघर म कोई फ्रास री चिडी व्हे तो कोई जरमनी री, कोई रुस री व्हे तो कोई अमेरिका री, कोई इगलड री तो कोई अरब री, कोई अफगानिस्तान री तो कोइ पाकिस्तान री। जिण तर सू रग रग री अर भात भात री चिडिया चिडियाघर म व्हे उणीज तर भारत मे भात भात रा अर तर तर रा न्यारा-न्यारा धर्मा रा लोग भारत मे है। कोई पूजा पाठ न मान देवै तो कोई भजन पूजन नै, कोई टीला टवका न मान देव तो कोई डाढी चोटी न, कोई काळा धोळा कपडा न मान देव तो कोई भगवा कपडा नै।

भारत धर्मा रो मेळो है। अठ इसलाम, ईसाई, सिक्ख, पारसी, जैन, बौद्ध अर वैष्णव कई धर्मा रा मानण वाळा है। पण सगळा रो लक्ष एक इज है अर वो है मोक्ष, धर्म उणरो साधन है।

आ एक तसुदा बात है क जिकी चीज जितरी सरल अर जितरी जाणीती व्हे, उणरो अरथ उतरो इज अबखो व्है। मानखो रात'र दिन धम धम रा हाका किया कर, पण धम है काई ? इण बात न कम लोग जाण के धरम काइ है अर पाप काई है। इण ससार रा वाडिया में कई विचारक, पडत, पगवर अर तीर्थंकर आया अर पोत पोता रै मत सू धम रो न्यारो न्यारो अर्थ कर न गया। इण सू ससार में एकला धम सब्द रा कई अर्थ व्हग्या। लॉरड मोरलन एक ठोड कह्यो है वे धम सब्द री कोई दस हजार व्याख्यावा हुई है, ताम पण व

सगळा धर्मां रै वास्तै पूरी नीं पडै । जैन, बौद्ध अर भारत रा कई धर्म उण व्याख्यावा सूं बारै रैय जावै । इण तरै धर्म सब्द कई अर्थां सू प्रयोग मे आयो है । उणरी भांत भांत री व्याख्यावा पण हुई है पण आज दिन तांई उणरी कोई इसी व्याख्या नी निकळी के जिणनै दुनिया रा सगळा धर्म स्वीकार करै ।

कोई कैवै स्नांन करणो धर्म है, कोई कैवै लाबी चोटी राखणी धर्म है, कोई कैवै बिरामणा नै दांन देवणो धर्म है तो कोई कैवै टीला टवाका लगावणा धर्म है । कोई सिव पूजा नै धर्म मानै तो कोई जिन पूजा नै, कोई गिरजाघर मे प्रार्थना करणी धर्म मानै तो कोई मस्जिद मे नमाज पढण नै धर्म समझै । कोई मंदिर मे जाय'र आरती बोलै तो कोई गीता रो पाठ करै, कोई देवतावा आगै बकरा काटै तो कोई वां पर दारू री धार इज चढावै, कोई सिराध करै तो कोई बिरांमणां नै लाडू जीमाड़ै, कोई कैवै के दूजा धर्म वाळा रो पल्लो भेटिया सू इज धर्म रो नास व्हे जावैला तो कोई कैवै के काफर सूं बात करण सूं इज धर्म मिट जावैला । साधारण मिनख तो इण जजाळ मे इज पड़ जावै के छेवट धर्म है काई ? साधारण मिनख री तो बात ई काई, मोटा मोटा ग्यांनी पण धर्म रो मर्म नी जाण सक्या । उणां कह्यो है—

तर्कोऽप्रतिष्ठ श्रुतयो विभिन्ना:
नैको मुनिर्यस्य वचः प्रमाणम् ।
धर्मस्य तत्वं, निहितं गुहायां
महाजनो येन गत स पन्था. ।

तक सू धम रो निरण करा तो उणसू पण वधारै जोरदार तक पे'ला तक न उडाय दे। तक तो हथियार है जिको आपस मे इज लडता भिडता रवै। तक तो बिना तळिया रो लोटो है, जिको अठी नैई गुडक जाव। उणसू धम रो निरणौ नी व्है सक। सास्त्रा म पण एक दूजा सू उल्टी वाता मिळै। एक सास्त्र जिको राग अलापै, दूजोडो उणसू उल्टो इज सुर काढ। इणीज भात श्रुतिया, स्म्रतिया मे पण धम रो कोई एक निरण नी है। कारण के ऐ देस अर काळ र माफक वण्योडी है। एक स्म्रति एक वात न घड तो दूजो उणनै भाग नाख। कोई एक मुनि रा वचन पुखता नी मा'या जा सकै। कारण के सगळा पोता पोता रै जमाना री वात कही है। आप आप र जमाना मे समाज री हालत देखन उणा धम रा विधविधान वणाया है। इण वास्तै मुनिया री कथणी सू ई धम रो सही फसलो नी हो सकै। इण वास्ते इज छेवट हार थाय न व्यासजी न कवणो पडयो—"भाई, धम रो तत्व तो बुद्धि री गुफा मे वठयो ह। अर उठ अधारो होवण सू वो निजर नी आय सक इण वास्ते जिण माग सू महापुरस गया है वो माग इज धम रो मार्ग समझणो चाहिज।

पण ओ ई कोई सही निरणै नी है। महापुरस जिण मार्ग गया व्है, वारै लार बिना अक्कल सू गाडर र ज्यू जावणो ओई एक मूरखपणो ह। महावीर जिसा चितवा उजाळ में पडया बिना धम रो निरण इण भात दियो ह—

पन्नासमिक्खए धम्मतत्त तत्तविणिच्छय

असलियत री कसोटी पर कस्योड़ा धर्म तत्व री विवेक वाळी वुद्धि सू इज धर्म री व्याख्या व्है सकै। अठै ओ ई देख लेवणो जरूरी है के उगमणा अर आथमणा पंडता, विद्वांनां अर तीर्थंकरा धर्म री काई व्याख्या करी है ? सब सूं पै'ली व्युत्पत्ति वाळो अर्थ लेवां तो—

"धारणाद् धर्म."

जिको धारण कियो जावे वो इज धर्म है। या—

"दुर्गतौ प्रपतन्त मात्मानं धारयतीति धर्मः"

अबखी वेळा मे आत्मा नै धारण करनै राखै वो धर्म है। इण तरै सू धर्म रा दो अर्थ निकळै ला। इण दोनू अर्था रो मतळव ओ हुयो के इसा नियम, सद्‌गुण अर रीतभात, इसी नीति अर इसो आचरण जिको दुर्गत मे पड़ती आत्मा नै वचावै, सुख कानी ले जावै, वो इज धर्म है। इण वास्ते इज वैसैसिक दरसणकारां धर्म रो अर्थ दूजो कियो है—

यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः

"जिण वात सूँ या जिण आचरण सू या जिण नीति नियम सू मिनख रो लोक अर परलोक दोनू सुधरै वो इज धर्म है।" सुरगवासी किसोरीलाल मश्रूवाळा रै सव्दा मे कैंवां तो— "जिणसू समाज रो भरण, पोसण, रक्षण अर सत्व-संसोधन व्है सकै, वो इज धर्म है' अर साफ साफ कैंवा तो दुनिया मे असली सुख जिणसू वध सकै वो इज धर्म है।" जैन पडत आचारज कुद कुद—

"वत्थु सहावो धम्मो"

चीज रा सुभाव नै इज धम कह्यो ह। हरेक चीज रो आपरो न्यारो २ सुभाव व्है अर वो इज सुभाव उण चीज रो धम मा'यो जावै। ज्यू आग रो सुभाव गरमी है अर पाणी रो सुभाव ठटक है। सास्त्रा री निजर सू अठै चीज रा गुण नै या सुभाव न धम कह्यो गयो ह। पण मानव समाज री निजर स या अध्यात्मिक निजर सू धम रो अरथ ओ व्हैला—"आत्मा रो ससार मे असली रूप म रवणो" इणरो अरथ ओ हुयो कै मानव समाज मे व्यवस्था री थरपणा होवण सू अर उणरा आचार विचार अर विरतिया रो सुद्धपणो होवण सू इज सुख वधै, कल्याण व्है अर दूजी सिद्धिया मिळ।

अगरेजी भाषा म धम न 'रिलिजन' कव। रि = लारै, लीजन = बाधणो। कवता आत्मा न चोखा विचारा म बाधणी। इणन अनुबध पण कय सका हा। आत्मा जठ चोखा विचारा सू बधीज जाव, उण समाज मे कोई गडबड नी व्है, लडाई झगडा नी व्है अर दुख में वधारो नी व्है। काट रा सब्दा में—"पोता रा सगळा कत्तव्या न ईस्वर रो हुकम मानणो इणरो नाम इज धम ह।" हेगल री मानता र माफक मगज री मरजादा मे रैवण वाळा अमरियादी सुभाव रो ग्यान धम है। मेयम धम री व्याख्या इण भात करी है—"मानखा रो आत्मा रो ब्रह्माड बावत चोखो अर साधारण पडुत्तर" मानव सास्त्री प्रामेस धम रो अथ बतायो हे—"ईस्वर सू प्रेम करणो" मरटा गार्ट धम री व्याख्या करी है—"मन रो वो भाव जिण सू आपा सगळा ससार रै साग मेळ अनुभव करां।" जेम्स फ्रेजर धम रो अनोखो अथ बतायो है, उणरा सब्दा मे "धम

मांनखा री उण ऊंची मांनी जावण वाळी ताकता री पूजा है, जिकां नै मानव जीवण रो मारग वतावण वाळी अर उण पर अंकुस राखण वाळी मांनी जावै ।"

इण सगळी वातां पर विचार करण सूं ओ नतीजो निकळै के धर्म मिनख रै वास्ते इज नी है, पण हरेक प्रांणी वास्तै जरूरी है । ओ प्रांणिया री तरक्की वास्तै है, सुख वास्तै है अर पाळण--पोसण वास्तै है, ओ एक व्यवस्था रो नांम है ।

धर्म मांनखा नै सुखी अर सात वणावण वास्तै एक वर-दांन लेयनै दुनिया मे जनम्यौ है । हिरदा मे घुस्योडी दांनवी विरतिया नै हटाय नै मिनखपणा री थापना करै । दूजा सव्दां मे कहूँ तो धर्म दानव नै मानव वणावै अर मांनव नै देव वणावै । धर्म आपणी समाज अर देस री उळझयोड़ी गूंछळिया नै सुळझावण वाळौ है, वो आदमी, समाज अर संसार रो मांनसिक विमारिया अर आत्म-विकारा रो इळाज करण वाळो है । इण सूं मिनख मिरत लोक मे सुखां रो सुरग उतार सकै । इणरै कारण मिनख संसार रा सगळा प्राणिया सागै प्रेम जोड सकै अर पोता रै कर्त्तव्य रो पालण कर सकै । इण सूं ससार री चोखी व्यवस्था व्है सकै अर समाज मे सुख साति फैल सकै ।

महात्मा चाणक्य रा सव्दा मे —"सुखस्य मूलं धर्मः" सगळा सुखां रो मूल धर्म है । वो मानखा रा विछुडता हिवड़ा नै मिळाय सकै, विगडयोड़ा वेवार नै ठीक कर सकै, टूटती व्यवस्था नै जोड़ सकै अर भूलती जीवण धारावां नै मारग

बताय सक । धम ससार रै वास्तै इमरत है, ग्रासीस है, सस्कृति नै बणावण वाळो है ग्रर जीवण रा निरमाण मे मदद करवा वाळो है । धम री पूठ विना मिनख ग्रापरा जीवण म कठई सफल नी व्है सकै । जच जिको क्षेत्र व्हो-ज्यू के राजनतिक, सामाजिक, सक्षणिक, ग्रर सास्कृतिक, धम रै विना कठई काम सफळ नी व्है सक । जीवण रा हर क्षेत्र मे धम मौजूद होवण सू ससार में ग्राणद रा फुग्रारा छूट सक, ससार सुरग रो सगीत सुण सक ।

पण दुख इण बात रो है क ग्राज मानखो धम रा ग्रसली भेद न भूलग्यो है ग्रर भूलतो जाय रह्यो है । जे कोई मिनख जीवणो तो चाय पण सास नी लेव, तो किया जी सक ? ठीक इणीज भात जिको ग्रादमी, समाज या राष्ट्र जीवणो चाय चोखी तर सू रवणो चाव, सुख साति सू गुजारो करणो चावै तो धम रै विना काम नी चाल सक । कारण कै धम तो प्राण र समान है । इण वास्त इज वदिक धम रै एक मोट रिसी समार न चेतावणी देवतां कह्यो है—"धर्मो विश्वस्य जगत प्रतिष्ठा" धम पूरा जगत रो ग्राधार है । जे मानव जात रो धम है ता उणरो ग्राधार पण है, पण जो धम नही तो ग्राधार म ई वेहम है । जे ग्रापा धर्म न कायम राखांला तो वो ग्रापणी पूरी मानखा जात री रक्षा करला ग्रर जो धम न गुमाय दाला, धम न खतम कर दाला तो धम ग्रापाणो नास कर देला । महाभारत रा वन परव में ग्राईज बात वेदव्यासजी कही है—"धम एव हना हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षित" इण बात न म्हू साफ खोल न कय दू । मान लो

कोई जगै इसी है के जठै मिनख धर्म रो नाम तक नी जांणै, धर्म री भावना ई वा मे नी व्है, वारै जीवण मे धर्म रो आचरण ई नी व्है, न वांनै धर्म रो सरूप समझावण वाळो कोई धार्मिक आदमी पण वांरै बीच मे है । धर्म रा अग्यांन रै कारण इज वै पोता रै कर्त्तव्य रो पाळण नी कर सकै, आप रा नीति नियम नी वणाय सकै, आपसी वेवार री मरयादा नी वणाय सकै, सगळाई आपस मे लड़ै, खावण पीवण री चीजां आपस में खोस लेवै, मामूली सी बात पर एक दूजा नै मारण वास्तै तैयार व्है जावै, एक दूजा री चीजां चुराय लेवै, कोई मांदो व्है तो उणरी सेवा चाकरी नी करै, बेढंगा तरीका सू रैवै, एक दूजा री जरूरत पर ध्यांन नी देवै, हरेक चीज आपरै खनै घणी सूं घणी भेळी करण री नीत राखै, न कोई नै भगवांन रो डर है, न कोई नै नरक भय है अर न सुरग री परवा । उठै फगत झगडा टंटा रो इज राज है । विचार करो इसी जगै मांनव समाज री कांई हालत व्हैला ! कांई उठै कोई जीवतो रैय सकै के आपरो भरण पोसण ठीक तरै सूं कर सकै ? कांई वै लोग दूजा रै वास्तै चोखी भावना राख सकै ? इण सवालां रो उत्तर नकार मे है । अबै आपनै धर्म री कीमत, धर्म रो चमत्कार अर संसार मे धर्म री जरूरत समझ मे आयगी व्हैला । जे उण जगै लोगां मे धर्म होवतो तो उणा रा नीति नियम होवता, आपसी वेवार री मरयादावां होवती, कर्त्तव्यां रो पाळण होवतो, मन री विरतियां री सीमा होवती अर इण तरै धर्म वारै जीवण में सुरग वणाय देवतो । वै सगळा आपस मे प्रेम सूं, आंणद सू अर सहयोग सूं रैवता ।

सगळा आपस मे 'लेणो जिसो देणो' रा सिद्धान्त नै मानता, कोई दूजा री चीज न हडपण री कोसिस नी करतो, कोई चीज घणी भेळी नी करतो, इण तरै सू वारो सामाजिक जीवण घणो सुखी होय जावतो । "धर्मो रक्षति रक्षित" रो भेद श्रो इज है ।

इण वास्त धम रा मम न समझो । उणरा उपयोग नै हिया मे उतारो अर उणरा वेवारीक वाजू न मन मे राखो । फगत धम धम री धूम मारया सू धम जीवण म नी आय सक । धम तो आचरण री चीज है । वा विग्यापन री चीज नी है । वा आडवर अर थोथा देखवा री चीज पण नी है । आज-काल ससार म धम र खिलाफ एक नवो इज उस्टह सरू हुवो है । इसा लोग पदा हुआ है के जिको धम अर धम रा नाम न इज मिटा देवणो चावै । व लोग कैवे के इण धम इज पूरा ससार न बरबाद कर दियो, धम इज मानखा नै आपस मे बुरी तर सू लडायो भिडायो । इण वास्त इण धम री तो जड इज उखल देवणी चाहिज । दरअसल मे इण लोगा र सब्दा में पण थोडो घणो सार जरूर है । इण सू नटियो नी जा सक । पण इसा लोग धम रा असली सरूप नै नी पचाण । धम रा मम न नी समझ । व पथा, सप्रदाया अर धम रा नाम पर चलण वाळा थोथा क्रिया काडा न इज धम समझ बठया है । व वार आपसी लडाई टटा अर कळ न देखन इज झट क्य देव ये इसा धम नै गोळी मारो ।

धम थोथी क्रियावा मे नी है, बिना सोच्या समझ्या

भूखा नागा रैवण मे नी है। धर्म कोई तरै रा पेरवेस मे नी है। धर्म कोई खास तरै रा टीला टवकां मे नी है, धर्म चूला चोका मे नी है, धर्म लांबा चवड़ा उपदेसा मे नी है, धर्म सुरग रा नांम पर हुंडी लिखवा मे या सुरग रा सपना दिखावण मे नी है। कोई रै लारै आंसू टपकावण मे या वळ नै भस्म होवण मे ई धर्म नी है। विना सोच्या समझ्यां सास्त्रा नै घोटवा में पण धर्म नी है। छळ पड़पच अर वेईमानी सूं पैसो कमाय नै दान देवण मे पण धर्म नी है। धर्म मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, थांनक, उपासरा, मठ, गुरुद्वारा अर ठाकुरद्वारा मे पण नी है। धर्म तो हिया मे है, जीवण मे है, सही सोचवा मे अर सही कांम करवा मे है। धर्म अहिंसा मे है, सत आचरण मे है, प्रेम मे है, न्याय मे है, सदाचार अर सद्विचार मे है। धर्म पोता नै जाणवा मे, ओळखवा मे अर समझवा मे है। धर्म परमारथ मे है। धर्म जिम्मेवारी अर कर्त्तव्य रा पाळण मे है। धर्म अमीरी, गरीबी, जात-पात, साम्प्रदायकता अर प्रांतीयता रा भेदा नै मिटावण मे है। धर्म दीन दुखियां नै गळै लगावा मे है। धर्म ईमानदारी सू वेवार करवा मे है। धर्म कम सूं कम चीजां सूं आपरो काम चलावण में है। धर्म सत अर अहिंसा पर अटळ रैवा मे है, धर्म कैवणी अर करणी एक राखवा मे है। धर्म रूढ़ियां, अंधविस्वासां, ओथी परंपरावां, खोटी धारणावां अर खराब संस्कारां नै मिटावण में है। धर्म अबखी वेळा मे ई नेकी पर रैवा में है। धर्म मन री निर-मळता, पवित्रता अर सुतंतरता में है। धर्म समाज सूं थोड़ो लेवण मे अर घणो देवण मे है। एक वात मे इज कहूं तो

"अहिंसा सजमोतवो" ह । धर्म वो विचार, वचन या आचरण ह के जिणसू ससार रा सुख नै आच नी आव ।

इण सब्दा न कोई मिनख, समाज या राष्ट्र खराब नी कय सक । कारण के ऐ जोवण री मूळ बाता ह, या र बिना जीवण एक पलक ई नी चाल सक । हा आ बात जरूर ह के आज काल नया ट्रेड माक लाग्योडा घणोसा अनोखा धर्म ह । यारी पुराणी अर नवी करतूता देख न नफरत व्है । इणीज धर्मा र नाम पर, पथा अर सम्प्रदाया रै नाम पर, जीवता मिनखा नै आग मे होम दिया, इणीज धर्मा र नाम पर छळ, पडपच, पाखड, बेईमानी, अन्याय, अत्याचार अर व्यभिचार चालता रहया । धर्म र नाम पर लाखा मिनखा न सुरग रा सर्टिफिकेट देय न ठग लिया । धम रा नाम पर आपस मे खून री होळी खेलीजगी । धम रा नाम पर भोळी ढाळी प्रजळावा रो जीवण नरक जिसो व्हैग्यो । इसा धर्म सू साचाणी नफरत व्हैणीज चाहिजै । पण आपा न एक बात तर सू समझ लेणी चाहिज के जैन, बोद्ध वैदिक, हिन्दू, इस्लाम, इसाई वगर विसेसण लाग्योडा धम अहिंसा अर सत्य र ज्यू धम नी है । ऐ तो एक तर रा समाज है, सघ है, सम्प्रदाय या तीरथ है लजस है, साप्रदायिक ट्रेटमाक है, अर धम री पोसाक है । कारण के महावीर साफ सब्दा म अहिंसा, सजम अर तप न इज धम कह्यो है ।

इण वास्त धम रो मतलब अहिंसा, सत वगैर सदगुण अर सगळा रो कल्याण करण वाळो है । ज म सू आपन काई पण

सम्प्रदाय, पथ या अमुक विसेसण वाळो धर्म परंपरा मे मिळियौ व्है, पण सत्य अहिंसा वगैरे बातां रो धर्म रै रूप मे पाळण करवा मे कोई नुकसांण नी है। साच तो साच इज रैवै। उण पर इसी कोई छाप नी लाग सकै के ओ हिंदू रो साच के ओ मुसलमान रो साच है अथवा ओ जैन रो साच है। काई आपरी सतान रै वास्तै मुसलमांन मा रै प्रेम में अर हिंदू मा रै प्रेम मे कोई फरक रैवै ? या कोई छाप रैवै ? के ओ प्रेम तो चोखो है अर ओ फोरो।

इण वास्तै आप इण नगद धर्म रा सद्‌गुणा रो, सुभावा रो अर पोता रै कर्त्तव्या रो पाळण करौ। वांनै छोडौ मत।

घणखरा लोग आ सोचै के धर्म तो परलोक री चीज है। अठै धर्म कराला तो आगोतर मे चोखो फळ मिळैला। कारण के धर्म इण लोक री ज चीज तो है नी। वो तो परलोक सुधारण री चीज है, पण आ इज एक मोटी नासमझी है। जिको धर्म इण भव मे फायदो नी दे सकै वो आगोतर कियां सुधार सकै ? दरअसल मे धर्म तो ओ भव अर पर भव दोन्यां नैं सुधारवा वाळी चीज है। इण वास्तै जैन सास्त्रा मे धर्म रो फळ इण तरै सू बतायौ है—'इहलोय परलोय हियाए, सुहाए, निसेसाए, खम्माए, अणुगामियत्ताए भवई।'

धर्म मांनखा रा जीवण रै इण भव अर परभव रै वास्तै है। सुख रै वास्तै है, कल्याण रै वास्तै है अर ताकत रै वास्तै है। इण भव मे पाळियोड़ो धर्म परलोक मे पण टेको राखै।

जिण तरै सू कुदरत री दीनोड़ी चीजां—सूरज, चंद्रमा,

पाणी, धरती वगरै रो सगळाई उपयोग कर सक, उणीज तर धम रो पण सगळा लोग उपभोग कर सक। वो कोई खास मिनख, खास सम्प्रदाय, खास समाज, खास पथ या खास रास्ट्र री ठेकेदारी में नी है। धम रो दरवाजो सबर वास्त खुलो है। मिनख चाव जिण जात पात, देस भेस या प्रात रो व्हो।

जीवण मे धम रा पाळण अर बवार कठई या करई पण कियो जाय सक अर कियो जावणो चाहिजै। घणखरा लोगा धम नै उपासरा, मदिरा, थानका, गिरजाघरा, मस्जिदा, गुरु द्वारा अर राम द्वारा मे बद कर राख्यो है। वे लोग धम न बारली हुवा नी लागवा देणी चावै। पण आ सब सू मोटी भूल है के धम मदिर में इज जीवतो रय सक अर बार निकळता पाण खतम व्हे जाव। दुकान म धम नी रैय सक, ऑफिस में धम छिप जाव, घर म धम नै एक कानी राख दियो जाव अर जीवण रा कोई पण वेवार मे धम कुम्हळीज जावै। राजनीति, अथ नीति अर समाज नीति म धम ठेका देय जाव। आ बात नी व्हैणी चाहिज। आ तो धम रै नाम पर एक मजाक है। धम तो हर टेम हर सास र साग रवणो चाहिजै। उण रो पलक पलक में पाळण व्हैणो चाहिज। उण पर आचरण व्हैणो चाहिज। कोई पण मिनख आ बात तो नी कर सकै के जठ काटा भागता व्हे, उठै तो पगरखो उतार ले अर जठै काटा नी भागता व्है, उठै पगरखो पर ल। इणीज भात जठ जीवण रूपी मारग म बेईमानी, छळ, लोभ, हिंसा रूपी काटा लागण रो डर व्है उठ तो धम रूपी पगरखी उतार लेणी अर मदिर, उपासरा वगर में जठै इसा काटा लागण रो डर नी

व्है, उठै धर्म रूपी पगरखी पैर लेवणी, ओ धर्म री मजाक नी तो और काई है ? ओ तो बहुरुपियापणो है। धर्म रो तो हर वखत पाळण व्है, जरै इज वो जीवण नै हरचो-भरचो वणाय सकै। दांनवी विरतिया नै हटाय नै मानवी विरतियां वढाय सकै। कई लोग आ सोच्या करै अर आपरा कुटुम कवीला मे मोटचारां नै कह्या करै—छोकरां ! हाल तो थारै खावण पीवण रा दिन है, सो खाओ, पीओ अर मोज उडाओ। वुढापो आवै जरै धर्म ध्यान करजो। टावरां नै कह्यो जावै—हाल थारै भणीजवा गुणीजवा अर खेलवा रा दिन है, धर्म ध्यान तो फालतू टेम मे कियो जावै। इसा लोगा री मूरखता पर हसी आवै। काई मोटचारपणा मे, जीवण रा हर वेवार मे, दिनूगा सू लेय'र सभया ताई हर एक वात में धर्म रै आचरण रो ध्यान नी राखणो चाहिजे ? काई टावरां रै खेल कूद मे अर भणाई पढाई मे धर्म नै जगै नी देवणी चाहिजै ? काई अधकडा नै दुकानदारी मे अर सामाजिक वेवार मे धर्म रो पाळण नी करणो चाहिजै ? भगवान महावीर तो हर वखत धर्म पाळण मे साव-धांनी राखण रो उपदेस दियो है—

'जरा जावं न पीड़ेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायति, ताव धम्मं समायरे।

जठा ताई वुढापो घेरो नी घालले, मादीवाड़ नी दवायलै, इंद्रियां कमजोर नी पड़ जावै, उण रै पे'ला पे'ला धर्म रो पाळण करलो।

एक आदमी बजार कांनी दड़ीछट दौड़चो जावतो हो। आरग मे एक जणै उणनै पूछचो—'भाई, थे कठै जाय रह्या

हो ?' उण कह्यो—'मजूर लावण न', 'क्यू किण वास्ते ?' वो बोल्यो—'घर मे आग लागगी है, इण वास्त कुओ खुदावणो है अर आग बुझावणी है।' पडुत्तर सुण न आगलो आदमी हसण लाग्यो अर उणें कह्यो—'आग लागी जर थें कुओ खुदावण री सोची। पे'ला थारी अकल कठ गई ही ? 'ठीक' इसीज बात बुढापा म धम ध्यान करण री है। धम र वास्तै तो हर वगत सोचतो रयणो चाहिजे। नीतिकारा कह्यो ह—

'गृहीत इव केशेषु मृत्युना धममाचरेत

समभलो के काळ चोटी पकड राखी ह इण वास्ते हरदम धर्म पर आचरण करो। तुगिया नगरी में एक आचारज चौमासो करण न आया। वे एक मसाण म होय न आया। मसाण में ठाड-ठौड सिलालेख लाग्योडा हा। वा पर लिख्योडो हो—ओ आदमी पाच बरस री अवस्था में मरयो, ओ च्यार बरस री उमर में मरयो अर ओ तीन बरस री। आचारज श्रावका न पूछयो—'आ बात कीकर हुई ? काई थार अठ सब लोग टाबरपणा में इज मर जाव ? श्रावका बात न साफ करता कह्यो—'महाराज, म्हांर अठ मसाण में, मरण वाळा री उमर नी लिखी जाव। अठ तो ओ लिख्यो जाव के उण कितरा बरस धम ध्यान कियो। जिको आदमी जितरो धम ध्यान कर उणरो पूरो हिसाब धम खाता में रख। म्है कुल जोड लगाय न सिलालेख पर उणरी उमर लिख दिया करा।' आचारज घणा राजी हुआ अर कह्यो—'वाह भाई वाह, आ तो वडी चोखी बात है। इणमू हरेक आदमी न प्रेरणा लेवणी चाहिज,

जिको आदमी जितरा वरस धर्म ध्यान करै, उणरी असली उमर उतरीज समझणी चाहिजै। वाकी टेम तो नकांमो इज गयौ—ओ मानणौ चाहिजै।

इण धरती पर केईक धर्म इसा पण है के जिको लोभ अर डर रा पाया पर टिक्योड़ा है। ओ पण ठीक नी है। जिको धर्म सुरग रो लोभ अर नरक रो डर वताय नै मानखा नै प्रेरणा देवण वाळो है, उणां री नीव काची है। वै तर्क रूपी आधी रा एक झपट्टा मे इज उड जावण वाळा है। इण धर्मा रो पायो अध सिरधा री रेत पर चुण्योड़ो है। वा मे कायम-पणो नी है। मांनखा रै मन सूं सुरग रो लोभ अर नरक रो डर हटतां इज वे धर्म रै सांमां ई नी झाकैला। आजकाल रा घणखरा मोट्यारां री आ इज हालत व्है री है। धर्म पर वां री सिरधा धीरै धीरै डिग री है। इण मे वां रो एकलां रो दोस नी है, उणां नै धरम रो सरूप ठीक ठीक नी समझायो गयो है। फगत अध-सिरधा, लोभ अर डर रै बळ पर वां रै दिमागा मे धर्म नै ठूस्यो गयो है। ओ धर्म कर्त्तव्य प्रेरित के विवेक प्रेरित नी होवण सूं वारै दिमाग सूं निकळ रह्यो है। इण वास्तै इण बुद्धिवादी जुग मे लोभ अर डर रा कादा सू निकाळ नै धर्म नै कर्त्तव्य, विवेक, समझदारी रा सरूप सू समझावणो चाहिजै अर खास कर परतख आचरण कर नै वतावणो चाहिजै। जरै इज धर्म जीवण मे उतर सकैला। दूजी वात आज रा बुद्धिवादी जुग मे विग्यान संसार रै सनमुख नवा नवा आविस्कार राख'र दुनिया मे अचूभा मे नांख दी है। सगळा ससार नै एक छोटीसीक जगै वणाय दी है। इसी टेम

मे धम जे विग्यान न साफ खराब बताय नै उणरो विरोध करतो रैव ता इण बात में कोई तत नी ह। धम में तो वा ताकत है के वो हर जगै मारग बताय सकै, तो पछ विग्यान रा क्षेत्र में प्रेरणा देवण में ग्राघो क्यू रैवैला ? धम विग्यान र साग मगत नो वठाई। विग्यान न धम प्रेरणा नी दावो तो विग्यान खोटे मारग लाग जावला ग्रर एक दिन उल्टो धम पर सवार व्है जावला। धम न जमीन दोस्त कर नाखला। इण वास्तै धम न प्रेरणा देवणी चाहिज के विग्यान ससार रै वास्त सुखदाई कीकर वण सक। विग्यान ग्रापो ग्राप न तो मारण वाळो ह ग्रर न तारण वाळो उणरी ताकत तो उणरो उपयोग करण वाळा री वुद्धि पर है। जे धम, विग्यान रो प्रयोग करण वाळा री बुद्धि धम कानी मोड दे तो ससार सुरग वण सक। महरिसि वेद व्यास कह्यो है—

धर्मे मतिभधतु व सततोत्थितानाम्'

हमेसा तरक्की चावण वाळा ! थारी वुद्धि धम पर लागी रव, धम रो जिको काम सास्त्र करता ग्राया है, वो इज काम विग्यान करैला। सास्त्र ग्रर विग्यान दोना रो काम विस्लेसण करण रो है, ससार नै सनमुख सत नै राखण रो है, उण सू ग्रापा न क्यू डरणो चाहिज ?

घणखरा विचारक कत्तव्य, फरज ग्रर ड्यूटी नै धम थव। वे कव कै पोता पोता र कत्तव्य रो पाळण करणो धम ह। ग्रापरो फरज ग्रदा करणो धम है। ग्रापरी ड्यूटी बजा वणो धम ह। ज्यू के राजपूत रो धम ह रक्षा करणी, विरामणा

रो धर्म है पढणो अर पढावणो। वैस्य रो धर्म है विणज वैपार अर खेती करणी अर सूद्रा रो धर्म है सेवा करणी। वकीलां रो फरज वकालत करणी है, डाक्टरां रो फरज इळाज करणो है, न्यायाधीसा रो फरज न्याय करणो है अर मत्रिया रो फरज राज चलावणो है। पण धर्म रो ओ अर्थ घणो छोटो है। फरज सब्द सू धर्म सब्द घणो मोटो है। फरज सब्द में त्याग भेळो नी व्है तो उठै जितरो देवणो है, उतरो इज लेवणो। डाक्टर दवा या सलाह दीवी तो रोगी सू फीस ले ली। अठाताई तो सोदो बराबर है। जो वो डाक्टर इमांनदारी सू उतरीज दवा अर सलाह रोगी नै दे, जितरा कै उण नै रोगी सू पैसा मिळ रह्या है। आ तो एक नीति हुई। धर्म नी हुओ। धर्म मे तो कम सू कम लेवणो अर विना स्वारथ घणा सूं घणो देवणो है। फरज तो बदळ पण सकै। जिको आदमी आज वकील है, कालै अध्यापक रो कांम कर सकै। पण धर्म री कीमत तो हर जगै एक सरीखी इज व्है।

भारत में भारत रा रिसियां च्यार पुरसारथ बताया है— धर्म, अर्थ, कांम अर मोक्ष। इण च्यारा मे मोक्ष तो छेलो फळ है। अर्थ अर काम नै धर्म रै सागै राखण री चेतावणी रिसियां आछी तरै सू दीनी है। उणा सदेस दियो है के धर्म पर आचरण करण सू इज अर्थ अर काम नै आछी तरै सूं भोग्यो जाय। धर्म नै छोड नै अर्थ अर कांम रो सेवन करणो जीवण रै वास्तै एक खतरो है। दुख सूं छूटण रै वास्तै अर मोक्ष में जावणा रै वास्तै फगत एक इज मारग है अर वो है धर्म रै चरणां में जावणो। विना धर्म रै ससार नरक बण जावैला

एक मे'ल म जैन सस्कृति रा मोटा महापुरुस बैठ्या हा। नीच घर रा आगणा म निन्याणू करोड सोना री मो'रा रो ढिगलो लाग्योड़ो हो । उणर आग आठ सुदरिया हाथ जोड ने ऊभी ही । उठ पाच सौ चोर आया । वे धन लेवणो चावता हा । वारै खन इसी विद्यावा ही के जिणसू वे ताळा तोड नाखता अर मिनखा न नींद में सुवाय देवता । उठी नै उण सुदरिया रो लक्ष काम हो । वें चावती ही के श्रो महात्मा म्हारै काबू में आय जाव अर ससारिक सुखा रो भोग कर । एक कानी श्रथ रो जोर हो अर दूजी कानी कामरो पण उण महात्मा न न तो लोभ रो मोह फसाय सक्यौ अर न काम रो मोह उणनै घेर सक्यौ । छेवट तो जीत धम रीज व्है । वेद व्यासजी साची कही है—"यतो धम स्ततोजय" सगळो ससार उण महात्मा रा गुण गावै । जिको धम री सरण मे आव, छेवट उणन मोक्ष मिळै ।

आप दुख सू छूटणो चावो, दुनिया न सुखी देखणी चावो तो धर्म न रग रग म रमायलो । 'अट्ठि मिज पेमाणु रागरत्ते' हाडका अर नसा में धर्म रूपी प्राण वायु भरो । धर्म आपरा कोई काम न नी रोकेला । वो आपरो खाणो पीणो बद नी करला । वो तो आ इज कवैला के जीवण री सगळी बाता में धम न आग राखो, उण न भूलो मत। 'सव्वाकला धम्मकला जिणाइ' सगळी कळावा म धम कळा उत्तम है । इण वास्ते अथ अर काम म धम न भूलो मत। उण न आख्या रा तारा ज्यू सनमुख राखो ।

पण अफसोस र साग कैवणो पड के आज धर्म बापडो

अर्थ अर कांम रा बोझा सूं दवग्यो है । उणरी आवाज धीमी पड़गी है । उणरा कोई भाव ई नी पूछै । जठै देखो जठै ई अर्थ अर कांम नै मान दियो जाय रह्यो है । सब जगै धन माल अर ऐस आरांम री तूती बोल री है अर धर्म वापडो पूंछ दवायां वैठ्यो है । महाभारत लिखण वाळां महाकवि वेदव्यास वांरा जमाना मे अर्थ अर कांम रो जोर देख्यो तो जीवण सूं निरास होय नै कह्यो है—

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष, नैव कश्चिच्छृणोति मे ।
धर्मादर्थश्च कामश्च, सधर्मः किं न सेव्यताम् ।।

'म्हूं हाथ उठाय नै हाका करतो कैय रह्यो हूं, पण म्हारी वात कोई नी सुण रह्या है । म्हारो कैवणो है के धर्म इज खास चीज है । उणसूं इज अर्थ अर कांम मिळै । उण धर्म नै क्यूं नी धारण कर रह्या हो ?

आज मांनव जीवण रा पाटिया पर अर्थ अर कांम सिंघासण पर चढ्योड़ा है अर धर्म वां रो दास वण्योड़ो है । जिको धर्म संसार नै मारग वतावण नै आयो हो, जगत रो भरण पोसण करण नै आयो हो, उणरी आज कोई नी पूछ है । सभा मे, सोसाइटियां मे, उद्‌घाटना में, भासणा मे, संस्थावां में, उपासरां में, मंदिरा मे अर थांनकां में सगळी सगळी जगै आज पैसा वाळां री पूछ है । वांनै ऊंचो आसण दियो जावै । ईमांनदार अर धर्म पर चालण वाळा आदमी नै नीचो विठायो जावै । इण हालत पर आंपां नै गंभीरता सूं विचार करणो चाहिजै अर समाज मे घूस्योड़ी वुराइयां नै धक्का देय'र वारै

निकाळणी चाहिजे । जर इज धम री इज्जत कायम रय सकला, त्याग अर सदाचार न ऊचो आसण मिळ सकेला ।

आप लोग धम रा मम न समभो, उण न परखो अर जीवण में उतारो, इसी म्हू आपसू उम्मीद राखू ।



चालता रहौ, आगै बधौ

मानखा रो बीत्योडो जुग उणरै सनमुख इज है, जिणमे समाज रै जीवण री रेखावा चमक री' है। हजार हजार अर लाख लाख बरस बीतग्या तांम पण उणरै जीवण री रेखावा झांखी नी पड़ी। आज पण वै रेखावां उणीज भांत चमक री' है।

मानखा रा आद अनाद जुग जिण नै जैन मत में जोगलिक जुग कैवै, अर वैदिक मत में त्रेता जुग कैवै, उण जमाना नै देखां तो मालूम व्हे के उण वखत रो मांनव फिरोकड़ हो, खानाबदोस हो, बिना घर बार रो हो, वो डांग माथै डे वसाय नै हर वखत अठी उठी फिरतो रैवतो। वो आजकल रा मांनव रै ज्यू एक जगै घर वसाय नै नी रैवतो। वे। फिर फिर नै कुदरत रा फूटरापा नै देखतो रैवतो। कुदरत री दीनोड़ी बखसीसां—पवन, पांणी, फळ-फूल अर कंद मूळ उपयोग करनै आपरो जीवण आणंद सूं वितावतो। उणां सगळी जरूरतां दरखतां सूं इज पूरी व्हैं जावती। कारण उण जमाना मे मिनख री जरूरता पण मामूली इज ही। उण कुदरत रा खोळा मे आपरै जीवण रो अमोलक घडियां विता-वतां अलेखां वरस बिताय दिया। पण दिन लाग्या समै पल्टो खायो अर दरखत मांनखा री जरूरता नै पूरी करता थाक

गया । उण वखत एक मोटो विचारक अर जीवण रो कळाकार जनम्यो । उणें वन वन भटकता मिनख न उणरी जरूरता पूरी करण वास्त खेती करणी सिखाई, हाथ रा हुनर सिखाया, उण सू उण जमाना रो मिनख श्राय वाजण लागो । उणें कम जोग री दीक्षा दीवी । अब मानखो घर बणाय न रवण लाग्यो, गावडा अर नगर बसाय में सभ्यता अर सस्कृति रो प्रचार करण लाग्यो अर समाज वणाय न पोता रो जीवण श्राणद सू बितावण लाग्यो ।

इणर पछे समाज में सगळा काम ठीक ढग सू चालता रव इण वास्त च्यार वण वताया गया—बिरामण, क्षत्री, वस्य अर सूद्र । इण च्यारू वर्णा रो मूळ धन एक इज हो के समाज रो जीवण सुख सू बीत सक । जिण वखत ऐ वण बणाया या उण वखत ऊच नीच री कोई भावना नी ही । फिरोकड भाव म कायमी आयो पछ इण च्यारू वर्णा री विरती दूजा र सू पागरण लागी ।

बिरामण वण रो मूळ काम हो, समाज रा विकास खातर न चितन करणो, विद्या अर कळा रो प्रचार कर न समाज सस्कारी बणावणो । समाज रा कत्तव्या री मरयादा बाधणी अर इण भात समाज री नतिक चौकीदारी कर न उणन तरक्की कानी लिजावणो । आ मोटी जवाबदारी निभावण वास्त बिरामण पोत विद्या पढण अर पढावण खातर आप रो घर-बार छोडन देस परदेस फिरता रवता । दूर-दूर प्राता अर मुल्का मे जाय नै समाज रा विकास न आछी तर सू देखता ।

वांरी आ जात्रा 'विद्या-जात्रा' वाजती। विद्या जात्रा पूरी व्हैतां इज वे जग्य सत्रां मे जावता। चौमासा रा च्यार महीना एक ठौड़ बैठ्या पछै वे 'चरैवेति-चरैवेति' रा सिद्धांत माफक फिरता इज रैवता। जीवण री छेली घड़ियां में पण वे कीड़ी-मकोड़ी रै ज्यूं मरचा करता, फिरतां-फिरता मरणो वधारै पसंद करता।

क्षत्री रो काम हो अन्याय अर अत्याचार सू समाज री रक्षा करणो। उण वखत रो क्षत्री फगत राजगादी पर बैठ नै मोटा-मोटा मे'लां मे मौज-सौक इज नी करतौ, पण जिण घड़ी उणरै कान मे कोई गरीब या अभ्यागत री पुकार आवती, वौ दौड़नै उणरी रक्षा करण नै जावतौ। जीव नै हथाळी में राग नै नै वो पोता री इण जवाबदारी नै निभावतौ। वांरै कांन हो, वृद्धस्रवा इद्र री ओ मंत्र गूंजतौ रैवतौ—'चराति चर थै है जिकौ चालतौ रैसी उणरो तकदीर पण आगै वध आजकम जिकौ बैठौ रैसी, उणरो तकदीर पण बैठ ज रैवतौ। वहै। क्षत्री पोता रा देस, समाज अर जात री रक्षा ती। कुद रो फौज-फटा सागै फिरता रैवता। आ वांरी मूछ बाजती। उवां

वैस्य रो कांम हो समाज मे जिण चीज है जरूर णै उठै वा चीज पूगती करणी, पैदाइस अ विरा ड़ रो हि उप राखणो। उण रो ओ कांम विणज वेपार नन-f तौ। समा ता-सेवा री आ जवाबदारी पूरी करवा संस्व वैस्य हिमाळै गे कन्या कुमारी तांई अर अटक सू कटक तांई इज नी पण दरिय।

न लाघ न परदेसा में पूगतो। उठा सू जरूरत री चीजा लेय न आवतो अर बार चाहिजै जिकी चीजा देय न आवतो। इण तरै वो करेई करेई तो एक मोटा काफला साग लाखा रुपिया रो माल लेय नै एक जगै सू दूजी जग जात्रा करतो। माल रो निकास अर आवक करण र कारण वो साथवाह रै नाम सू ओळखीजतो। इण तरै वो नीति सू वेपार कर न पोता री अर समाज री जीवण जात्रा नै सुखी बणावतो।

सूद्र रो काम हो भात भात री कळावा, कामा अर उपज सू समाज न च्यारूमेर सू वेफिकर बणावणो। सूद्र री जवाबदारी दूजा करता घणी बधार ही। कळा अर कारीगरी सीखण वास्त उण नै जग जग जावणो पडतो। उण री आ मुसाफरी 'सेवा जात्रा' बाजती।

उण इण तर सू च्यारी वण जात्रा न मान देवता। मत नै म मा जात-पात रा बधण सू बार हुया करै, वा न वर्णां री मा।पा रोक नी सक। ऐ लोग च्यारी वर्णां सू निरलेप रवता थका समाज नै नतिक अर धार्मिक मारग बतावता, समाज रा नतिक अर धार्मिक पोरादार होवता। वा रै कोई घर वार वे आश्रय नी हुया करतो। व तो सगळी दुनिया न पोता रो कुटुम मान न चालता। सगळा ससार नै आध्यात्मवाद धांनी सिजावण वास्त, समाज में धम री जोत जागती राखण वास्तै, वै एक जग सू दूजी जगै फि[illegible]रवता। नदी रा वग र पाण विघनां री चट्टाना न [illegible] [illegible]आग वधणो अर गाव गाव म धम री अलग [illegible] [illegible] जीवण रो लक्ष हो

एक जगै पर वै घणा दिनां तांई थिर नी रैवता। जे कदाच वां नै कोई कारण सू रुकणो पड़ती तो वै तन सूं भलाई रुको, मन सूं नी रुकता। इण वास्तै भारत रा सत महात्मा फिरता इज रह्या है। एक जगै रा मोह मे फँस नै वै कदैई रुकिया नी। चौमासा नै छोड नै लारला आठ महीना फिरतौ रैवणौ ओ इज वा रो खास काम हो। ओ इज कारण है के आगमां मे जठै साधक संजम रो मारग पकड़ नै भेख धारण करै, उठै भेख (दीक्षा) रै अर्थ में 'पवज्जा' अर 'प्रव्रज्या' सव्द आवै। जैन साधु रै वास्तै जगै-जगै सास्त्रा मे प्रव्रजित सव्द काम मे आवै। इण सव्द री व्युत्पत्ति इण भात है—प्र उपसर्ग है अर व्रज धातु चालवा रा अर्थ मे है। दोन्या नै भेळा करण सू अर प्रत्यय लगावण सू प्रव्रज्या सव्द वणै। उण रो अर्थ है वरावर फिरतो रैवणो। इणीज वास्तै वैदिक साहित मे 'परिव्राजक' सव्द आयो है, इण रो अर्थ है घर-वार रा मोह नै छोड नै हर वखत फिरतो रैवणो।

आज सूं ढाई हजार वरस पे'ली भारत मे एक संस्कृति रो विकास हुयो हो, जिणरो नांम है स्रमण-संस्कृति। जैन अर वौद्ध इण सस्कृति री दो धारावा है। सरूपांत मे तो आजी-वक अर आकारवादी वगैरै अनेक धारावां ही। पण मौजूदा टेम मे जैन अर बौद्ध ऐ फगत दो धारावां इज वची है। दोन्यू धारावा रा संत ठेट सूं फिरोकड़ रह्या है।

महात्मा वुद्ध रो मत हो के जिण भांत गेडो एकलो वन में निरभै होय नै फिरतौ रैवै, उणीज भात साधुवां नै निडर होय

नै फिरणो चाहिजै । एकर उणा आपरा साठ चेला न बुलाय न सदेस दियो हो—

> 'चरथ भिक्खवे बहुजनहिताय बहुजनसुखाय
> चरथ भिक्खवे, चारिकां चरथ भिक्खचारिकं ।'

हे भिक्खुआ, दुनिया र परमारथ खातर अर अलेखा मिनखा र सुख खातर फिरता इज रहो । भिक्खुआं, थारी जीवणचया वास्तै हमेसा चालता रहो । सम्राट असोक ई बौद्ध धम अगी कार किया पछ दिगविजय छोड न बरसो बरस धम जात्रा करतो रवतो ।

बौद्ध धम दूर दूर ताई लका, जावा, सुमात्रा, बरमा, स्याम, चीन, जापान, तिब्बत एव एसिया रा कई मुल्का मे फलग्यो, उण रो एक इज कारण हो अर वो औ वै बौद्ध भिक्खुआ रो पदल विहार करणो । बौद्ध भिक्खुआ दूर दूर ताई फिर फिर न पोता रा आचरण सू, उपदेसा सू अर बुद्ध सिक्षा सू तमाम मुल्का में धम, नीति, सभ्यता अर सस्कृति रो प्रचार कियो ।

भारत रै महापडत स्री राहुल साकृत्यायन घुमक्कड सास्त्र नाम रो एक पोथी लिखी है । उण में उणा पुराणा जमाना सू फिरोकडा (घुमक्कडा) रो हाल लिख्यो है अर घूमण फिरण सू फायदा बताया है । भगवान महावीर न ई उणा घुमक्कडराज री पदवी दी है अर वा रै फिरण र प्रभाव रो रोचक ढग सू हाल लिख्यो है ।

भगवान महावीर पण साधु साध्विया न उपदेस देवता कह्यो है—

'भारंड पक्खीव चरे ऽपमत्ते'

हे स्रमणां ! भारंड पक्षी रै ज्यूं मस्त होय नै विहार करौ, भ्रमण करौ, विचार तारौ। जैन अर बौद्ध साधुआ रै विहार रै कारण इज उण प्रांत रो नाम विहार पड्ग्यो।

जूना जमाना री वात नै छोडनै मोजूदा समै पर निजर नाखा तो आज ई सैकडां जैन साधु भारत रा इण खूणा तांई पैदल घूम घूम नै मांनखा रै मन में अहिंसा अर सत री जोत जगाय रह्या है। वां रै खनै न घोड़ा है, न ऊंट है, न मोटर है, न विमांन है, न साईकल है अर न वग्घी है। तामपण जैन सस्कृति रा सत एक गांव सूं दूजा गाव तांई, एक नगर सूं दूजा नगर तांई अर एक प्रात सूं दूजा प्रांत तांई संजम भरी जिंदगी री मस्ती मे झूमता थकां हजारां कोसां री पैदल जात्रा करै अर मांनखा नै आध्यात्मिक अर धार्मिक विचारां रो प्रकास देवता रैवै। वानै उघाड़ै माथै, उभांणै पगां, आपरा पोथी पत्रा अर कपड़ा सागै लेय नै चालणो पड़ै। वांनै न कोई साथ री जरूरत है अर न सवारी री। वे तो गांवां अर नगरा मे पोता री मरियादा सूं रैवता थका, मांनखा री मुसीबतां नै धार्मिक निजर सूं मिटावण री कोसिस करै। इण वास्ते इज कह्यो है—

'विहारचर्या मुणीण पसत्था'

पैदल चालणो मुनियां वास्तै घणो आछो है। अबै संत विनोवा कांनी देखो। भारत रै इण मोटे विचारक पैदल फिर फिर नै देस मे एक नवी अहिंसक विचार क्रांति नै जन्म दियो

है। भूदान सू लगाय न ग्राम दान तक रै आंदोलन सू विण तर दुनिया रा दिल दिमाग नै हिलाय दियो वो सूरज री रोसणी रै ज्यू साफ है। भारत रै इण रास्ट्रीय सत पग जात्रा सू कमाल कर दियो ह। इण सू विदेसी लाग पण अचभा में पहग्या है। वे ई पोता रा हक हकूक छोडण री बात घर घर अर झूपड़ा झूपडा ताई पूगावण वास्तै पदल जात्रा करण लागग्या है। भारत रा इण अनोखा सत रानै एक इज मत्र है—चालो, आग वधो, पग रस्तै चालबो इज करो।

नोवाखाळी में जिण वखत हिंदू मुसलमाना रो दगो हुग्रो, उण वखत महात्मा गाधी पैदल जात्रा क्यू पसद करी। इणरो कारण ओ इज हो के गाव गाव मे छोटा सू छोटा अर दु खी सू दु खी मिनख री पुकार सुणी जा सक।

परण अर वाहणा पर बठनै सपाटा सू जात्रा करण वाळा रो मेळ जनता साग नी रैय सक। ओ इज कारण है के भारत री रास्ट्रीय महासभा काग्रस न मजबूत बणावण रै वास्त अर काग्रेस रा सिद्धाता मे जीवण लावण वास्तै काग्रेस रा मोटा नेतावा पदजात्रा सू जनता साग सेंद मेद राखण रो मारग त कीनो है। उणा काग्रसी किमतरिया नै पण पदजात्रा रो हुकम दियो है। साच्याणो जे काग्रेस वाळा जे पूरा भारत में पद-जात्रा सरू करदी तो गामडा री परजा साग वारी सेंद मंद वधला अर लोगा र साचा दुखा री जाण व्हैला। पदल जात्रा म भारत रो नसीब पळटण री ताकत है।

सही बात पूछो तो मुसाफरी रो साचो आणद पदल

चालवा मे इज है। परण ऊपर के वाहण मे वैटनै कोई इलाको सपाटा सूं पार तो कियो जाय सकै पण उठा री परजा मूं एक रत्ती भर ई ओळखाण नी व्है सकै। उठा रा मिनखां री असली हालत कांई है, उणरो बिल्कुल पतो नी लाग सकै। इण कारण इज साधु मानखा रै जीवण री उळझ्योड़ी गूंछळिया सुळझावण नै, लोकजीवण मे घुसयोडी बुराइयां रो इळाज करण नै अर पोता रै साधपणा री भावना निभावण नै पैदल विहार करै। एक आथमणै विचारक कह्यो है—

He travels best, who travels on foot.

जिको पैदल जात्रा करै, उणरी जात्रा इज सब सूं आछी है। पैदल जात्रा जीवण मे चेतणता रो लक्षण है। जिणनै एकाध वेळा ई पैदल जात्रा करवा रो मौको मिळ्यो व्है, वो इज चेतणता रो अनुभव कर सकै। कुदरत रा नवा नवा नजारा देखणा व्है तो पैदल जात्रा करणी चाहीजै। सरीर सूं अर मन सू निरोग व्हैणो व्है तो पैदल जात्रा घणी फायदामंद है। ग्यांन अर अनुभव रो परकास लेवणो व्है तो पैदल जात्रा घणी कल्याणकारी है। समाज री सही हालत देखणी व्है तो पैदल जात्रा घणी जरूरी है। मांनखा रो सुख दुख देखनै सहानुभूति दिखावणी व्है तो पैदल जात्रा सब सूं उत्तम है।

फगत भारत रा धर्म अर सास्त्र इज पैदल जात्रा नै मांन देवता रह्या व्है, आ बात नी है। जापांन मे सिंटो धर्म अर बूसिडो धर्म ई जात्रा रा फाइदा नै स्वीकार कीनो है। हज करवा रो हुकम देवण वाळा इस्लांम धर्म पण पैदल जात्रा नै

मान दीनो है। तापडिया रा कपडा प'र नै जेरुसेलम री पवित्र धरती ताई जात्रा करण वाळा ईसाई भगता पण पदल जाना घणी पसद कीवो है।

भारत रा वदिक धर्म में अर उणरी साखावा—वस्णव धम, सव धम अर हिंदू धम मे हरेक भगत नै तीरथ जात्रा करण रो हुकम दियो है। पुराणा जमाना में जिण वखत आवण जावण रा कोई साधन नी हा, उण वखत लोग पदल तीरथ जात्रा करवा निकळता अर खूब ग्यान अनुभव लयनै पाछा आवता।

मानव जीवण री ऊडाई, जीवण रो सही अनुभव, सास्कृतिक ग्यान अर रीत भात रा अनुमव जिको पदल घूमण फिरण सू व्है सक, वो वाहण पर बठ न जात्रा करण सू नी व्ह सक। भूगोल रा जितरा विद्वान हुआ ह अर वा पोथ्या लिखी है, उणा कोरा कल्पना रा घोडा इज नी दौडाया है, पण उण जगावा न देख परख न पछ पोथ्या लिखी है। आप देखोला के जितरा ई मोटा मोटा कवि हुआ ह, वे सगळा ई घुमक्कड हा। कवि कुळगुरु काळिदास रो नाम आप सुण्यो व्हला, जिणरी रचनावा न देखन विदेसी लोग पण चकित हुवा ह। वा री कविता मे जो चमत्कार ह वो घूमण रै कारण इज आयो है। उणा उजळा, धवळा, बरफ सू ढक्योडा हिमाळ अर सदा हरियाळा रवता देवदारा र कुदरती फूटरापा रा जो वखाण किया है, व निजरा देखन किया ह, काना सुणन नी किया हैं—

अमुपुरः पश्यसि देवदारुं, पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन

राजा रघु री संसार विजेजात्रा में, उणां जिण जिण मुल्का रो हाल लिख्यौ है, उणमे सूं घणखरां वांरै निजरा दीठोड़ा हा अर जिको नी दीठोड़ा हा, वांरी पूरी जांण लेयनै पछै लिख्यौ है ।

आप कादंबरी महाकाव्य रो नाम सुण्यौ व्हैला, जिणरी बराबरी सस्कृत गद्य साहित मे आज दिन तांई कोई ग्रंथ नी कर सक्यौ है । इसौ अनोखौ दूजौ ग्रंथ देववांणी मे ढूढ़योड़ौ ई नी मिळ सकै । इणनै लिखण वाळा हा महाकवि वाणभट्ट । वांरै बारै मे सस्कृत मे एक कैवत है के—

'वाणोच्छिष्टं जगत् सर्वं'

वै पक्का फिरोकड़ हा । वै कई दिनां तांई तीन दरजन सूं वधारैं कवि अर कलाकारां नै साथै लेयनै इणां मुसाफरी करी ही । दस कुमारचरित रा लिखणवाळा महाकवि दंडी पण पक्का फिरोकड़ हा । कांची रा पल्लव राज री सभा रा रत्न रैवतां थकां ई इणां खूब देसाटण कियौ ।

कळिकाळ सरवग्य आचारज हेमचंद्र सूरि, वादिमांनमर्दन सिद्धसेन दिवाकर, हरिभद्र सूरि, अर अभयदेव सूरि वगैरै जित-राई संस्कत अर प्राकत रा विद्वांन हुआ है सगळा ई पक्का फिरोकड़ हा । जैन साधु होवण रै कारण वानै फिरणौ तो पड़तौ इज हो पण भांत-भांत री विचारधारावां, संस्कतियां, परं-परावां, अर जण-रुचियां रो ग्यांन लेवण नै वै खूब आणद सूं घूमता । बृहत कल्प-भास्य अर व्यवहार-भास्य में साधुवां नै

उग्रविहारी अर अप्रतिबद्ध विहारी होवणो जरूरी बतायो है। इणरैं साग देस देस री भासावां, संस्क्रतियां अर रण सण री जाणकारी र वास्तै ई 'उग्रविहार' करणो चाहिजै जिएसूं परजा री रीत भात देखी जाय सकै।

हिंदी साहित रा महाकवि देव पण पक्का फिरोक्कड़ हा। इणा फिर फिर नैं देस-देस री लुगायां रा चितराम बणाया। कविता रा विकास में पण फिरणो कम कीमत नी राखै।

आ बात सही है के पैदल-जात्रा में पग पग माथ मुसीबत आवै। पैदल जात्री न उण तकलीफां सूं टक्कर लेय न आगै बधणो पड़ै। पदल फिरणो कोई फूलां री सुखसेज नी है, दुखां अर तकलीफां रो मारग है। कस्ट सैवण वालो इज पैदलजात्री बण सकै। उणरैं सनमुख करई करई तो दुख रा डूगर आय जावै। कठई सत्कार मिळै तो कठई दुत्कार, कठई प्रेम रो इमरत मिळै तो कठई द्वेस रो हलाहल जे'र। कठई ठरवा वास्तैं मोटा मोटा गजमै'ल मिळै तो कठैई भागी टूटी झूपड़ी, कोई वखत मेवो लापसी मिळै तो कोई वखत मुट्ठी चिणा। इण वास्त इज एक कवि कह्यो है—

'परदेस कलेसा नरेस हु को'

परदेस म राजा न ई तकलीफ मिळै तो पछ साधारण मिनख री तो बात ई काई ? साचो साधक साचो पद-जात्री आप री जात्रा मे जिकी तकलीफां आवै, बाधावां आवै, विघन आवै, वां सूं घबरीजै नी, झिझकै नी अर रुकै नी। मुसीबत र टेम वो इण सेर सूं सबक लेवै—

काट लेना हर कठिन मंजिल का कुछ मुश्किल नहीं ।
इक जरा इन्सान मे चलने की आदत चाहिए ॥

पैदल चालण वाळा साचा साधक मे सगळी चेतणा सक्ति जाग जावै। वो नवा-नवा मिनख, नवा-नवा गांम, नवा-नवा मकान, नवा-नवा खान-पांन देखै। उण वखत उणरी विराट चेतणा हसतो थकी अड़चणा रो स्वागत करण नै तैयार रेवै। उणरै मन में कवि री आ वाणी गूंजण लाग जावै—

करे खाना बदोशी की खुदा खुदकार सामानी।
नयी मंजिल, नया बिस्तर, नया दाना, नया पानी ॥

इण भात नित नवा विचार हिया मे भरनै पद जात्री सिंघ रै ज्यू आपरा धे' कांनी आगै वधै। चावै जितरा विघन आवै, आंधी आवै, पण उणरा पग धूजे नी, हिमाळै री चट्टांन रै ज्यू अडग रेवै।

भारत री संस्कृति रा फिरोकड़ सत वैदिक रिसियां रै सब्दां मे—'चरन्वै मधु विन्दत्ति !' चालण वाळां नै मधुरता मिळै। जीवण रो साचो मिठास तो वांनै इज मिळै। वे—'स्वांतः सुखाय' रै वास्तै नी पण 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' रै वास्तै फिरचा करै। वे जठै कठै ई जावै जिण किण नै ई मिळै अर मिळण वाळा मे जे ग्यानरूपी रोसणी व्है तो उणनै जगाय देवै।

जिण मिनख री कीकीआ मे जोत व्है अर उण पर कोई कारण सू मोतियो आयग्यो व्है तो डॉकटर आपरेसन करनै उण मोतिया नै हटाय देवै। जिणसूं उण मिनख नै पैला

जिसो दीखण लाग जाव। पण जिण मिनख री श्राख मे रोसणी नी व्है, उण पर सू मोतियो हटाण पर ई निजर नी श्राय सके। कारण के मूळ मे रोसणी नी है। डॉकटर जचै जितरोई हुसियार व्हो, वो रोसणी नी देख सक। ठीक श्रा इज बात साधक र बाबत ह। साधक जठै विहार करन जाव उठा रा मिनखा म जो सिरघा व्है, ग्यान लेवण री जोगता है, साधना कानी श्रागै वधवा री इच्छा व्है, तो साधक वा र श्रात्म रूपी श्रारया पर श्रायोडा मोह श्रर वासणा रूपी मोतिया नै हटाय न ग्यान री रोसणी देय सक। पण वा म ग्यान लेवण री ताकत इज नी व्है, इच्छा इज नी व्है तो साधक जच जितरी उपदेस-रूपी दवाइया दो, पण वा र मोह रो पडदो नी हट सक।

१ जो खुद जाग्योडो है, उण नै जगावण रै वास्त दुनिया में कारणा रो टोटो नी है। बीज जो जागतो है, उण मे प्राण व्है, श्रात्मा व्है, चेतणता व्है तो धरती उण न कव—'श्रन्नराज जागो, श्राप ससार रा सिरमौड हो। म्है श्राप न फूलण-फलण न जग देवू।' पाणी कवै—'श्रन्न देव ! श्रो मीठो पाणी श्रापर वास्त तयार है, इण न पीश्रो श्रर फूलो फळो।' पवन कवै—'हे ससार रा प्राण, थन गरमी लागती व्है तो म्है थन हवा वरू। थू विकास कर।' सूरज रो तावडो कवै—'हे बीज, थू तेजस्वी बण, श्राग वध, म्हू थन परकास दू।' पण जे बीज मुडदो व्है, सडयोडो व्है तो धरती कवला—'श्ररे श्रन्न रा दाणा, थू म्हारा सरीर म नकामा क्यू पड्यो है ? थारा सरूप न बदळ ल श्रर सड गळन नस्ट व्हजा।' पाणी उण न सडावण मे

मदद करै। जिकी पोसरा करतौ व्है वो इज सोसण करण लाग जावै। पवन उण नै जळाय नांखै, माटी उण नै माटी वणाय नांखै। इणीज भांत जिण मिनख मे जाण व्है, सुद्धताई व्है, संजीवणी सक्ति व्है तो उरा नै साधक पण मिळ जावै। आप जाणो के धर्मास्तिकाय रो गुण चालणो है परा आपा चालांला जद इज वो मदद करैला। जे आपां थिर हां तो वो आपां नै मदद नी कर सकै। माछळी चालै जदै इज पाणी उण नै मदद करै। इणीज भांत आप जीवण रा कोई क्षेत्र मे धरम री निजर सू आगै वधणी चावोला तो जरूर उण मे आवकारौ मिळैला।

खरी वात आ है के आगै वधणो इज जीवण है। जिण जीवण मे चाल नी, चळवळ नी, वो जीवण मुड़दा जिसो है। कवि जयसकर प्रसाद कह्यौ है—

इस जीवन का उद्देश्य नहीं है, शांति भवन मे टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं॥

जीवण रो विकास करणो व्है तो आगै वधौ। चर धातु सू इज आचार-विचार, सचार-प्रचार, उच्चार-उपचार वगैरै सब्द बणै। इण सगळा रै मूळ मे चालणो है। चर क्रिया है। आप ई आप रा जीवण मे चर नै जगै दो। घवरावौ मत। इण सू आप रो विकास व्हैला, आप री वुद्धि चमकैला, आप रा दिल अर दिमाग नै इण कानी मोड़ दो, स्रवण सस्कृति रो ध्यांन इण कांनी इज रह्यौ है—चरैवेति चरैवेति—चाल्या करौ, आगै वधौ।



जीणै री कला

भारत दरसण सास्त्र अर फिलासाफी रो देस है। अठ हरेक चीज सास्त्र, धम अर ग्यान री कसौटी पर कसी जाव, फिलासाफी अर विचारा री पाण पर चढाई जावै। जिकी चीज कसौटी अर पाण पर पूरी उतरवा इज खरी मानी जाव अर वा इज गिरण करण जोग समभी जावै। भारत रा विद्वाना जीवण रा कोई खूणा न खाली नी छाडयो है। उणा जीवण रा हर पासा पर पूरो सोच विचार कियो है। ओ इज कारण है के आद जुगाद सू लगाय न आज दिन ताई कई महापुरसा जीवण र बारा मे भात भात सू सोच्यो ह।

परपरा रूप मे जिवण दिन सू मिनख रा जीवण म सभ्यता अर सस्क्रति रो पग मडण हुयो, कळा र बाबत सोच्यो जावण लागो, उण दिन सू कळा मानखा र हिवडा री हार वणगी। बिना कळा रो कोई पण काम मानखा जूण मे चोखो नी समभयो जाव। जिण घडी सू मानखा जूण न सरस अर सुदर वणावण री कोसिस सरु हुई उण वखत सू इज अण-जाणए कळा पण मानव जीवण मे आयगी।

सरुपात म मानखो जीवण रा तरीका सू साफ अजाण हो, सभ्यता अर सस्क्रति रो नाम ई नी जाणतो हो, उण

वखत जीवण रा मोटा कळाकार भगवांन रिखबदेव मांनखा नै भांत-भात री कळावा सिखाई। उणां आदमिया रै वास्तै ७२ अर लुगाया रै वास्तै ६४ कळावां रो सिरजण कियौ।

अठे सवाल ऊठ सकै के जिकण जीव रो जितरौ आउखौ है उतरो तो उण नै जीवणौ इज पड़ै। कळा विनां ई वो जीवतो तो रै'इज सकै पछै कळा री कांई जरूरत पड़ी। इण सवाल रौ पडुत्तर दियां पे'ली आपांनै मांनव-जीवण अर कळा दोनां पर पूरो विचार करणौ चाहिजै।

कोई मिनख चालै-फिरै, स्वासा लै, कुटम-कबीला री पेट भराई करै अर माथौ घालण नै एकाद टापरौ ऊभौ करदै तो कांई उणरौ मिनख जमारौ सफळ व्हैग्यौ? कांई मानखा री ज़िंदगी रो माप-तोल ओ इज है? इन्सांन रै जोवण रो दारो-मदार इण बाता माथै इज है? ना, मांनखा री ज़िंदगी रो ओ सही माप तोल नी है, ओ असली दारोमदार नी है। दूजी जीवाजूण रै गळाई उमर रा दिन ओछा करणा अर अघ-बळिया छाणा री पांण विकार अर वासनावा रो धूओ छोड़तां थकां सौ बरस जीवतौ रैवणौ ई धूड़ समान है। उण जीवण री कोई कीमत नी है। एक नीतिकार कह्यौ है :—

'काकोऽपि जीवति चिरं च बलिं च भुङ्क्ते'

कागलौ लांबी उमर भोगवै अर बळि री चीजां खाय नै आपरौ पेट भरै।

जूंण तो कागलां, कुत्तां, गिरजड़ां अर मिनकियां नै ई मिळी है। वांनै ई पोता रो जीव उतरो इज व्हालौ है जितरो

व मिनख नै आपरो जीव व्हालो है। मिनख री गळाई वानै ई आपरै पेट रो खाडो भरण खातर सगळा पडपच करणा पडै। कुत्ता कागला आपरो भग सोजण न अठी उठी फिरता रैव अर देखता रैव के कठैई ऍंठो चूठो पड्यो है के नी ? चील गिरजडा आभ में भमता थका देखता रैव के कठई मरयोडा ढोर डागर पड्या है के नी ? दत रागस दूजा री जिंदगी बरबाद करन, पार को लोही चूसन जूण पूरी कर। इसा जीवण री काई कीमत है ? मानखा री जिंदगी अर इण जिनावरा री जिंदगी म आकास-पताळ रो फरक है।

मानव जीवण काई है ? इण सवाल न भारत रा विद्वाना पूरी तर सू ऐरण पर चढाय न परख्यो है। मानव-जीवण री व्यारया करता एक आचारज कह्यो है —

किं जीवन ? दोष विवर्जित यत'

साचो मानखा जीवण काई है ? इणर पडुत्तर में उणा खाणो पीणो, चलणो फिरणो, स्वासा लेवणी के जीवतो रवणो इज नी है पण जीवण नै दोखा अर विकारा सू आघो राखणो इज असलो जीवण है। उण मिनख रो जीवण इज साचो जीवण है जो नाहर री दाई निडरता सू शूजतो थको अन्याय, अत्याचार अर भ्रस्टाचार सू टक्कर लेवतो थको हाथी री दाई मस्ती मे भूमतो थको चाल अर दुख, गरीबी, कळेस, पाप न हराय न नचा सू जीव।

इण भात जीवण रो अय हुओ विकारा अर वासनावा सू जूभणो। एक पलक ताई जीवणो पण जळजळाहट करतोडा

नखतर री दाई जीवणी रोसणी अर सत्कर्म करतां थकां जीवणी इज वाजब है। भारत रा विद्वांनां कह्यौ है :—

'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः'

हे इमरत पूतां, थांरौ जीवण फगत जीवाजूणां मे भटकण खातर के पेट भराई खातर नी हुवौ है। थे सत्कर्म करता थका सौ वरस ताईं जीवण री मसा राखौ। खोटी वाता खातर एक पलक ई जीवता मत रहौ।

जीवण कांई है ? इण वावत एक जिग्यासु नै पडुत्तर देवतां महात्मा टॉलस्टाय एक कथा सुणाई—'एकर एक आदमी वन मे हो'यर कठैई जावै हो के अचाणचक एक जंगळी हाथी उण पर हमलौ कियौ। वचाव रो कोई उपाय नी देख'र वो मारग रा एक कुआ मे पड़ग्यौ। कुआ रै बीच मे वड़ रो एक मोटो दरखत हो। उण आदमी उण वड़ री एक पतळी-सीक डाळी पकड़ ली। थोडी जेज मे उण री निजर कुआ कांनी कोई बचाव देखण खातर नीचै कानी पूगी तो देख्यौ के पांणी मे एक मगरमच्छ मूंडो फाड़्यां बैठ्यौ है। वो सांपरतीक काळ उणनै उडीकै हो। उणे घवराय नै ऊपर कानी देख्यौ तो माखियां रो मद निजर आयौ, जिकरण मे सू टपो-टपो करनै मद नीचै पड़ै। मद रा मीठा स्वाद आगै वौ सगळा डर भूलग्यौ अर वै मद रा टीपा चाटण लाग्यौ। पण ओ कांई ? उणै अचूभा सू देख्यौ के जिण डाळी नै पकड़'र वो लटक्योड़ौ हो उरण नै एक सफेद अर एक काळौ ऊंदरौ काटै हो। उण जात्री रो भय खूब बढ़ग्यौ।'

जिग्यासु री मूंडो देख'र टॉलस्टॉय—'नी समझ्यो यू ?'

वो हाथी काळ हो, मगरमच्छ काळ री भाई जम हो, मद जीवण रो रस हो अर काळा धोळा ऊंदरा दिन अर रात हा। इण सगळा पड़पचा म रवता थका, सगळी अड़चणा सू जूझता थका जीवण बितावणो श्रो इज मानव जीवण है।

जैन साहित म पण इणीज भात की एक रूपात्मक कहाणी 'मधु बिंदु' र नाम सू प्रसिद्ध है अर बौद्ध साहित मे 'अवदान' रै नाम सू। जच कोई ह्वो पण जीवण र खातर सावधान होय नै चालणो जरूरी है।

मानख ठोस ढग सू जीवण खातर कळा रो पल्लो पकड्यो। कळा बिना जीवण, जीवण नी है। कळा मानखा नै आगे बढावण वाळी है, मानखा र विकास री एक अटकळ है, जिदगी री एक स्वास सरीकी है, दूजा सब्दा म मानखा रा जीवण में सुद्धता बढावण री एक सुदर मारग है।

कळा री एक सही परिभासा आज दिन ताई नी व्है सकी है, तामपण कळा जीवण में जरूरी है, इण बात माथै सगळा एक सुर सू मजूर कर है। यू तो कळा रो खेतर अथाग है, उण न कोई साधारण अरथ में बांध्यो नी जा सक। कळा सब्द रो इण दिना इसो प्रचार हुवो है के हरेक चीज कळा बणगी है। भाजी पकावणी, मसाला रा नमूना बणावणा, जूता, पर मसीदो काढणो, बूट पालिस करणो, पीतळ रा बरतना पर नाखासी रो काम करणो, अगवार म व्यग चित्र बणावणा, मेल चिणणा या मांस चिराणा सब कळाया मानी जाव।

कैंवण रो मतळब ओ के जो कोई चीजजिण नै दाय आय जावै अर उणसू आप रो मतळब निकळै उणनै कळा रो नांम दे दियौ जावै। अठातांई के चोरी करणी अर खीसा कापणा ई कळा मानी जावै। काळौ बजार करणौ, मिनखां नैं ठगण रा नवा नवा ढंग काढणा, कोई चीज री थोथी तारीफां करणी ई कळा गिणीजै। ठेट सू गावणौ तो कळा हो इज पण अबै तो हसणौ अर रोवणौ ई कळा मांनो जावै। मतळब ओ के भासा में जितरा क्रिया पद व्है वा सगळां रै लारै कळा रो पूछड़ौ लगावण री फैसन बणगी है। इणसूं साधारण मिनख तो घपला मे पड़ जावै के दरअसल मे कळा कांई है। आथमणा कळा रा पारखिया यूनांनी सभ्यता री सरूआत सू लगाय नै आज दिन तांई 'कळा री परख' पर घणौ ई लिख्यो है। यूनांनी आचारज अफलातून अर वांरा चेला अरस्तू सू लगाय नै आज रा जुग मे केंट, शेलिंग, हेगेल, सोपेनहार, बालटेयर, हर्बर्ट, स्पेंसर अर जारस्किन कळा रा निराई पारखी व्हेग्या है। ज्यां क्रिस्टोफीन नाम रा प्रसिद्ध उपन्यास री भूमिका लिखतां रोम्यांरोलां जिदगी बाबत आपरा विचार लिख्या है। वां कह्यौ है–सजम वाळौ, मरियादा वाळौ अर नियंत्रण वाळौ जीवण कळा है। पाणिनी री व्याकरण रै माफक क्लृप्त धातु सू कळा सब्द बण्यौ है, जिणरौ प्रमांण है कल्पना करणी, रचना करणी। क्षेमराज इण सिव सूत्र विमरसिणी में कळा रौ अरथ लिख्यौ है:–"कलयति स्वरूप आवेशयति, वस्तूनि वा तत्र तत्र प्रमातरि सा कला" कैंवतां कळा आपरा नवा नवा रूप परगट किया करै।

संसार में कोई पण चीज न फूटरी है अर न कडोपी। दोनू बाता अथवा भाव देखण वाळा रै रस अनुभव माथै कायम होवै। हरेक चीज न न्यारी न्यारी निजरा स देखण मू न्यारा न्यारा ढग री दीस। कोई रूपाळी लुगाई री लोथ पडी व्है तो उण न कामी आदमी खोटी निजर सू देखला, उणरी भाई अथवा बेटो, वन अर मा र रूप में देखला, कोई साधु महात्मा उणन जामण रैं रूप म देखला। अर गरजडा, कागला, कुनरा उणन खावण री निजर सू देखला, इण भात निजर भेद र कारण एक इज चीज एक रैं वास्त फूटरी ह तो दूजा र वास्तै कडोपी ह। इण वास्ते जीवण री कळाकार हरेक चीज में सत अर फूटरापो देखणो चावै। दरअसल मे कळा आत्मा अर हिरदा मू सबध राखण वाळी चीज है। एक चितारो रग अर कूची री मदद सू कागद अथवा भीत पर इसो रूपाळो चितराम बणाव वो चितराम बोलण सो लाग जाव, तो उणमें वा बोलण वाळी चीज चितारै रा आत्मिक भाव ह। एक मूरत बणावण वाळो आपरी तीखी छीणी अर हथोडा री पाण एक अणगड अर बेडोळ भाठा नै घड न एक इसी ओपनी मूरत बणाय दे के उण म कळाकार रा भाव जीवता परतख दीसण लाग जाव। एक गवयो ताल, ल अर कठ मू वीणा पर इसो गाव के उण री अदरणो रस सापरतीक हाजर व्है जाव। एक कुम्हार एक माटी रा लूदा सू फूटरा सू फूटरो प्यालो, कुजो, घडो के मटकी जच जिको चीज बणाय सक। कळा एक कानो जठ फूटरी चीज नै फूटरा ढग सू हाजर कर, उणोज भात एक

कडोपी चीज नै पण इसा चोखा ढग सूं हाजर करै के वा कडोपी नी रैय सकै ।

इण सगळी वाता पर विचार करणै सूं नतीजौ श्रो निकळै के जीवण रै अंदरूणी फूटरापा, आत्मिक फूटरापा, समाज रा सत अर सिव नैं भली भात बतावण वाळी चीज रो नांम इज कळा है ।

कळा रो काम मांनखा रा जीवण नै खराब करणौ के अणगढ राखणौ नी है पण उण नै ढगसर राखणौ है । भोग-विळास रो चीजा रै वास्तै कळा सब्द रो उपयोग करणौ कळा री मजाक उडावणौ है । श्रो कळा रो विगड़योड़ौ रूप है, कळा री नक्कल है, असली कळा नी है । आजकाल सिनेमा रैं छापा रा चितारा, विळास भावनां खातर नागी मूरतां वणावण वाळा सिलावट, लिछमी-पतिया नैं रीझावण वाळी पातरियां, रेडियो अर सिनेमा स्टुडियो मे पैसा पैसा खातर गावण वाळा सगीतकार अर सूगली राजनीति राणी रा दलाल कवि, ऐ सगळा कळा रा दुसमण है । इसा नांजोगा हाथां मे पड़'र कळा री घणी बदनांमी हुई है । कळा चांदी रा टुकडां साटै मोल नी मिळै । असली कळा रो पारखी कळाकार पोता री कळा सू समाज नै सत रो, सिद्धांत रो, कल्यांण रो अनुभव करावै । वो पोता रा फरज सू टळ नै थोथो कीरत नी चावै ।

भारत री संस्कृति रा आगीवाणां कळा रो धे' सुद्ध अर सूक्ष्म सत नै परगट करणौ बतायौ है । दरअसल मे कळा सू

मानखा जूण मे आणद रो अनुभव व्है । कोई पण चीज म आणद उण वखत इज आव जद के उण चीज सू कोई ग्यान मिळ । कोई न कोई सत परगट व्है, उण चीज सू निस्ठा पदा व्है अर ऐ बाता कळा सू इज व्है सकै । इण कारण भारत रा रिसो मुनिया कह्यो है—

> विश्रान्तिर्यस्य सयोगे सा कला न कला मता ।
> लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला ॥

जिकण रा सजोग सू मानवा जीवण मे थाकलो मे आळस आव, जीवण थिर व्है जाव अर विचारा री धारा रुक जाव, वा कळा नी है, कळा री थोथी नवकल है । जिकण बात सू आत्मा परम आणद म लीन व्है जाव, वा इज दरअसल मे कळा है ।

आथमणा विद्वानां आज कळा र बारा में एक नवी आवाज उठावणी सर करी है, "कळा कळा रै वास्त" (Art for arts sake) स्यात कळा रो दुरपयोग होवतो देखन इअ उणा यू कैवणो सरु कियो है । पण भारत रा विद्वाना तो सरूपात सू इज सत नै वतावण वाळी चीज न इज कळा मानी ह । जठ कळा रो उपयोग स्वारथ-साधना, विलासिता अर धन रै खातर कियो जाव, उठ सत खतम व्है जावै । उठ कोई पण सत रो जनम नीं व्है सव । इण वास्त अत म नतीजो ओ इज निकळ मे कळा रो जनम जद अदम्णी रूप में आत्मा सू व्है तो उणरो उपयोग सत र वास्त, सिद्धात रैं वास्त या कल्याण रैं वास्तै होवणो चाहिज । काळ में वारलो फूटरापो खास चीज

नी है। जठै सत अर सिव मौजूद व्है उठै फूटरापौ तो कुदरती रूप सूं आय जावै ।

एक लुगाई सिणगार वास्तै कळा रो उपयोग करै, वा वारा सू तो घणी ई फूटरी लागै पण जे उणमे अंदरूणी फूटरापौ नी है तो उठै कळा रो नाम-निसांण ई नी है। वा लुगाई जो परायां सागै चोखो वेवार नी राखै, टावरां अर घर वाळां सागै करड़-भरड़ करै, थोथो घमड राखै तो पछै उठै कळा कठै ? उणरी कळा न सत वास्तै है अर न सिव वास्तै। आ असली कळा है इज नी ।

भारत री सस्कृति रा आधार-थंभ भरथरी कह्यौ है—

साहित्य - संगीत - कला विहीनः ।
साक्षात् पशु पुच्छविषाणहीनः ॥

जिकण जीवण मे साहित री साधना, लोक-हितकारी सत-प्रधांन नी है, सगीत री पूजा कैवतां सिवपणा मे भरोसो नी है अर कळा री जठै साधना नी है वो जीवण जिनावरा रो जीवण है, मिनख रो जीवण नी है, भलांई चेहरा मोहरा सू वो मिनख जिसो दीसतौ व्हौ पण असल में वो विना सीग-पूछ रो जिनावर इज है ।

हा, तो मानखा जूण मे सत, सिव अर सुंदर इण तीन चीजां रो मेळ कळा वाजै। इसी कळा मानखा नै जिनावर-पणा सू उठाय नै मिनखपणा कांनी ले जावै। कळा रो कांम मिनख नै जिनावरपणा सू उठाय नै धीरै धीरै मांनव तत्त्व, देव तत्त्व अर छेवट भगवत्तत्व कांनी ले जावणो है। दाखला रै

रूप मे माटी में कोई खास फूटरापो नी व्है, पण उणमाटी न इज लेयन कुम्हार दुनिया री भलाई रै वास्तै आपरा खामची हाथा सू घडा रो रूप देयदे तो वा माटी पण अणूती काम री बण जावै ।

इणीज भात आटो अर पाणी एक चतर लुगाई रै हाथ में पड तो वा आपरा कडूवा वास्तै फूटरा फलका पोवै अर वो इज आटो पाणी कोई फूडभधरा र हाथ म पडै तो वा धान रो घूड कर नाख । चतर आपरी कळा सू धान न सुधार लेवै अर फूड-भधरा गीलो काठो कर नै अथवा फीको खारो कर न भोजन नै बिगाड नाख, बळियो-जळियो क काचो पाको कर न घूड कर नाखै । उण हालत म उण मे कळा रो लवलेस ई नी व्है । कारण के न तो उण म सत व्है, न सिव व्है अर सुदरता रो काम इज काई । कोई चीज रो फगत फूटरापो देख न उठ कळा रो अनुमान कर लियो जाव तो आ धोखो,है । कुदरत किंपाक नाम रो फळ बणायो है, उण में फूटरापो खूब है, अर सुगध पण है, छता पण उण मे सत रो अस नी है, कारण के उण न खावण सू मिनख मर जावै । इणीज भात जीवण री हरेक क्रिया र बारा मे समझणो चाहिज । सत अर सिव रो कसौटी माथ परख न इज कळा रो अनुमान लगावणो चाहिज । एक लेखक घणी ओपती कहाणी लिखी है । उण कथा रो कथानक घणो चोखो है, वा मनोरजक पण है, छतापण जे वा कथा मानखा म विळास वानी ले जाव, उण नै पढ'र मानखो नीचो गिर तो कैवणो चाहिज के उण कथा मे सत अर सिव नो है, सुदर भल ई व्हो । पण जिकण काव्य, नाटक, उपयास,

सिनेमा, चित्र, सगीत, वाजा-गाजा के मूरत निरमांण सत अर सिव री निजर सू व्है अर उण मे सुंदरता री कमी व्है तांम पण उणनै कळा कैय सका हां। पण जठै फगत फूटरापा नै निजरां मे राख नै इज कोई चीज बणाई गई व्है उण सू दुनियां री कोई भलाई नी व्हैती व्है अर उल्टो मांनखा नै खोटो रस्तो मिळतौ व्है, वो मिनख सूं जिनावर अर जिनावर सूं रागस वणतौ व्है तो वा असली कळा नी है। पेट रा पड़पंच मे पडनै कोई पण मिनख कळा नै तोड़-मरोड नै भूंडा तरीका सू दुनियां रै सांमै राख सकै, इणसूं वौ असली कळाकार रो पद नी पाय सकै।

ओ इज कारण है के आदि तीरथंकर भगवांन रिखबदेव पण उण जमाना रा मानखा नै ई कळा सिखाई अर वां उणनै जिनावरपणा सू मिनखपणा कांनी लिजावण वाळी ही। उणां उण कळावां रो उपयोग सत रै वास्तै, सिव रै वास्तै अर मानखा जूण री भलाई रै वास्तै बतायौ हो। जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र इण बात रो साक्षी है —

'पयाहियाए उवदिसई'

भगवांन रिखबदेव प्रजा री भलाई रै वास्तै, सत ओर सिव रै वास्तै कळावा रो उपदेस दीनौ हो। उणा जिको ई कळावां सिखाई, वारै लारै मिनखपणौ लावण रो सदेसो छिप्यो-ड़ो हो इण वास्तै इज उण जुग रा मिनखां नै वे कळावां सिखाय नै वांरो उद्देस्य पण सागै सागै बताय दियौ। सार ओ निकळ्यौ कै कळा रो जिकौ रूप सत रै वास्तै, सेवा रै वास्तै, कोई सिद्धांत अथवा धे' गै वास्तै आंपणै सनमुख मगळकारी

वण नै आवै, वा इज कळा जीवण र वास्तै आणदकारी ह, असली फूटरापा न देवण वाळी ह । उण कळावा म जीवण रो मोटो सत छिप्योडो हो । कळा रो जिको रूप मानखा री रागसो बिरतिया न नी दबाय सक, मानखा रा थोथा अहभाव न नी मिटाय सक, ससार री समरसता न परखण री दिव्य द्रिस्टी नी देय सकै, जीवण मे कुरूपता पदा कर, वा कळा नी, कळा री प्रेत छाया व्है सक है। इण वास्तै कळा री परीक्षा रो सब सू फूटरो मापक यत्र सू पदा होवण वाळो सत प्रभाव री परपरा अर जीवण रो हित परगट होवणो है ।

इण भात आ बात साफ व्हैगी के जीवण काई है अर कळा काई है ? सागै साग दो'या रो आपसी सबध काई है ? असली कळा काई है अर नकली कळा काई है ? कळा रो धे' काई व्हैणो चाहिजे ? म्हू समझू कै इतरी समझ्या पछ मानव जीवण री कळा नै आप सरलता सू समझ सको हो ।

हरेक आदमी जीवतो रैवणो चाव, पण जीवतो रवणो ई तो एक कळा है । जीवतो रवण रो मतळब किणी भात गळत सळत ढग सू पोता न कायम राखणो इज जीवणो नी है । यू तो कुत्ता मिन्नी, कीडी मकोडी, वाघ चीतरा अर दूजा जीव जिनावर सगळाई जीवता रव पण जे आप मिनख बणन जीवणो चावो तो आपन जीण री कळा जाणणी पडला । यू जीवण न ता सगळी दुनिया जीवै पण जीवण री कळा कोई बिरला मिनख इज जाणै । जिणन ढग सू जीवणो आयग्यो वो पोतै तो आणद सू जीव इज, पण दूजा न ई एक रोसणी बताय न

मारग दिखाय दै, दूजां रै वास्तै जीवण रो एक नमूनो छोड जावै। जे कोई रै पग मे कांटो भाग जावै, आंख मे धूड रो कण पड़ जावै, पेरण रा कपड़ां मे या डाढ़-दांत में कांई फंस जावै तो वो सहन नी व्है सकै, इणीज भांत हरेक मिनख नै विना कळा रो जीवण सहन नी व्हैणो चाहिजै। जिको मिनख जीवण री कळा जांण लेवै, वो आपरी जिंदगी मे छोटी सूं छोटी वात मे पूरी सावधांनी वरतै, वो आपरो हरेक कांम सत रै वास्तै, सेवा रै वास्तै करै। वो दूजां रै जीवण रो ध्यांन राखतो थको, दूजां नै जीवाड़तो थको जीवै। वो कोई इसो कांम नी करै जिणसूं दूजां नै नुकसान पूगै अथवा दूजा नै दुख व्है।

यूं तो चालणो सब जांणै, टाबरपणा सूं ई चालणो आय जावै, इण वास्तै कोई ट्रेनिंग नी लेवणी पड़ै। इणीज भांत खावणो-पीवणो, ऊठणो-वैठणो, सोवणो-जागणो, बोलणो-चालणो हरेक मिनख कर सकै अर करै इज है। खावण-पीवण रो काम तो जीव-जिनावर ई करै। पण जिको मिनख जीवणो जाणै अर जिको जीवणो नी जाणै, वारै कांमां मे घणो फरक रैवै।

एक आदमी जीवण रै वास्तै खावै अर दूजो खावण रै वास्तै जीवतो रैवै। एक सरदी-गरमी रै बचाव सारूं अर लाज ढाकण नै कपडा पै'रै अर दूजो मौज सौक अर फैसन रै वास्तै कपड़ा पै'रै। एक आदमी पैसा कमावण नै अर पोता री प्रतिस्ठा बढावण नै स्वारथ खातर आछो बोलै अर आछो

लिख, पण दूजो निस्वारथ भाव सू सत बोल, सत लिखै। एक आदमी दूजा न सतावण सारू, मारण पीटण सारू, लूटण-खसोटण सारू, अन्याय अनीति करण सारू, जोर जमावण सारू चालै तो दूजो न्याय सू कमायोडी जीविका सारू, ससार री भलाई सारू, सेवा सारू, आत्म-साधना सारू चाल। एक आदमी इण वास्तै जागतो रैव के दूजा नै तग करै, पापाचार करै, ससार मे मारकाट मचावै, पण दूजो इण वास्तै जागतो रवै के आपरै करतव्य रो पालण कर, जगत रो कल्याण कर। इणीज भात एक आदमी रो सोवणो जागणो, ऊठणो-बैठणो तो खराब वे' खातर व्है अर दूजो आदमी ऐ सगळी वाता आछा कामा वास्तै कर। काई इण दोनू तरै रा आदमिया र कामा में कोई फरक नी है ? जद फरक है तो ओ कवणो पडला के जिको आदमी जीवण री कळा जाणे ह उणरो हरेक काम ढग सर अर ससार री भलाई वास्त व्हला पण जिको जीवण री कळा नी जाण ह, उणरो हरेक काम गळत व्हला। एक साधक जीवण रा मोटा कळाकार म० महावीर नै पूछ्यो—

'कह चरे, कह चिट्ठे, कहमासे, कह सए ?
कह भुजतो भासतो, पावकम्म न बधई ?'

हे भगवन् ! कळामय जीवण वितावण वाळा न किण भात जीवणो चाहिजै, कीकर चालणो, बठणो, ऊठणो, खावणो, पीवणो अर बोलणो चालणो चाहिजै, जिणसू उणरो जीवण री कळा मे बाधक पाप करम नी बध सक ? म० महावीर मरम रा नप्या-तुल्या सब्दा में पडुत्तर दियो—

जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे, जयं सए ।
जयं भुजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधई ।

हे जीवण कळा रा साधक ! थनै विवेक सूं चालणौ चाहिजै, जतन सूं ऊभौ होवणौ, बैठणौ, सोवणौ, खावणौ, पीवणौ अर बोलणौ चाहिजै जिणसूं जीवण री कळा मे बाधक पाप करम नी होय सकै ।

ओ है जीवण री कळा रो दरसण। जे मिनख पोता रा जीवण में इण भांत विवेक सूं सोचै, पोता री सत्यं, सिवं, सुदरं री चोखी भावना राखै तो जीवण कळा पूरण होवतां जेज नी लागै ।

अरजुण जिस्यै जिग्यासू पण करमजोगी क्रिसण नै जीवण कळा रै मरम नै जाणण वाळा स्थितप्रज्ञ रै बारा में पूछ्यो है—

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा, समाधिस्थस्य केशव
स्थितधी. किं प्रभाषेत, किमासीत व्रजेत किम् ?

हे जीवण कळा रा कोविद स्री क्रिस्ण ! जीवण कळा रा मरम नै जांणणिया स्थितप्रज्ञ री कांई पैं'चांण है ? वो थिर-बुद्धि कियां बोलै ? कियां बैठै अर कियां चालै ?

इण बात रो पड़ुत्तर स्री क्रिस्ण आपरी अमोलक वांणी में विस्तार सू अठारै स्लोकां मे दियौ है। साचांणी जीवण कळा रो मरम जांणणियौ बणण रै वास्तै उण सगळा स्लोकां रो मनन कर नै उणां मे बताया मारग माथै चालणै पर जीणै री कळा मिळ जावै। जीवण री कळा नै जांणणियौ जद जीवण

री कोई पण क्रिया न करेला तो वो पोता रैं आछली पाछली दुनिया न पण देखेला। वो सोचला के म्हारी इण क्रियावा अथवा हरक्ता सू कोई प्राणी न दुख तो नी व्हेला। कोई री जिंदगी मे अड़चन तो नी आवला ?

एक मोटर रो ड्राइवर है, वो होस राख नैं मोटर चलाव, वो डावो जीमणो देखन पूरा ध्यान सू मोटर चलाव। वा पूरी निग राख के कोई किचरीज नी जाय, कठैई टक्कर नी लाग जाय, इण वास्त जठ कठई खतरो देखै, ब्रेक लगाय दे, हारन बजाय न दूजा न सावधान करदै जिणसू कोई झपट में नी आय जाव। इण भात मोटर चलावण वाळो सही सलामत ठिकाण पूग जाया करैं। इणसू उणनैं ई आणद मिळ अर मोटर रा मालिक नैं पण।

ओ एक दाखलो है। इणीज भात जिंदगी पण एक गाडी है, जो फगत गरेज म राखण वास्त इज नी है, उणन हिलावणो डुलावणो पड, इण बिना काम नी सरै। जीवण रूपी गाडी रा ड्राइवर आपा खुद हा। जे आपा आपणी जीवण रूपी गाडी न होस राख नै खडा, डावा जीमणा देखता थका, जे कोई जिंदगिया बीच में आव तो वान कुचळा नी, बचावण री कोसिस करा, वाणी अर लेखन रूपी हॉरन बजाय न वान सावधान करा। करई तेज चलावा तो करई बरेक लगावा अर इण भात जे कोई चालक सावचेती सू चाले तो बरोबर आराम सू ठिकाण पूग। अर साग साग पोता रा परिवार, समाज अर जाति वाळा नैं ई पूगाय देव।

पण कोई ड्राइवर इसो व्है के जिणै नसो कर लियौ है अर धत होय नै मोटर चलावै। वो न डावी कांनी देखै अर न जीमणी कांनी। अधाधूंध चालतौ वो आ नी देखै के कोई मर जावैला अथवा कोई दुरघटना व्है जावैला। उणे दूजां री जिंदगी री कोई परवा नी है, वो तो एक्सीडेंट करतौ थकौ ठिकांणै पूगण री फुरती राखै। पण इसा नकांमा ड्राइवर नै बीच मे इज पकड़ लियौ जावै, उणरौ लाइसेंस जपत व्है जावै अर जरीबांनो होवै सो न्यारौ। वो पाछौ जिंदगी भर मोटर चलावण रो परवांणो नी पाय सकै।

इणीज भांत जद जीवण कळा सूं अजांण अडांणी नै जीवण रूपी गाडी मिळ जावै, तो वो दूजां री जिंदगियां नै वाढ़तौ थकौ, पोतै दुख देखतौ थकौ अर गाडी रो हजीरौ करतौ थकौ ठिकांणै पूगण री कोसिस करै। मोहमाया रूपी दारू रा नसा में धत वो दूजां री जिंदगी नै फोतका बरोबर ई नी लेखवै। इसा आदमी नै पाप करम रूपी सिपाही पकड़ लेवै। उणरी मांनव जीवण रूपी गाडी चलावण रो अधिकार खोस लियौ जावै यांनी उणनै कई भवा तांई पाछौ मिनख जमारौ नी मिळै। सजा उणनै मिळ जावै अर वो ठिकांणैसर पूग पण नीं सकै।

– जीवण री कळा रा जांणकार अर अजांण, इण दोनां रै जीवण मे कितरौ फरक व्है, वो इण दाखला सूं साफ व्हैग्यौ। जीवण री कळा मे बारला फूटरापा री कोई कीमत नी है, उठै तो अंदरूणी फूटरापा नै मांन है। सत अर सिव ऐ उणां रा

दोयू फेफड़ा है, जिण सू वो सास लेव । जठ जीवण में सत अर सिव नी, उठ कोरी कळा प्राणहीणा पींजरा र समान है ।

एक राजा रै घन माल री चरचा देस परदेस मे मानखा रै जबान पर ही । एकर एक मोटा महात्मा भीख मागता र राजमहल म पधारया । राजा वान भगती-भाव सू आहार दीनो । महात्मा राजकुळ रा लागा न उपदेस देय न जावण लाग्या तो राजा अरज करी के थें पधार नें खजानो देखल, कारण वें साधु महात्मावा र आसीस सू इज इसा खजानो बण सक्यो है । महात्मा राजा रो खजानो देखनै राजी ई हुया अर चिंता म पण पड्या । महात्मा राजा न पूछ्यो–"राजन, सबसू ज्यादा कीमती भाठो इणां में कुणसो है, बतावो दसू ?" राजा एक मुट्ठी भरीज जितरो चमचमाट करतोड़ो हीरो बतायो । महात्मा थोड़ा मुळक्या और बोल्या–"महाराज, म्हैं इणसू ई मोटा मोटा भाठा आपर राज म देख्या है, आपनें वा री ठा ई नी है ।" राजा लालच में आय न वान ैखण न चाल पड्यो । महात्मा वान ले जाय न एक गरीब डोकरी र झूपड़ा में ऊभा रास्या अर डोकरी री घरटी रा पुड़िया बतावता कह्यो–"थार राज मे ऐ सबसू कीमती भाठा है, प्रजा नें कह्यो सो रोज इणां रा दरसण करबो करै ।" राजा चुपचाप ऊभो, काई समझ अर काई जवाब दे । इतरै तो महात्मा मीठी वाणी सू बोल्या–"राजा, इण डोकरी र जीवण रो साधन ऐ घरटी रा दोनू पुड़िया है, इणा वा दूजां रो अनाज पीस अर पोता र प्राणा री रक्षा कर । आपरा हीरा पन्ना

काई कोई रा प्रांण बचावै ? वां सू कोई आमदानी होवै ? उल्टी वां री रक्षा वास्तै खरचो करणो पड़ै। भाठो वो इज कीमती गिणीजै जिको के काम में आवै, जिकण सूं कोई रो भलो व्है। कोरो फूटरापो अर थोथो सांन काई कांम रो ?" राजा रो विवेक जागग्यो।

इण भात जठै फगत बारलो फूटरापो इज व्है, सत अर सिव नी व्है, सेवा-भावना अर सिद्धांत रक्षा नी व्है, उठै जीवण बारला फूटरापा सूं आघो होवता थकां ई कळा-पूरण नी मांन्यो जा सकै। कळा-पूरण जीवण तो वो इज है जठै सत अर सिव खास व्है, मांनखा रै भलाई रो सवाल सांमनै चमकतो व्है, पछै भलाई वो सरीर कड़ोपो व्है के वेडोळ व्है।

राजा जनक री राज सभा मे अस्टावक्रजी आपरी दादी मा नै छुडावण नै अर राजा रा गूढ़ सवालां रो पडुत्तर देवण नै पूग्या। वै ज्यूंई सभा मे पूग्या, सगळा वांनै देख नै हसण लाग्या। कारण के अस्टावक्रजी कड़ोपा हा, वेडोळ हा, वारै पड मे आठ वाक हा। वै पोतै ई हसण लाग्या। विद्वानां पूछ्यो-"आप क्यूं हस्या ?" उणा मुळक नै जवाब दियो "म्हू म्हारी भूल पर हस्यो हूं। म्हारो ख्याल हो के राजा जनक री सभा में मोटा २ ग्यांनी विद्वांन व्हैला। पण अठै आयनै म्हनै म्हारी भूल समझ मे आई। कारण के अठै आयनै म्हैं देख्यो के अठै तो चामड़ा रो रूपरग देख्यो जावै, जांणै मोचिया री सभा जुड़ी है, अठै आत्मा रो फूटरापो नी देख्यो। जावै जीवण री

कळा रो मापदंड आपर अठ फगत वारला फूटरापा सू आवयो जावे।"

साचाणी अस्टावक्र मुनि री वाणी में भारत री सस्कृति री आत्मा परतख बोल री' है। वे जीवण री कळा रा असली पारखी हा। जीवण र अदरूणी फूटरापा रो उपयोग वे जोग म करणिया हा, भोग मे नी।

जीवण री कळा सू अजाण मिनख रै जीवण मे भोग व्है, जोग नी, स्वारथ व्है, सजम नी। उणरो जीवण नीरस व्है, सरस नी, उणरा जीवण मे मौज सौक री विरतो व्है, साचो आणद नी। एक दाखला सू आ बात साफ व्है जावैला।

मिस्टर पीटरसन नाम रो विद्वान लिख के म्हनै थोडा दिना पली एक इसो आदमी मिळयो जिको उमर मे तो चाळीस बरस रो हो पण चेहरा सू साठ बरस रो लागतो। कारण के उण दुनिया री खूब मौज सौक लूटी ही। उण आपरी जिंदगी में सगळी चीजा रो रस चूस्यो हो पण बदळा में काई दियो नी हो। सजम तो उण मे नाम रो ई नी हो। वो विद्वान हो, मोटो वेपारी हो, घणा देस परदेस फिरयो हो अर कई घाटा रो पाणी पी चुक्यो हो। चाळीस बरस री उमर में इज उणरी आ हालत व्हैगी ही के अब उणर जीवण मे कोई रस नी रयो हो। उणरी जिंदगी कडवी, रूखी अर जहरीली वणगी ही। चाळीस बरस री उमर में इज उणरा बाळ चादी व्है जिसा सफेद व्हैग्या हा, हाला कि कुदरत सू उणन आछो सरीर मिळयो हो पण बिना सार-सभाळ आ हालत

व्हैगी ही । बुढापा रा सगळा लक्षण उणरै सरीर पर दीखण लागग्या हा । उणरा देसाटन अर ग्यांन सू जीवण मे कोई फायदो नी हुवौ हो । उणरो मन इतरो स्वारथी व्हैग्यौ हो के वो रात दिन आ इज सोच्या करतौ के आज किसी चीज खाई ? किसो मादक पदारथ पीधौ ? कितरा घटा सूतौ ? क्लब मे किसो खेल खेल्यौ । इणरै अलावा दूजो कोई पण विचार उणरै मन में नी घुस सकतो हो । इण भांत उणे आपरी कळापूरण जिंदगी ढगसर नी बिताय नै बरबाद कर नांखी ।

जीवण री कळा जिकण मे व्हैला वो बढ़िया चमकीला कपड़ां, गेहणां, भोजनां अर पदारथा नै मांन नी देला । वो उणां मे सू सादगी, सात्विकता, कम खरची वगैरै तत्वां री निजर सू इसी चीजा रो उपयोग करैला के दुनियां री कोई चीज बरबाद नी व्है । कुदरत री दीनोड़ी इद्रियां के सरीर रो कोई पण भाग खराब नी व्है ।

बगाळ रा एक मोटा विद्वान सतीसचंद्र विद्याभूसण री तारीफ सुण नै वारी माता रा दरसण करण नै घणौ आधा सू एक आदमी आयौ । उणरो विचार हो—जिण नारी रतन रै कूख सू इसो हीरौ जलम्यौ है उण देवी रा दरसण कर नै म्हूं पवित्तर व्है जाऊं । पण उणे हाथां मे पीतळ रा कड़ा घाल्यां एक सीधी-सादी लुगाई नै देखी तो वो अचूंभा मे पड़ग्यौ । उणरै मन मे केई विचार दौडण लाग्या के कांई इतरो मोटौ विद्वांन पोता री मा कांनी सूं इतरी बेपरवाही राख सकै ?

काई ऐ सीधा सादा कपडा अर पीतळ रा कडा इण नारी रतन र वास्त अपमान जोगा नी है ? पण वातचीत करण सू उणरी धारणा साफ थोथी निकळी। मा अर वेटा में वडो प्रेम हो। तामपण उण आदमी आपरै मन रो वेहम काढण नै पूछ्यो–"माताजी, आपर सरीर पर साधारण कपडा अर हाथा म पीतळ रा कडा देखन म्हनै वडो अचूभो व्है, काई आ आपर वास्तै, बगाळ र वास्त अर सतीस वावू र वास्तै सरम री बात नी है ?" डोकरी वोली—"वेटा, थारी समझ मे भूल है, म्हूं हीरा-पन्ना अर जडाव रो सिणगार करनै साधारण मानखा रै वास्त ईसका रो कारण वणू तो आ सतीस अर बगाळ र वास्तै कोई गौरव री वात नी है। मानखा रो फूटरापो कोई गेणा-कपडा में नी है पण त्याग में है, दया मे है, सात्विकपण मे है। कळापूरण जीवण बितावण में है। धन आ जाण न खुसी होवणी चाहिजै मै अवार थोडा दिना पैली बगाळ मे भयकर काळ पडघो हो। मानखो अन्न रा दाणा दाणा वास्त तरसण लाग्यो हो। उण वखत सतीस दयाळू वण्यो अर म्हैं म्हारा हाथ सू गरीबां री सहायता कीनी। ओ इज असली गौरव है अर म्हैं समझू के सतीस अर बगाळ रो गौरव पण इणम इज है। कपडा लत्ता अर गेणा-गाठा सू लद नै धन री थोथी मे'मा करणी फिजूल है। सादगी अर सजम सू जीवण बितावणो ऐ इज साचा विद्वान अर कळाकार रा लक्खण है।

ओ है जीवण री कळा रो भेद। जठ जीवण री कळा व्है, उठै भोग माथै वदो लाग जाव, सजम अर विवेक रूपी पवित्र

किनारां रै बीच मे होय नै जीवण रूपी नदी वैवण लाग जावै उठै नियम, व्यवस्था अर उपयोग री त्रिवेणी में सिनांन करण सू जीवण आणंदपूरण अर फुरतीलौ वण जावै।

जीवण रा मोटा कळाकार म० महावीर तो गृहस्तियां रै वास्तै तो इण भांत रो एक इज व्रत वतायौ है जिण सू जीवण सजम अर मरजादा मे रैवतो थको कळापूरण वण जावै। उणरो नांम है–उपभोग परिभोग परिमाण व्रत। इण व्रत मे कोई पण वात पर अथवा वस्तु पर वंधण नी राख्यौ है पण मरजादा मे रैवतां थकां उणरो उपयोग करणौ कह्यौ है। मतळब ओ के उपभोग करण री नी पण उपयोग करण री वात बताई है। उपभोग जद नियम सूं, सजम परवांणै मरजादा मे आय जावै तो वो उपयोग गिणीजै अर उपयोग इज अनगार मुनियां रै वास्तै जीवण री कळा रो खास लक्षण है। जैन विद्वाना जीवण वाळां खास मुद्दो उपयोग बतायौ है–"उवओगो जीवस्स लक्खण" उपयोग जीवण रो लक्षण है उपभोग नी। जठै उपयोग व्है, उठै विवेक वुद्धि सूं जीवण में आवण वाळा साधक-बाधक तत्वां रो निरणै लेवणो पड़ै। विवेक रा राज सूं नाप नै पोता री मरजादावा कायम करणी पड़ै। पोता री जिंदगी पण संजम अर सादगी सूं बितावणी पडै। इणनै इज आपां आज रा जुग मे 'जीवण री कळा' कैवां। जिको इण वात नै समझ ले वो जीवण मे सफळ व्है जावै। पण इणनै पाय वो इज सकं जिणं जीवण नै ठीक तरै सू समझ लियौ है। भारत रै एक मोटै कळाकार दाखलो दीनो है।

एक बूढै आदमी एक मोटयार नै कह्यो—"थन काई ठा, काम किया होव ? म्हू दस बरसा सू सभा रो प्रधान हू, ओह, कितरो ऊडो अनुभव है म्हारो। थारै अनगढ हाथा मे जो सभा रो काम सूप दू तो चार दिना मे सगळो रापटरोळ व्है जाव।"

पाकोडै पीळै पान ऊगतो कूपळ न कह्यो—"म्हू दुनिया रो रास रग देख चुक्यो हू, अब थू अठ आराम सू रै', खूब खिलो अर खेलो। म्हू अबै नीचली हरी घास पर विसराम करूला।"

उठीन वो मोटयार लिलाट मे सळ घाल्या डोकरा नै देख रह्यो है अर अठीन कवळी कूपळ मीठी निजर सू नणा रा प्याला में इमरत रस भर न पीळा पत्ता कानी नीच देख री' ही। बूढा रा सफेद बाळा में स्वासा री सख्या लिख्योडी है। इण दोना में सू जीवण नै ठीक तरै सू पत्त सममयो है अर वो आपरी जीवण कळा में सफळ हुवो है।

ओ इज हाल आज रा समाज मे जवाना अर बूढा रो है। व जीवण न ठीक तरै सू नी समझण र कारण अधारी गळिया मे भटका मार रह्या है। दोयू पोता रो अधिकार पावण री धुन म रव। पोता रो फरज बजावण री गुजाइस दोन्या में नी व्है। इण कारण जीवण रो कळा सू वै आघा रय जाव। हरेक बात में वै मोढ करसा, आपस में यूका फजीती अर कुस्ती करण न तयार व्है जावला, पण सजम अर मरजादा रा पवित्र सूत्रा न भूल जावला। इण कारण इज जिदगी रो

मजो जावतो रैवै। वै जीवै पण लाचारी सू। समै काटणो है इण वास्तै जीवता रैवै। वा रा जीवणा मे कोई रस नी है, कोई फूटरापो नी है, कोई सत नी है।

जैन धरम रा आगीवाणां हरेक वात नै साधना रो रूप दीनो है। उणां कोई पण चीज री सख्या पर जोर नी दे'यर गुणां पर जोर दीनो है। वां री निजर मे quantity (सख्या) इत्तरी कीमत नी राखै जितरी के quality (गुण)। उणां आपरा साधकां ने आ इज वात वताई है। उणां वतायो के चावै छोटी सू छोटी बात अथवा साधना पकड़ो पण उणनै नियम अर विवेक सू पार घालो। भलैई वो कांम थोडी जेज रै वास्तै इज व्है पण उणनै ठीक ढंग सूं करणो। जैन धर्म री पौसध अर सामायिक साधनावां नै ठीक ढंग सूं पालणा नी करणै पर उणमे दोस बतायो गयो है—

पोसहस्स सम्मं अणणूपालणयाए
सामाइयस्स सम्म अणणूपालणयाए
सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणाए

इणीज भात इण साधना मे प्रमारजन अर प्रतिलेखन रो विधांन पण है। उणरै वास्तै वतायो है के जे ऐ क्रियावां सम्यक् ढग सू नी करै तो पण दोस लागै।

जिदगी नै सम्यक ढग सू बितावण वास्तै कोई पण काम खराब नी है। सरत आ है के लारै कोई हित व्है अर विवेक पण व्है।

इगलड रा हाउस ऑफ कामस में घणी वार वडी गरमा-गरम चरचा चाल जावै अर सदस्या रै आपस मे खासी थूका फजीतो व्हे जावै। एकर एक लिछमीपती पोता रा विरोधी नै ललकारता कह्यो—"काई व दिन थू भूलग्यो जद थू म्हारै पिताजी र बूटा पर पालिस किया करतो ? आज थू म्हासू अड रह्यो है ?" विरोधी सदस्य एक गरीब कुटुंब रो होवता थका ई ठेट सू मैंणती, पोता रा फरज न वजावण वाळो अर पगा पर ऊभो होवणियो जीवण कळा रो जाणकार हो। उण मुळकता थका सगळा रै सामन कह्यो—"आपरी कैवणी बिल्कुल सही है, पण काई म्हू पोलिस ठीक ढग सू नी करतो हो ?" कोई पण काम जिणरै लार सत व्है, सेवा भावना व्है, भलो मूडो नी है के छोटो मोटो नी है। कोई पण छोटा मोटा काम न करण में सरम बिल्कुल नीं आवणी चाहिज। उणनै ईमानदारी अर ढग सू पूरो करणो चाहिजै। जे उण काम सू दुनिया री भलाई व्हैती व्हे तो उणमे पूरी दिलचस्पी लेवणी चाहिज, ओ इज मोटो नाम है।

जिण आदमी न पोता रो फरज बजावणो आय जाव वो जीवण री कळा में तुरत हुसियार व्हे जाव। पण जठै जीवण री कळा मे बाधक तत्वा रो विवेक नी व्है, भला भूडा रो ग्यान नीं व्है, जीवण री अवखी घडिया में मिनख भाग छूट तो उठ समझणो मे जीवण कळा नी है। अर जिणन जिंदगी म आवण वाळी अडचना रो ग्यान नी व्है, वो कई चोखा काम करतो थको ई एकाध दोस रै कारण पोता रा जीवण न दुखी बणाय नाख।

एक वैन वडी मैंणती हीं। पण उणमे दो ओगण घणा मोटा हा। एक तो ओ के वा कोई रो थोड़ो-सीक कांम करनै वार वार कैवती फिरती के म्हैं उणरो अमुक कांम कीनो अर दूजो ओ के वा कोई नै सोरो देखती तो उणरो पेट दूखणो आय जावतो। अठा तक जे कोई धणी लुगाई मे गैरो हेत होवतो अर बिमारी सिमारी में लुगाई धणी री खूब सेवा करती तोई उणनै घणो खराब लागतो अर वा निंदा करवो करती। इण वास्तै तन तोड़ मैंणत करणै पर ई उणनै गाळां अर ओळबा खामणा पड़ता। हालत अठा तक बिगड़चोड़ी ही के उणरी इण खराब आदत रै कारण उणरै माता पिता रै ई नाक मे दम हो। खूब मैणती होवता थकांई वा आपरै लखणां सू कोई रै वास्तै भली नी वण सकी। जे उणनै जीणै री कळा रो ग्यान व्है तो वा पोता रा जीवण आणंद-पूरण बणाय सकती ही अर आदर मांन पाय सकती ही।

जिण तरै सूं चंदरमा में ठंडक, फूटरापो अर चादणो व्है पण इतरा गुण होवतां थका ई उणरै मांयलो धब्बो उणरो सगळो फूटरापो मिटाय नाखै, इणीज भांत मांनखा रा जीवण में सगळी वाता होवतां थकां ई केई इसा फालतू कारण, बेढगी बातां अर फिजूल रा पड़पच व्है के जिण सूं उण रो जिंदगी बेकार व्है जावै। भ० महावीर इण फालतू बातां सू बचण वास्तै गृहस्था खातर एक एक व्रत बतायौ है, जिणरो नांम है अनर्थ दड विरमण व्रत। उणमे अपध्यांन, आळस, हिंसाकारक कांम, पाप री प्रेरणा वगैरै जीवण कळा रै मारग मे आडा

श्रावण वाळा वताया है। आज रा जुग में इण व्रत रो खेतर खूव लाबो चोडो व्है सके। उणरो अरथ पण खूव विस्तार सू सोच्यो जा सके है। कोई पण काम नै उत्साह सू नी करणो, ईमानदारी सू नी करणो, फालतू बाता में टेम वरवाद करणो, लोगा रै साबासी री बाट जोवणो, पूरो रस लेय न काम नी करणो, मिनखा र वेवण सू काम वदळवो रवणो। पोता री ताकत न खराव कामा में खरच करणो, कूड बोलणो, मारपीट करणो, जरूरत सू ज्यादा सग्रै करणो, ऐ विरमण व्रत रा दोस जिंदगी में बाधक समभणा चाहिज।

एक पातर खनै रूप, जवानी अर धन हो। वा बीसू जवाना नै नचाय चुकी ही पण उणरै मन में न तो साति ही अर न आणद, वा दुनिया रो सिकार करती पण दुनिया उणरो खुद रो सिकार करती। उणै जीवण री कळा न समभी अर पोता री ताकत अर साधना रो चोखो उपयोग करण रो विचार कियो। पोता रो खराव धधो तो छोड दियो अर आपरा धन सू जात्रुआ वास्त धरमसाळावा वणावणो, कुया खुदावणा अर सादगी सू जीवण रो विचार कियो। केई मध्यम वरग रा परिवार, जिका रा हाथ तग होवता थकाई कोई खन माग नी सक हा, वान चुपचाप मदद करणो सरू करी। घर घर में उण पातर रो नाम फलग्यो। उणरी वद-नामी विल्कुल मिटगी अर ठोड ठोड उणरा वखाण (तारीफ) होवण लाग्या। इतिहास में अम्बपाळी नाम री पातर रो नाम प्रसिद्ध है जिणै महात्मा वुद्ध र चरणा में सव कुछ अरपण करन पोता रा जीवण न सफळ वणायो।

आप आ चिंता मत करो के आपरो लारलो जीवण कितरो खराब रह्यो है। आप आगै रै वास्तै सोचो अर मौजूदा समय नै सुंदर बणावण कांनी ध्यांन दो। जे आप गृहस्थ हो तो आपरै गृहस्थी रा जिका फरज है उणनै आछी तरै सू पूरा करो। पोता रा परिवार, समाज, देस अर मांनखा जात रै वास्तै पण जिका आपरा फरज है वानै ढंग सूं निभावो। जीवण रा हरेक कांम नै जीवण कळा रो निजर सूं तोलो, परखो अर जे वै सही अर हितकारी व्है तो बिना कोई विचार रै अथवा बिना कोई साबासी रै किया जावो। आपरै जीवण री सफळता तै है। आपरो भविस्य उजळो है। आपरो जीवण तुरत जीवण कळा री पगडाडियां नै पकड़ लैला, जठा सूं पड़ण री कोई संभावना नीं है, जठा सूं फिसळण रो कोई अनुमांन नी है।



जिंदगी रो आराद

संसार रा सगळा धर्म, सास्त्रा, विचार धारावा, वादा अर ग्यान विग्याना रो खास 'धे' है—मानखा जूण नैं सबसू ऊची उठावणी, मिनख मे सू मिनखपणो जगाय नै उण नै देवपणा अर धीर २ भगवतपणा कानी लिजावणो। पण आ बात जद इज पूरी व्है सकै के मिनख पोता री जिंदगी न संभाळ, पोता रै जीवण रो उजळापो अर कीमत समझ, मानखा जूण री असली कीमत न समझै। जठा ताइ कोई मिनख पोता री जिंदगी न सही रुप सू नी समझ, जिंदगी री महानता न नी ओळख, उठा ताईं उण जीवण पर कोई पण नयो रग नी चढ सक, कोई रोगन पॉलिस नी व्है सक, उण जिंदगी नै चमकीलो नी बणाईज। एक रगरेजो कोई जूना कपडा न रगणो चाव तो पला उणरो जूनो रग धोय न साफ कर, जर इज उण पर नयो रग चढ सक। इणोज भात जे कोई मिनख आपरा जीवण पर नवो रग चढावणो चाव तो उण पर जो जूनो रग चढयोडो है उणन साफ करणो पडला। कारण के जीवण पर लाखां बरसा रै संस्कारा रो रग चढयोडो है सो साफ कियां बिना नवो अर चमकदार रग चढ नी सक। अर जे चढ्यो तो बदरग व्है जावला। इणोज भांत एक हुसियार चितारो भांत-

भांत रा रंग अर कूची लियां भीत पर चितरांम वणावण नैं तैयार वैठचौ है, पण जे भीतां सरीखी नी व्है, गडगुंवड़ वाळी व्है तो उण पर चावतां थकांई चोखौ चितरांम कियां वण सकै। चितारौ भलैई माथो फोडलै पण चितराम नो वण सकैला। इणीज भात आपरी जिदगी रूपी भीत सरीखी नी है, गड़गुंवड़ वाळी है अर इसी भीत पर जे फूटरौ चितरांम वणा-वणो चावौ तो सरीर, इंद्रियां, मन, वुद्धि अर वांणी ए सगळी सामग्री होवतां थका पण रूपाळौ चितरांम नी वण सकैला। आपनैं पै'ली आपरी जिदगी रूपी भीत नैं समतळ करणी पड़ैला, खाडा खोचरा मेटणा पड़ैला, ऊपरलौ कचरौ साफ करणौ पड़ैला, जद ई ज सागोपांग रूपाळौ चितराम वण सकै। जे आपरी जीवण रूपी चादर काळी है, मसोदा जिसी मैली घांण है तो उण पर नवौ रग नी चढ़ सकै। कवि री भाखा मे—

"सूरदास की काळी कामरी, चढै न दूजो रंग।"

जिदगी री काळी अथवा मैली चादर पर पण रंग चढा-वण रो ओ इज हाल है। भगवांन महावीर पण आ इज बात जिग्यामुआं नै कही ही—

"धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई"

उण जीवण पर इज धर्म रो रंग चढ़ सकै अथवा टिक सकै के जो साफ है अर सुद्ध है।

आपरी जिदगी आपरो सवसूं कीमती धन है। भारत रा रिसी-मुनियां मानखा री बारली सपदा—रंग-रूप, वुद्धि, इंद्रियां,

मन, सरीर, धन धान करता मानखा रा जीवण न घणो कीमती मान्यो है।

इण ससार रा वाडिया नै जे आप विवेक री निजरा सू देखो तो आपन केई अनोखा २ जीव निजर आवैला। भात भात रा रग, भात भात री डिजाइना अर भात भात रा चेहरा। ससार रा जीवा म मिनख पण एक अनोखो जीव है। दूजा जिनावरा रै ज्यू उणरो माथो अर मूडो नीच कानी नम्योडो नी है। उणरो ऊचो देख'र सीधो चालणो आ बताव के वो दूजा जीवा सू न्यारो है, ऊचो है। उणरो रगरूप अर डील पण दूजा जीवा सू न्यारी है। पूरी जीवाजूण में मानखा सू बढन दूजो कोई जीव आग नी है, कारण के मानखा जूण मुगती रो दरवाजो है। मानखा न जो खास तर री जिंदगी मिळी है उण सू वो देवता बण सक अर ठेट परमात्मा ताई पण पूग सक। ससार मे जितरा ई उगमणा अर आथमणा विद्वान हुआ है, तीरथकर, पैगबर, सत, साधु अर रिसि मुनि हुवा है, सब जणा एक सुर सू मानखा जूण नै सब सू ऊची बताई है। जन आगमा म मानखा जूण र वास्तै 'देवानु प्रिय' सब्द आव। भौतिक जीवण नै चावण वाळा देवतावा रो जूण सू पण आ जूण वत्ती है, इण कारण देवता पण इणन चावै। देवता इण हाड मास री बणियोडी मानखा देह न इज नी चावै पण वे तो मानखा रो आत्मा, मन, बुद्धि, वाणी अर इद्रिया री सामो मानखा न चावै।

आपनै मानव जीवण मिळ्यो है, पण जे आप उणरो

कीमत नी जाणी, उणनै धूड रै मोल वेचण नै तैयार व्है जावी, उणरो विकास करणी के उणनै उजळो वणावणी समझो इज नी तो आपरी जिंदगी मुळकणी तो आघी रही कुमळीज जावैला। जिकी जिंदगी फळै नी, फूलै नी, मुळकै नी वा जिंदगी धरती पर भार रूप है। इसो मिनख ठीक है के आपरै उमर रा दिन ओछा करै। कारण के वासना रा कादा मे पड़्यौ वो आपरो जिंदगी बितावै। उणरी सगळी उमर धन-दौलत जोड़वा मे, मै'ल-माळिया ऊभा करवा मे अर सरीर सिणगारवा मे इज वीत जावै। इसी थोथी अर नकांमी जिंदगी रो मोल कांई है? न वा कोई रै कांम आय सकै अर न दूजां नै कोई फायदो पूगाय सकै।

समझ लो एक आदमी पोता रा कोई साथी नै कागद लिखणो चावै, लिफाफो वडो मजबूत अर फूटरो है, वेल-वूटा पण उण पर आछा मडयोड़ा है, कागद पण घणो चीकणो है, लिफाफा पर ठिकांणो पण लिख दियो है, पण मांयनै समाचार काई नी है। उणरो साथी लिफाफो खोलै पण मांयनै समाचार बिल्कुल नी मिळै तो वो कोरो लिफाफो उणरै काई कांम आयो। वै वेल वूटा अर वो चीकणो कागद काई कांम आया।

ठीक आ इज हालत मांनखा जीवण रूपी कागद री है। कोई आदमी पोता रा सरीर रूपी लिफाफा नै ढग सूं सजाय लै, पाउडर अर क्रीम चेहरा पर पोत लै, फूटरा रेसमी कपड़ा पैर लै, माणक मोतियां रा गेणा सरीर पर लाद लै, पण जे

जिंदगी मे असली तत्व सयम, नियम, मरजादा वगैर है वारो कठ ई ठा' ठिकाणो ई नी है तो पछै व गैंणा, कपडा अर मोती मूगा किण काम रा ? उणरी हालत तो उण खाली लिफाफा जिसो है जिणसू कोई मतळव नी निकळै अर मानखो पोता रा जीवण सू इज याक जाव। एक बगीचा मे भात भात रा अर रग रग रा फूल खिल्योडा व्है, पण वा म सुगध बिल्कुल नी व्है, तो स्यात आप वार वन ई जावणो नीं चावोला। इणी ज भात कोई आदमी फूटरो-फररो, सावो चवडो, अर दीसतो वास्तो है पण उणमे विनय, विवेक, मिनखपणो, सजम, सत अर अहिंसा जिसा गुण नी व्है तो वो मिनख विद्वाना न फूटरो होवता थका ई चोखो नी लाग। कवियां री कलमा, चितारा री कूचिया अर लेखका री लेखणिया इसा मिनख रो चितराम उतारण न तयार नी व्हैला अर जे व्हैला तो ई वार मन मे नफरत व्हैला। जिकण जिंदगी मे सत, सिव अर सुदर नी व्है वा जिंदगी इज कुमळीजियोडी गिणीज अर कोई उणर खनै ई नी जावणो चाव। इसा मिनख अर जिनावर म कोई फरक नी है।

ससार रा इतिहास मे इसा अलेखू दाखला मिळै, जिणमें ठा' पड के जिंदगी कुमळीजगी है, उणनै ईख, मोह अर माया रूपी नागा खायली है। जो जीवता तो हा पण मुडदा सा वण न। वा री जिंदगी नै आपा असफळ जिंदगी कैवाला, भलई वा रै खन धन रा ढिगला व्है, सपदा रा मागर व्है अर साधना री वागरा व्है।

कस अर रावण रो इसीज कहाणियां है जिकां मे जीवण री मुळक नी ही। ए दोनूं मोटा राजा हुवा है। वांरै जीवण में कई वातां ही, काया लाबी-चवड़ी, राजपाट रो ठाट, मांनखो यांरै नांम सूं धूजती पण जिंदगी मे जो खास कमी ही वा आ ही के जिंदगी में मुळक को ही नी। वै उमर भर दूजा पर अत्याचार करता रह्या, दूजां नै तावता रह्या, इण कारण इज दुनिया वासूं नाराज रही। इतिहासकारां अर कहांणी लेखका वा पर कलम चलाई तो जरूर पण नफरत सूं चलाई। कोई पण वारी जीवणी पढै तो उण पर थू थू करण लागै। गौसालक अर गोड़से री कहाणी पण इसीज है—मांनखा नै वासूं नफरत है। हर हिटलर जो जरमनी रो करण-करावण हो, सगळा संसार मे प्रसिद्ध व्हैग्यौ, उणरी जिंदगी पण संसार नै वरबाद करण में इज वीती। उणरी जिंदगी मे मुळक रो कठैई ठा' ठिकाणो ई नी हो। जिकण रै जीवण में हिंसा अर मार-काट व्है उणनै मांनखो तो कीकर पसंद कर सकै पण उणनै पोता नै ई कदैई सांति नी मिळै।

जापांन रो हिरोसिमा नगर भस्म होवतौ हो। अणुवम सूं बळझळ नै उणरी राख व्है री ही, उण वखत उण वळवळती भोभर पर दौड़तो एक आदमी उठै कांई सोजतौ हो। वो करैई अठीनै दौड़तौ तो करैई उठीनै अर जोर जोर सूं वोलण लागतौ—

He shall go to hell, who has destroyed this beloved town of Japan (जिणे इण जापांन रा फूटरा नगर रो नास कीनौ है, वो जरूर नरक मे जावैला।)

करैई वो थामा ऊपर चढन च्यारू मेर देखतो अर करई अठी उठी फिरण लागतो पण उणनै चाहिजती चीज नी लाद री ही। रूखड़ा, बाटका, पानड़ा सगळाई बळ न भसम व्हैग्या हा अर वो पीत पण गरम राखोड़ा पर चालण सू बळ न काळो पड़ग्यो हो।

इतरा में घायला री सेवा करण वाळी एक मोटर उठ आई। उणा उणनै कोई पागल भारतवासी समझ नै सहायता कैम्प म लेग्या अर उठै उणरी सेवा चाकरी होवण लागी।

उठीनै अमेरिका मे अणुबम बणावण वाळो डॉक्टर चालम निकोलस कठई भागग्यो हो। उणरी लुगाई मेरी अर उणरो साथी राबट सिडनी उणन खोज हा। वे मन मे सोचता जावता हा के म्हे निकोलस नै कितरो समझायो हो के यू अणुबम मत बणा, इणसू ससार रो नास व्हे जावेला। पण वो मान्यो कोनी अर इण कारण इज उणरो साथ पण छोड़णो पड्यो। इसो मालम व्है के उणें आपरी चाळीस बरसा री सोध खोज सरकार नै सूप दी है जिणसू जापान रो नास व्है रह्यो है। पण प्रेम र नातै उणनै सोधणो तो पहैला इज। यू विचार कर नै वे उणरी प्रयोगसाळा में पूग्या। पण उठ भीत पर लिख्योड़ो हो—He shall go to hell (वो नरक मे जावला) ओ निकोलस र हाथ सू लिख्योड़ो हो। उणी वखत निकोलस रो जूनो नौकर टामी मिळ्यो। उणें बतायो के जिण वखत रेडियो सू हिरोसिमा रै नस्ट होवण री खबर आई, निकोलस एकदम ऊठ्यो—हाका करण लाग्यो अर आम्या बद करन अठा सू दौड़ग्यो। उठा पछ उणरो कोई पुतो नी है।

समाचार पत्रां मे निकोलस रै गुम हो जावण री खबर देय नै सिडनी अर मेरी जद जापांन पूग्या तो साति संघ रा सदस्यां वारो उठै खूब आदर सत्कार कियो अर वांनै सहायता केन्द्र दिखावण नै लेग्या। उठा रै एक मोटै डाक्टर विलियम एक अस्पताळ मे फिरता पूछ्यो के काई आप वताय सको के इसा भयानक वम रो वणावण वाळो कुण हो, तो सिडनी निकोलस रो नांम वतायो। नांम वतावता पाण एक पागल री जोर सू आवाज आई—Allas, he shall go to hell (अफसोस वो जरूर नरक में जावैला)।

वे ओ सुण नै एकदम चौक्या, वानै विस्वास व्हैग्यो के वो पागल इज निकोलस है, कारण के प्रयोगसाळा री भीत पर ए इज आखर लिख्योड़ा हा अर टामी पण आ इज वात कही ही।

वे सीधा उणरै खनै आया अर आंसूडा टळकावता वोल्या—"अरे निकोलस, थारी आ हालत !" निकोलस पण आपरा साथी अर पोता री लुगाई नै पै'चांण ली। वो वोल्यो—"मेरी, थारी वात सांची निकळी, म्हूं जरूर नरक में जाऊंला। जो दूजा री मुळक नै मिटाय नै पोता री मुळक कायम राखणी चावै, वो थोथा विचारां मे गोता खावै। मैं म्हारी सोध ससार नै वरवाद करण सारूं काम मे ली, इण कारण इज म्हारी खुसी गायव व्हैगी।

ओ है जिंदगी री देवाळो। जठै मांनखो खोटा कांम करै, उठै उणनै कितरा दुख उठावणा पड़ै। निकोलस रा दाखला

सू आपा आछी तर समझ सका के उणर चाळीस वरसा री मेंणत अकारथ गई अर उणरो पोता रो जमारो ई बिगड्यो। जे वो पोता री अक्कल, हिरदा अर इंद्रिया नै चाख मारग घालतो तो दुनिया मे पूजीज जावतो।

चदरमा कितरो फूटरो व्है। अर फेर पूनम री पूरी चादो जद आपरी सोळू कळावा साग ऊगे तो कितरो रूपाळो, कितरो ठडो, कितरो चोखो अर कितरो आणद देवण वाळो लाग। इसा रूपाळा चाद न हरेक जीव देखणो चाव, इणरो कारण ओ इज है के वो चदरमा सगळी कळावा साग पूरण व्है।

इणीज भात जिण मानखा री जिंदगी सगळी कळावा सू पूरण व्है, उणन ससार रा सगळा जीव चाव, उणर कुसळ-खेम री कामना करै। सगळा र वास्त वा जिंदगी आणद देवण वाळी व्है। मरजादापुरसोत्तम राम, करमजोगी किसण, भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, ईसामसीह, म० गाधी इण सगळा महापुरसा रो जीवण चदरमा री पाण इमरत सू भरयोडो हो। वार जीवण मे साति, प्रेम, न्याय, सत अर क्षमा भरयोडी ही। ओ इज कारण है के आज कई वरस बीतग्या पण हालताई मानखो वांन याद कर, देव करन पूज। ज्यारै जीवण मे सहज आणद हो, निकोलस रै गळाई उणा अणु बम री सोध नी करनै प्रमाणु बम री खाज कीवी हो अर प्रेम री पूरणता इज वार जिंदगी रूपी प्याला न छळोछळ भर सकी ही। जीण री कळा वार बरोबर हाथ आयगी ही। इण कारण इज अबखी मू अबखी घडिया मे पण हूंसता रह्या, वार जीवण

मे कदैई उदासी के थकावट नी आई। वै पोता रै जिंदगी री मुळक ठेट तक कायम राख सक्या। जोगेसर आणंदघनजी पोता रै जीवण री मुळक खातर पूरो जीवण वितायग्या। वांरै जीवण में मस्ती ही, फक्कड़ता ही, सरलता ही अर ए चीजां इज वारै जिंदगी रो आणद हो।

जोगेसर आणदघनजी वडा पांचवांन पुरस हा। एकर वे कोई गांव मे ठैरचोड़ा हा, जठै श्रो कायदो वण्योड़ो है के जठातांई गाव रो नगर सेठ सभा मे नी आय जावै उठातांई कोई पण साधु महात्मा पोता रो वखांण सरू नी कर सकै। जोगेसर नै तो कोई परवा ही कोयनी। सो उणां तो पोता रो वखांण सरू कर दीनो अर नगर सेठ थोड़ा जेज सू उठै आया। सेठा नै आ वात खारी लागी सो वखांण खतम हुयां पछै वे महात्माजी खनै पूग्या अर कैवण लाग्या—"महाराज! आपनै ओ ठा नी हो के इग गांव री एक मरजादा वणियोड़ी है अर वा आ के जठा तांईं इण गाव रो नगर सेठ वखांण मे नी आय जावै, उठा ताईं सरू नीं व्हैणी चाहिजै। आप नै सोच विचार नै ओ कांम करणो चाहिजतो हो।" आनदघनजी तो फक्कड़ साधु हा, वै किणरी परवाह करता? वै वोल्या—"म्हूं इण लिछमीपतिया री थोथी वाता नै नी मांनूं।" सेठ नाराज होय नै वोल्यो—"महाराज, हाल आपनै रैवणो तो इण गाव अर इण समाज मे इज है, पछै आप इयां अकड़ नै कियां रैय सकोला?" संत देख्यो सेठ रो पारो गरम व्हैग्यो है तो वे सांत भाव सू वोल्या—"सेठजी, जे आपनै इसो इज गुमांन व्है तो म्हू

तो अठार ओ गाव छोड नै चाल्यो जावू। इण समाज रै साग म्हू म्हारी आत्मा नै नी वाध सकू। अर जे थारी आ धारणा व्है के म्हे आनदघन न पाळा पोसा हा तो थारी आ धारणा थोथी है, न म्हने इणा मोटा मोटा उपासरा री जरूरत है अर न था जिसा सेठ-साहूकारा री गुलामी री जरूरत है।" इतरो कय न वे तो आपरी साधना वास्तै वन कानी रवान व्हैग्या अर आनद सू आपरी साधना मे लीन व्हैग्या। ओ है जिंदगी र आणद रो एक नमूनो। जठ इसो आणद व्है, उठै कोई पण चोखो काम, चोखी साधना रुक नी सक। सागै-सागै कोई पण बिखो के दुख टिक नी सकै। जागेसर आणदघनजी तीरथकर चोवीसी म तीजा तीरथकर सभवनाथजी न अरज करता जिंदगी र असली आणद रा भेद इण भात खोल्यो है—

सेवन कारण पहली भूमिका रे।
अभय अद्वेष अखेद॥
भय चंचलता नै परिणामनी रे।
द्वेष अरोचक भाव॥
खेद प्रवत्ति करता थाकिया रे।
दोष अबोध लखाव॥
सभय सेव ते धुर सेवो सेव रे।
सहो प्रभु सेवन भेद॥

कवि आणदघनजी जिंदगी रो आणद परगट करण खातर कितरा ऊडा पूगग्या है। वे कय के प्रभु री सेवा करण खातर अर जीवण न ऊचो उठावण खातर प्रभुत्व सेवन रा भेद न समझो अर पछ उणरो भोग करो। प्रभुत्व-सेवन रो अरथ है

जिंदगी रो आणंद मेळवणो। इण वास्तै पैला भोमका तैयार करो। अर भोमका तैयार करण वास्तै पैला तीन चीजां री जरूरत है—अभय, अद्वेस अर अखेद। अभय रो अरथ निडरपणो व्है, पण इण निडरपणा रो अरथ थोथी अकड़ नी है। परमांणु बम बणावणा के एवरेस्ट री चोटी माथै चढणो पण निडरपणो नी हे। लड़ाई रा मैदान मे जे कोई आदमी लाखां वीरां रै सांमनै मौत सूं जूझतो थको निकळ जावै के कोई भयानक अस्त्र सस्त्र वणाय दे, पण इसा मिनख रै पण हिवड़ा री धड़कणां सुणी व्है तो ठा' पड़ै के उठै पण जीवण री मोह विरती है। वारै तो उठै वीरता रो सांग दीखैला पण मांयला कांनी मौत रो भय धड़कतो निजर आवैला। इण वास्तै निडरता रो अरथ अठै अंदरूणो विरतिया रो चचळ नी होवणो है। उठै बारली निडरता के बाग्ली आणद मिनख नै मोटो नी वणाय सकै।

जिंदगी रै आणद रो दूजो तत्व उणा अद्वेस बतायो है। अद्वेस रो मतळब फगत इतरो इज नी हे के दूजां सूं वैर-विरोध नी करणो। आप जाणो के मामूली भाठो के एक इन्द्रिय जीव कोई सू वैर नी राखै। फगत इण कारण सूं इज वांनै अद्वेसी नी कैय सकां। जठै उदासीनता, नफरत के वेपरवाही री विरती व्है, उठै द्वेस मांयनै इज मांयनै घोड़ा री पांण दौड़तो निजर आवै। जिंदगी सू हार नै वैठ जावणो, किणै ई आपरी बात नी मांनी तो उणसूं कानी ले लेवणो पण अद्वेस नी है। उणरै मन मे वळण नी व्हैणी चाहिजै। जठै मन रा पड़दा में

वर विरोध री होळी सुळगती व्हे, उठै उदासीनता के काना लेवण री राख ऊपर नाखण सू वर विरोध री आग बुझै नी पण कोई निमित्त रूपी पवन लागण सू पाछी आग सुळग जाव। इण वास्त आनदघनजी री निजर मे द्वेस रो मतळब अरोचकभाव है। कोई मिनख सू नफरत करणो, उणसू काना ले लेवणो के उणसू उदासीनता देखावणो पण द्वेस इज गिणीज। जठ द्वेस व्हे उठ मोह, आसक्ति अर मूर्च्छा वगरै मायन छिप्योडा रैवै। इण वास्त आपरो मतळब पूरो नी होवण सू, मोह री भूख नो बुझण सू, मूर्च्छा नै दाणो पाणो नी मिळण सू कोई मिनख सू नी बोलणो, उणर साग सपक नो राखणो, उणसू काना करणो अद्वेस नी है। अद्वेस रो असली रूप उठ ह के जठै विरोधी सू विरोधी मिनख र वास्तै पण मन म सद्भावना व्हे, मिळणे पर प्रेम भाव व्हे, वाणी मे नेह टपक, हिवडा मे प्रेम भरी जग्या व्हे अर आत्मा मे करुणा व्हे। उणर विरोध र कारण आपरी कोई सुभ के सुध विरती नै रोक्णी, भय र कारण सत करम सू डिग जावणो, एक तरै सू अद्वेस इज ह। जठ आ विरती व्हे उठ जिंदगी रो असली आणद के जिंदगी री मस्ती नी आय सक।

जिंदगी रै आणद रो तीजो तत्व अखेद है। अखेद रो मतळब फगत दुखी नी होवणो इज नी ह। एक मजूर आपरो काम करतो करतो कायो नी व्हे के एक वैग्यानिक बम वणा वतो वणावतो थाको नी व्ह तो इतरा रो इज मतळब अखेद नी है। कारण के उठै बुरा काम री बुराई रो काटो हर वखत

मन मे खुरचोड़ी रैवै, इण वास्तै वो पीड़ा देवतो रैवै । मिनख नै पैं'ला सूं इज सोच विचार रै ढग सूं इसो कांम करणो चाहिजै के पछै उणनै पछतापो नी करणो पड़ै। कारण के जिको तीर एक'र हाथ सू छूट जावै वो पाछो हाथ नी आवै। इण वास्तै कोई पण कांम किया पैं'ला मिनख नै हजार वार सोच लेवणो चाहिजै जिणसूं के पछै पछतापो नी करणो पड़ै ।

इण वास्तै आणंदघनजी रै कथण माफक अखेद रो अरथ ओ हुवो के कोई पण काम सोच-समझ नै ढंग सूं करणो जिणसूं पछै उमर भर चिंता मे नी बळणो पड़ै । इण तरै पोता री निजर सूं सत जच्योड़ी, हितकर लागोड़ी बात सरू करनै रुकणो नी, के मन मे कोई भांत रो दुख कळेस नी लावणो अखेद रो भेद है ।

हां, तो जो मिनख पोता री जिंदगी मे आणंद रा इण तीनूं तत्वा नै अपणाय ले तो उणरो जीवण पूरण व्है जावै, कळा-पूरण चांद री पांण मुळकण लाग जावै । पण आ बात ध्यांन मे राखणी चाहिजै के ए तीनूं तत्व भेळा होवण सूं इज जिंदगी रो आणद आय सकै। जिंदगी रै आणंद रो असली नुस्खो ओ इज है। जिंदगी री असली अर पूरी मुळक (आणद) रो मतळव ओ है के जो एक'र सरू करनै आगै सूं आगै पूरणता कांनी वधतो जावै, रुकै नी तो आणंद अत तांई कायम रैय सकै। जिण भांत दूज रो चंदरमा दूज सूं लगाय नै पूनम तांई वधतो इज जावै, उणीज भात मांनखा रा जीवण में पण आणद धीरै धीरै वधतो इज रैवणो चाहिजै। अर जे मारग

मे इज पोता रा फरज न छोड दियो, मारग भूलग्या अथवा रुकग्या तो समभणो के आणद ताईं पूगणो कठण है ।

एक जूनी कथा है। वा इण भात है के एक राजा हो, उणरै एक बेटो हुयो। कोई जोतखी राजा न कैय दियो के ओ कुँवर तो मोटचार गाळा मे इज मर जावैला, उणरा गिर इसा इज पडया है। अब राजा कुँवर होवण री खुसी तो भूलग्यो अर उणर मौत री चिंता मे पडग्यो। राणी पण घणी दुखी हुई। राज परवार रा सगळा मिनखा पण बडो सोच कियो अर इण भात सब जणा हर वखत गमगीन रवण लाग्या। राजा रै दिमाग में आठू पो'र अर चौसठ घडी जोतखी री वाणी गूजण लागी अर वो पोता रा फरज न ई भूलग्यो। यू फरज रै तौर कुँवर रो पालण पोसण हुयो, सिक्षा दीक्षा पण हुई, अर कुँवर मोटचार ई व्हैग्यो पण मा बापा रै मन में सतान र वास्त जिको असली हूस व्है, जिको जिंदगी रो असली आणद व्है, वो नी आय सक्यो। एक मामूली सी बात जिंदगी रो सगळो रस, सगळो आणद इज खतम कर दियो। ओ सगळो परिस्रम अर पाळण पोसण ऊपरला मन सू होवतो हो। राणी कुवर नै खोळा मे लेयनै खवाडती, पिवाडती अर उणरी लाड ई करती पण उणर दिमाग मे तो हर वखत आ बात चक्कर काटवो करती के कुँवर जवानी में जावतो रवला। पोता री सतान न पाळता मा रै मन में जिको असली आणद व्है वो सूखतो जाय रह्यो हो।

इण भात जिंदगी में कई मौका आव के जद जीवण भय

अर लोभ री धारा कांनी मुड़ जावै अर जिंदगी रो असली आणंद खतम व्है जावै।

आजकाल रा जुग में जिका धर्म रा ठेकेदार बण्योड़ा है, वांरै जीवण मे पण जिंदगी रो असली आणद क्यूं नी है? रात र दिन धर्म री क्रियावां मे डूब्योड़ा रैणै पर ई वांरै जीवण मे आणद क्यूं नी है। इणरो असली कारण जे ढूढ़्यो जावै तो ठा' पड़ैला के वांरी सगळी क्रियावां लोभ अर भय माथै टिक्योड़ी है। का तो वांनै सुरग रो लोभ है अर का नरक रो भय है। अथवा इण ससार मे स्वारथ सिद्ध होवण रो, नांमवारी रो के धन कमावण रो लोभ है, के सरकारी सजा रो, बेइज्जती रो, स्वारथ भंग होवण रो भय है। फरज री असली धार पर वांरी जीवण रूपी नदी नी बैवै। इण कारण इज वानै धर्म क्रियावां में रस नी आवै, आणंद नी मिळै। धर्म री सगळी क्रियावां ए दोन्यू बातां ध्यांन में राख नै की जावै।

भगवद्-भगत थेरिसा रो नाम आप सुण्यो व्हैला। वा एक महांन पडिता ही। वा आपरै जीमणा हाथ मे चराक (मशाल) अर डावा हाथ मे पांणी री बाल्टी राखती। लोग उणनै इण भांत हाट बजार में फिरती गिरती देखता तो वांनै वडो अचूंभो होवतौ। कोई उणनै पूछतौ तो वा पडुत्तर देवती कै चराक सू म्हूं सुरग रा सुख बाळ देवणा चावू अर बाल्टी रा पांणी सू नरक री आग बुझा देवणी चावू। इणसूं मांनखो सुरग री थोथी कल्पनावां में डूब्योड़ो नी रैवै अर न नरक

सू डरप, वा धरम रा कामा में लाग्यौ रैवै अर पोता रै फरज रो पूरो ध्यान राख। लोगा पूछ्यो–"थान आ कल्पना किया सूझी ?" डोकरी थेरिसा बोली–"इण ससार रा वाडिया म जितरा पण साधक है, कोई र मन मे नरक रो भय समायोडौ है तो कोई सुरग रा सुखा मे लीन व्है रह्यो है, पण कोई बिना स्वारथ आपरो फरज पूरो करनै जिंदगी नै आणद सू पूरण नी बणाव। घणखरा मिनख दुनिया मे चोखा काम करै जरूर पण वार लार ई कोई न कोई भेद है। कोई माता रा पापा न छिपावण न सत्करम करै तो कोई आपरी नामवारी अर धन कमावण र वास्तै या दुनिया न उल्लू बणावण र वास्त सत्करम करै। इण भात हजारा साधका रै मन में घुस्योडी सुरग री उण थोथी कल्पनावा न मसाल सू बाळणी चावू अर नरक रा डर नै बाल्टी रा पाणी सू बुझावणी चावू। मतलब ओ वै म्हू भय अर लोम दोनू मिटा देवणी चावू। म्हू समाज रै मन म आ बात आछी तरै बिठा देवणी चावू के जिंदगी रो असली आणद पोता रो फरज निभाण पर इज मिळ सकै। धरम, धरम रै वास्तै होवणो चाहिज अर सत्करम सत रा पालण वास्त होवणो चाहिज। आ इज म्हारी भावना है।

डोकरी री वात रो सार ओ है के मानखा न पोता री जिंदगी म तकलीफा, मुसीबतां अर अडचना सू नी डरणो चाहिज। ओ व्हैसा जद इज जीवण में असली आणद आवला।

जिंदगी रो आणद आतमा सहित पूरा सरीर रो आणंद है। जठै फगत सरीर रो आणंद इज व्है, उणनै पूरो आणंद नी कह्यो जा सकै। कारण के आतमा तो पूरा सरीर, इन्द्रियां, मन अर बुद्धि रो पावर हाउस है। जे आतमा मे आणंद नीं है तो मन रो, बुद्धि रो, हिरदा रो के सरीर रो आणंद जिंदगी नै इतरी मजबूत नी बणा सकै। ताम पण ए सगळा आणंद जिंदगी रा आणंद नै पूरण जरूर बणाय सकै। वसंत रित आवै जद फगत रूखडा रै नवा पानडा इज नी आवै, पण फूल, माजर, फळ, कूंपळां अर नंनो नैनो डामकियां सगळो घणी फूटरी आवै। वसंत रो वो आणंद पूरण आणंद बणै। सगळी कुदरत इसी दीसै जांणै नवो वागो पेरयो है। अठीनै कोयल टहूका देवणा सरू करै अर उठीनै भांत भात रा फूलां पर भमरा फूंदिया गूजण लाग जावै। एक कानी जूंना अर पीळा पानडा झडण लागै तो दूजी कांनी नवा अर सोवणा पानडा आवणा मांडे। चिड़कलियां अर सूवटा किलोळ करण लागै अर रूंखा पर मा’ळा घालण लागै। इण भात वसंत रित रा सगळा अंग कुदरत रा आणद नै घणो वढ़ा देवै। ठीक इणीज तरै जिंदगी रा आणद मे आतमा तो खास चीज है इज, पण मन, बुद्धि, हिरदो, इन्द्रियां अर सरीर पण पूरा सहायक है।

दाखला रै रूप मे सब सू पैली मन रा आणद नै लेलो। जिण वखत जिंदगी मे अवखी घड़ी आवै, च्यारूमेर खतरो निजर आवै, उण वखत काचो अथवा डरपोक मन मारग चूक

जाव । पण मन री मजबूती अथवा साचो आणद उठै इज है के जठै अबखी सू अबखी वेळा मे पण मन आखर री पाण अचळ रैव, हिलै नी के डिग नी । जिकण मन मे इसा आणद रो वासो नी व्है वो मन एक झाड र उनमान समझणो चाहिज के जिको मुसीबता र जकेरा सू करई अठीन लुळ जाव तो करई उठीनै । नी पोता रा पे' माथै अटळ नी रय सक । इसो मन मनसूग री दुनिया मे डूब्योडो रैव चिंता री चिता मे धधकतो रव के पछ आगै री सोन री करपनावा म रमतो रैव । पण ठोस धरती पर ठ'र नै स'मुख आवण वाळी बाता रो उकेल नी सोचै । कइया रो मन तो इणसू पण कमजोर व्है, वानै तो मुसीबत रो मामूली जकैरो कठई रो कठैई जाय नै फक सक । इसा मन वाळा रै खन भलाई लाखा रुपिया री पूजी व्हो, कुटुम कबीला सू घर भरयोडो व्हो, रैवण न मोटा मोटा म'ल माळिया व्हो, पण वारै कमजोर मन मे आणद थोडी ताळ पण नी टिक सक । मामूली सी आफत आई कै वे हाय हाय करण लाग जावै, पोता रा फरज न छिटकाय देवै अर हरदम कोई न कोई चिंता मे लीन रवै । सुख री बाता सुणता पाण वा रो अचपळो मन चलायमान व्है जाव । पण जिकण मिनख रै मन में आणद री छोळा आय रो' व्है, उठ मन रो कोई पण खूणो इसो नी मिळैला के जठ भय अथवा लोभ रो असर व्है सक । इसो मन तो फरज रूपी तीखी धार पर चालतो रवला । बीच मे जे भाठो आवैला तो उणसू टकरा सी अर सूगलो पाणी आसी तो उणसू पण जूझसी ।

घणी जूनी बात है के स्यालकोट (सिगालकोट) मे जोद्ध

धर्म रो सम्मेलन हुयौ। उण वखत एक सवाल ऊठ्यौ के इण सहर मे एक विद्वान ब्राह्मण रैवैं, वो वौद्ध भिक्खुवां सूं नफरत करैं, अवै कुण इसो भिक्खु है जो उण ब्रांह्मण रा ओछापण नै दूर कर सकै अर प्रेम सूं उणनै सही मारग पर लाय सकै ।

एक साधु इण कांम नै पार लगावण रो वीड़ो उठायो—वो वोल्यौ के म्हू पडत रामन नै जीतवा री कोसिस करुंला। भिक्खु हाथ में भीख रो वरतन लेय नै उण पंडत रै घरां पूग्यौ। पण उठै तो पैली सूं इज इण वात री सख्त मनाई ही के भिक्खु सूं कोई भासण ई नी करै। सो स्रमण नै भिक्षा नी मिळी अर वो पाछो आयग्यौ। दूजै दिन वो पाछो गयौ तो उठै तो वारो वा वात। इण भांत वो नित रोज जावतौ अर हंसतो हसतो पाछो आय जावतौ। यू करतां उणनैं पूरा दस महीना वीतग्या पण उणरै मूंडा पर कदैई रोस री रेखा ई नी आई। वो तो हर वखत हंसतो रैवतौ । उणरै मन रो धीरप अर साति देखनै मिनख अचूभो करण लागता ।

एक दिन पडतांणी घर मे एकलीज ही सो उणे भिक्खु नै कह्यौ—"आप दर हमेस भीख लेवण नै पधारौ पण घर-धणी रो इण वावत हुकम नी है, इण वास्तै म्हू आपनै भीख देय नी सकू ।"

स्रमण बोल्यौ—"वैन सत रै वास्तै भीख री कोई कमी नी है। भीख देवण वाळा कई माई रा लाल वैठ्या है। म्हनै भीख देवण सूं जे थारै घर मे झगड़ो टटो होवतौ व्है तो म्हारै भीख नी चाहिजै। स्रमण पाछो विहार कांनी वहीर हुवौ के

मारग मे उणनै वो इज पडत मिळग्यो, जिणरा नै के वो सुधा-रणो चाव हो ।

भिक्खु न खाली हाथा ग्रावतो देखनै पडत उण सू मजाक करतो बोल्यो—"थू कठ गयो हो ? काई भीख वीख मिळी ?"

समण पोता री मिसरी जिसी मीठी वाणी म बोल्यो—"महाराज, म्हू नमायत रै घर भीख लेवण न गयो हो, ग्राज दस महीना री तपसा फळी है ग्रर पडताणी जी म्हनै काइ दीनो है।" "पडताणी काइ दीनो है" ग्रा बात सुणन पडतजी एकदम लाल भभोळ व्हैग्या । वे समण न उठ इज ठराय न सीधा घर पूग्या ग्रर पडताणी न पूछण लाग्या—"बता, ग्राज थें उण साधू न काई दियो है ?" वा बोली—"पतिदेव, म्हू ग्रापरै हुकम बिना किया देय सकू ? ग्रर ग्रापरै हुकम री उदूली किया कर सकू ?"

पडत पाछा घर बार ग्राया ग्रर लोगा न सुणावण नै जोर जोर सू कैवण लाग्या—"भाइया, घोर कळजुग ग्रायग्यो है, किसीक गजब री बात है के ए लोग साधू रो भेग बणाय नै दुनिया न ठगणी चाव । देखो तो खरी, ए कितरो कूड बोलै, ग्रबार ग्रो कवतो हो के पडताणी म्हन काई दियो है, ग्रबै म्हू उणन पूछ्यू के पडताणी उणनै काई दियो है ?

समण हसतो थको बोल्यो—महाराज ! पडताणी म्हन "ना" दियो है । ग्रा तो ग्राप न ठा' इज है के म्हू घणा दिना सू ग्रापरै उठै भीख मांगण न ग्रावू हू । ग्राज म्हनै "ना" मिळयो है तो स्यात कोई दिन "हा" पण मिळ जावला ।

भिक्खु रो इसो अनोखो पडुत्तर सुण नै पंडत जी री रीस सांत व्हैगी। उणां पूछ्यो—थारी आ कोसिस कितरा दिन तांई चालती रैवैली ? भिक्खु सांति सू पाछो वोल्यो—जठा तांई आ जिंदगी है। पंडत आ वात सुणनै घणो प्रभावित हुवो—घन है आपरो जीवण, आपतो मिनख नो पण देवता हो। दस महीनां मे कोई पण दिन आपनै आदर भाव नी मिळ्यो, अनाज रो एक दांणो पण नो मिळ्यो, तांमपण आपरा चेहरा माथै म्हैं कदैई रीस नी देखी। घन है आपरी सांति अर सेहन सगती नै। इणमे कितरी कोमळता अर सांति है। पंडत स्रमण रै पगां पड़्यो अर माफी मांगण लाग्यो। वोल्यो-"म्हू आपनै समझ नी सक्यो। आप तो म्हारा जीवण नै सुधारण नै आया हो। म्हारा मोटा भाग है के म्हनै आप जिसा महात्मा रा दरसण हुवा है।" पंडत उणनै घरां लेग्यो, भीख दीवी अर पोता रो जीवण सरल अर सात्विक ढग सूं वितावण लाग्यो।

ओ है मन रै आणद रो साचो नमूनो। अक्कल रो आणद उठै मिळै, जठै मिनख हरेक मौका माथै आपरी वेवारीक बुद्धि सू सही गळत रो ठीक ठीक निरणै करलै। जठै अक्कल राजसी व्है, उठै चचळता रै कारण गळत निरणै करलै, मारग भुलाय दै अर मौको पड़्यां नास पण करदै। इसी बुद्धि घणी खराव व्है, वा रक्षा करवा वाळी के हित करवा वाळी नी व्है। दाखला रै रूप मे निकोलस री बुद्धि घणी तेज ही, पण वा रजोगुणी होवण सू नास-कारक वणी। इणीज भांत

तमोगुण वाळी पण मूरखता री मूरत व्है। वो सही के गळत काई नी सोच। तमोगुणी करता तो रजोगुणी चोखो। तमोगुणी मिनख तो अधविस्वासी, अधसिरघाळू, रूढीवादी अर विना विवेक रो व्है, इण वास्त राजसो अर तामसी विरती वाळा र जीवण मे साचो आणद नी व्है। जठ बुद्धि दूजा री भलाई मे लागती व्है, उठै इज बुद्धि रो आणद निजर आव। विद्वाना धन री दळिदरता करता बुद्धि री दळिदरता नै घणी खराब बताई है। विद्वाना मोटयारा न उपदेस पण इण भात दियो है—

"धर्मे ते धीयता बुद्धिमनस्ते महदस्तु" हे मोटयार, थारी बुद्धि धन मे नी धम मे रम, थारो मन ओछो नी पण मोटो बण।

हिरदा रो आणद वो गिणीज के जठै हिरदो घणो मोटो व्है, जिकण मे मन मे सगळा ससार रै वास्तै प्रेम, नेह अर इमरत रो झरणो बव। जठ मन नैनो व्है, उठै थारा म्हारी री भावना, स्वारथ री निजर, जात-पात रो भेद, रगभेद, रास्ट्र भेद, प्रात भेद अर सप्रदाय री भावना घणी कडी व्है अर व भावनावा उणरा हरेक वेवार मे साफ दीस। उणरो मन दूजा नै देख न पिघळै नी। दूजा धर्मा रा के देसा रा विद्वाना रै वास्त पण उण मन मे कोई भाव आदर नी व्है। इसो मन मिनखपणा रा टुकडा २ कर नाख, मिनखपणा नै विखोर नाखै। इसा थोथा मन सू न दान दियो जा सक अर न परोपकार कियो जा सक। ससार री भलाई रा कामा में पेलपात

तो इसो मिनख पडै इज नी अर जे पडै तो उण मे उणरो कोई न कोई स्वारथ जरूर व्है। वो उणमे भय के लोभ रै कारण पड़ै। इण कारण इज हिरदा रो आणद उठै नी लावै। हिरदा रो आणद तो उठै इज व्है के जठै मिनखपणो अखड व्है। वो पोता रा हिरदा मे सगळी दुनियां नै समेट लेवै। केडोई पापी, हरामी नै दुरगुणी व्हो, पण उणरै वास्तै ई उणरै मन मे तो प्रेम इज व्है। वो उणनै प्रेम सूं सुधारवा री कोसिस करै। आजकाल रा नेता रै ज्यू वो उणनै टाळ नै एक कांनी नी करदे पण उणमे प्रेम सूं समझाय नै सुधारवा रो मौको दे। वचन रो आणद उठै मान्यो जावै के जठै वांणी सागै फूल झडता व्है। इमरत जिसो मीठी, चोखी अर तुलियोड़ी सत वांणी बोलीजै उठै इज वचन रो आणंद है। मांनखा रै जीवण मे बुद्धि, हिरदो के मन रो आणद वाणी सू दीसै। वांणी दूजा आणदा रो दरपण मान्यो जावै। इण वास्तै इज सोच-विचार नै मीठो बोलण वाळो मिनख हर वखत मुळकतो रैवै। पण जिकण रै मूडा सू कड़वी, खोटी के नकांमी वांणी निकळै जिकण सूं वैर, विरोध अर दुस्मणी वधै तो इसा जीवण में असली आणद कठै। विद्वाना कह्यो है—वचने का दरिद्रता—मीठा वचन बोलण मे कजूसी क्यू करणी चाहिजै। इण वास्ते वांणी रो आणद पण घणो जरूरी है। काया रो आणंद उठै मान्यो जावै के जठै काया सू कोई पण सोच-विचार नै समझदारी सू कियौ जावै। वेवार मांनखा रै जीवण रो दरपण मान्यौ जावै, उणनै देखनै इज मांनखा री अदरूणी हालत रो अदाज लगायौ जावै। इण वास्तै जठै जीवण रा वेवार मे

ओछा विचार व्है, नफरत व्है, वर विरोध व्है, स्वारथ के लोभ व्है, काया सू मानखा रो भूडो व्है तो व्है, उठै जीवण रो आणद नी मिळ सकै । काया रो आणद हिरदा मे छोळा देवता रगत री पाण है। रगत एक ठयै नी रव, वा सगळा सरीर मे दौडतो रव अर उण हालत म इज सरीर निरोग रव । जे रगत एक ठायै रुक जावै तो काळो पड जावै, सरीर नै बिगाड नाख अर काम पडया जीव न पण खोळियो छुडाय नाखै। जिको रगत दौडी करतो रैव उणरो रग रातो रवै । जिको लोहू पडयो रवै उणर काट लाग जाव अर जिकण न रात दिन काम मे लियो जाव वो चमकतो रैव । इणीज भात जिको सरीर हरदम दूजा री भलाई करण न तैयार रव, पराई पीड काटण वाळो व्है, रगत री पाण समाज री सेवा करण न तयार रव, वो सरीर आणदपूरण अर भलाई वाळो व्है । वो हरदम निरोग रैव । निरोग सरीर काया रै आणद री निसाणी है ।

इन्द्रिया रो आणद उठ मान्यो जाव के जठ हरेक इन्द्रिया न चोखा रास्त लगाई जाव । वान विसय वासनावा मे के खराब बाता म नी भटकवा देव । मिनख पोता री जितरी ज्यादा जरूरता वधावला उतरो ई ज्यादा इन्द्रिया रो गुलाम बणला, उण हालत मे मिनख री आजादी खतम व्है जावला अर जिंदगी रो आणद जावतो रवला । कारण के गुलाम नै तो हर वखत मालिक री सेवा में रवणो पड, उणरै सुख दुख री चिंता कुण कर ? इण वास्त इन्द्रिया रो आणद पण जिंदगी

मे जरूरी चीज है। पांचूं इन्द्रियां रो सही उपयोग पण वो इज मिनख कर सकै के जिकण री इन्द्रियां निरोग अर सयम वाळी व्है। इन्द्रियां अर सरीर निरोग होवण सू इज धर्म री पालणा ठीक तरै सू व्है सकै। अर धर्म पालण सू इज आत्मिक आणद पैदा व्है सकै।

नैतिक रूप सूं आणद उठै है के जठै मिनख पोता रा जीवण मे इमानदारी, सच्चाई, सभ्यता, नियम अर मरजादावां री पूरी पूरी पालणा करै। जिको मिनख नीति छोड दे तो पछै धरम कियां रैय सकै। धरम री जड़ इज नीति है। इण वास्तै नैतिक रूप सूं आणद मेळवणो व्है तो कोई पण इसो कांम नी करणो चाहिजे जिको के अनीति सूं पूरो व्है तो व्है, जिकण सू समाज अथवा देस नै नुकसांण पूगतो व्है। जूओ खेलण सू, मांसाहार करण सू, दारू पीवण सू, रुळियारगिरी करण सू, सिकार खेलण सू मानखा रो जीवण भ्रस्ट व्है जावै, नैतिक आणद फीको पड़ जावै, इण सब सूं बच नै रैवणो चाहिजै।

आत्मिक आणंद उण वखत मिळै जद के मिनख सत, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय, अनासक्ति, क्षमा, दया अर संजम रो पालण करै। जठै ए गुण नी व्है, अर फगत ऊपरली टांम-टोम दीसै उठै आत्मा रो आणंद नेड़ो ई नी रैवै। दरअसल मे आतमा तो इण सगळा आणंदां री मा है। जे आत्मा रा सद्गुण जीवण में नीं आया तो जिंदगी रो आणंद कोई पण हालत मे पूरो नी व्है सकै।

इण भात ए सगळा आणद जिंदगी मे आवण सू इज जीवण रो पूरो आणद मिळ सकै। इण मारग मे मानखा नै कुदरत री केई चीजा सू प्रेरणा मिळ सकै है। सूरज री उगाळी रै पैलरी सोने री परगा, आसमान मे उछळतो पवन, बाळा सूरज री मन मोवणी किरणा एक सू एक वध न इसी चीजा है के जिकी जिंदगी रा आणद वास्तै अनोखी प्रेरणा देवै। कवि रा सब्दा में—

उठो नई किरण लिए जगा रही उषा,
उठो उठो नये सबस दे रही दिशा।
खिल कमल अरुण तरुण प्रभात मुस्करा रहा
गगन विकास का नवीन साज है सजा रहा।
उठो चलो बढ़ो समीर ढाल है बजा रहा,
भविष्य सामने खड़ा प्रशस्त पथ बना रहा।

सो आप पोता नै आणद रै गुणा सू भरो, आपरी जिंदगी हसण लाग जावला। आप ऊठोला तो आपरो भाग पण मुळकण लाग जावला, अर आप वठग्या तो आपरो भाग पण कुमळीज जावला आपन आपरी जिंदगी मे साचो आणद लावणो है, वो आणद आपन नरक री गदगी सू बचाय नै सुरग री पगडाडी माथ अमरता कानी लेजावला।



'मिनखपणा रौ मोल' विद्वाना री नजर मे

हमारे धर्म निरपेक्ष राज्य मे जहां धर्म शिक्षा नही दी जाती, वहां नैतिक शिक्षा के लिए यह पुस्तक उपयोगी हो सकती है, जिसकी आज के शिक्षा शास्त्री आवश्यकता अनुभव करते हैं। भाषा शुद्ध राजस्थानी है, जिसमे प्रवाह तथा स्वाभाविकता दोनों ही हैं।

मरुभारती जनवरी '६५

उपदेश प्रधान पुस्तक की ओर मेरी रुचि प्रायः नहीं होती, पर इस पुस्तक से मैं प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। मुनिजी महाराज गभीर चितक ही नही किन्तु गभीर विचारों को सुबोध एव रोचक शैली मे प्रस्तुत करने मे भी दक्ष हैं। जिससे सामान्य पाठक भी रुचि लेकर लाभ उठा सकता है। विचार और अभिव्यक्ति भाव और भाषा, अतरग और बहिरग सभी दृष्टि से पुस्तक सुन्दर हुई है। राजस्थानी भाषा मे होने के कारण 'मिनखपणा रौ मोल' के प्रति मेरा विशेष पक्षपात है। इससे राजस्थान की साधारण जनता विशेष लाभान्वित होगी, स्त्री समाज विशेष रूप से।

नरोत्तमदास स्वामी
वनस्थली विद्यापीठ

इण पोथी मे आपने प्रवचनकार श्रद्धेय मन्त्री पुष्कर मुनिजी म० री विद्वत्ता अर धमरवाणी रा परतख दरसण होसी। इणरै सागै भासा री सजीवता भाव री गभीरता, सली री विसेसता आपरो मन मोय लेसी। आपर हिवड़ा रा तार मतई झणझणाय ऊठसी। इण प्रवचनां मे म्हार दीम संस्कृति री आतमा परतख बोल री है।

इन्द्रनाथ मोदी
न्यायमूर्ति, राजस्थान हाई कोर्ट

पुस्तक मे एक सुलझा हुआ दृष्टिकोण है। धर्ममय श्रद्धा का जीवंत रूप है। विवेक का प्रकाश है। विद्वान प्रवचनकार के समन्वित अनुभवों का सुफल है। हिन्दुस्तान साप्ताहिक, दिल्ली

पुस्तक सीधी-सादी भाषा में है। धार्मिक होते हुए भी हर व्यक्ति के लिए ग्राह्य है। इससे आत्म-शुद्धि की प्रेरणा ले सकते हैं। ······ये प्रवचन नई दिशा, नई स्फूर्ति व नई प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

नवभारत टाइम्स, दिल्ली

जिस किसी भी विषय को लेकर पाठक इस पुस्तक को पढना प्रारंभ करेंगे उसमे उन्हें जीवन के तलस्पर्शी प्रश्नो का उत्तर, मनन की सामग्री और अपने बारे में कुछ सोचने का अवसर प्राप्त होगा।

जैन प्रकाश, दिल्ली

'मिनखपणा रो मोल' राजस्थानी गद्य साहित्य का एक अनमोल रत्न है। आध्यात्मिक विषयो को जन-जीवन की भाषा में प्रसारित करने के लिए लेखक का प्रयत्न सराहनीय है। प्रस्तुत सग्रह राजस्थानी गद्य के माधुर्य का छलकता हुआ स्रोत है। जन साधारण कठिनतम विषयो को भी सरलता से हृदयगम कर सकता है। भावो की गहनता तथा भाषा के लालित्य की दृष्टि से लेखक की यह कृति महत्त्वपूर्ण है।

विजयमुनि शास्त्री, साहित्यरत्न

पुस्तक 'मिनखपणा रो मोल' एक उत्तम कृति है। भाषा प्रवाह-पूर्ण तथा शैली प्रभावोत्पादक है।

उपाध्याय अमर मुनि

'मिनखपणा रो मोल' पुस्तक मैं एक ही बैठक में पढ़ गई। कृति वास्तव में टकसाली भाषा का टकसाली नमूना है। राजस्थानी मे इतनी सुन्दर कृति को देख कर मेरा मन-मयूर नाच उठा।

रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत
एम. एल. ए. (राजस्थान)